Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

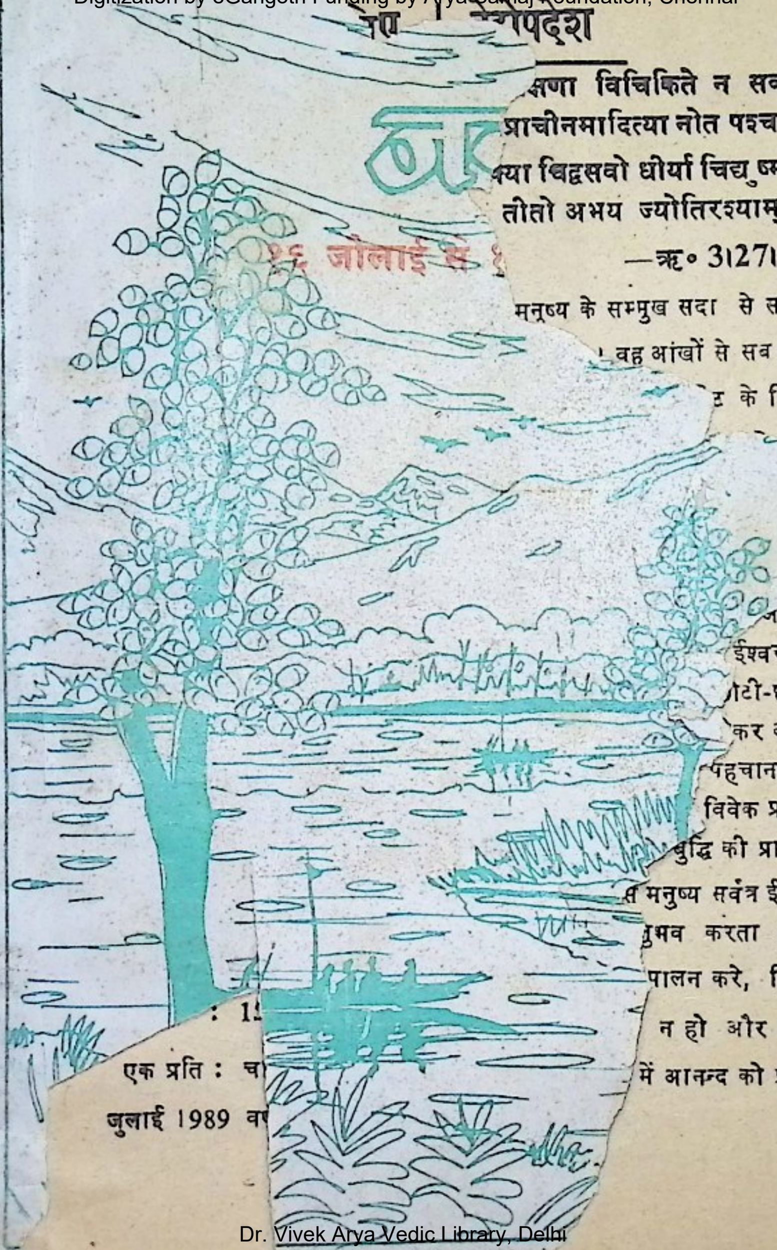

...पदेश

...सणा विचिकिते न सव्या
प्राचीनमादित्या नोत पश्चा ।
...क्या विद्वसवो धीर्या चिद्युष्मा-
तीतो अभय ज्योतिरश्याम् ।।

—ऋ० 3।27।11

२६ जौलाई से १...

मनुष्य के सम्मुख सदा से तारा
... वह आंखों से सब कुछ
...ट के बिना

...ईश्वर की
...ोटी-छोटी
...कर अपने
...पहचानता ।
...विवेक प्रदान
...बुद्धि की प्रार्थना
...स मनुष्य सर्वत्र ईश्वर
...ुभव करता हुआ
...पालन करे, किसी
...न हो और उस
...में आनन्द को प्राप्त

★

: 1...

एक प्रति : च...

जुलाई 1989 व...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitized by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रार्थना

अशरण शरण महान् ।
दीनबन्धु भगवान् ।।

व पार करि, पूरण सब अभिलाष ।
त नाम तव, छूट जात जग पाश ।।

तुम, जान रहे सब पीर ।
सूना पन्थ है, तुम बिन अग्नि समीर ।।

शक्ति भक्ति हो नाथ तुम, तुम हो कृपा निधान ।
तुम बिन ना उर चांदनी, तुम से सदा विहान ।।

पुण्य धाम की चाह में, भूल गई सब राह ।
तुम से प्रीत न कर सकू, पुनि-पुनि तेरी चाह ।।

उर में तेरा धाम है, मुख पर तेरा नाम ।
तू ही हर रग में रमा, तब होवे कल्याण ।।

तुम विराट् तुम जीवन धन हो !

विराट्, तुम जीवन धन हो, तुम संबल प्राणों के प्राण ।
णु की गति साधन, संबल ! ज्योतिर्मय जय, सत्य ललाम ।
मेरे प्रभु तुम्हीं चलाते, धरती का सारा व्यापार ।
पिता, उन्नायक हे, तुम अन्तर वीणा के तार ।
प्रतिमा के प्रहरी, सत्य अर्थ सुख के दातार ।
कर तुम में खोकर, सुन लूं प्रियतम प्राण पुकार ।
प्रिय पास तुम्हारे, करें तुम्हारा ही गुणगान ।
ज्योति सुधाबल, धरती पाये शा
ओ मेरे प्रभु ! तुम छावो अन्त
ज्ञान तिमिर तुम, भर दो जीवन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य के लिए संघष करो ।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक—पंडिता राकेशरानी
सह-सम्पादक—विमलचक्षु:
वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
मुखमेलपुर, दिल्ली-110036
दूरभाष : 7202325
7202249
कार्यालय—2286, आर्यसमाज मार्ग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष—5724741

वार्षिक मूल्य : 40 रुपये
आजीवन : 501 रुपये
विदेश में : विमान से 48 पौंड,
60 डालर
समुद्री डाक से 7 पौंड, 12 डालर
विदेश में : 1501 रुपये

एक प्रति : चार रु०

जुलाई 1989 वर्ष 22, अंक 3

वेदोपदेश

न दक्षिणा विचिकिते न सव्या
न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा ।
पाक्या चिद्वसवो धीर्या चिद्युष्मा-
नीतो अभयं ज्योतिरश्याम् ॥

—ऋ० 3।27।11

मनुष्य के सम्मुख सदा से सारा विश्व रहा है। वह आंखों से सब कुछ देखता हुआ भी अन्तर्दृष्टि के बिना तत्त्व नहीं जान पाता। सारी दिशाएं देखने पर भी उन सबकी समानता की ओर उसकी दृष्टि नहीं जाती। जब तक उसमें विवेक तथा धैर्य उत्पन्न नहीं होता, तब तक वह पशु अथवा यन्त्र के समान होता है। ईश्वर की सत्ता को जाने बिना वह छोटी-छोटी शक्तियों से भी भयभीत होकर अपने आत्मा के स्वर को नहीं पहचानता। इसलिए यहां धैर्य तथा विवेक प्रदान करने वाली परिपक्व बुद्धि की प्रार्थना की गई है, जिससे मनुष्य सर्वत्र ईश्वर की सत्ता का अनुभव करता हुआ उसकी आज्ञा का पालन करे, किसी दूसरे से भयभीत न हो और उस अभय की स्थिति में आनन्द को प्राप्त करे। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

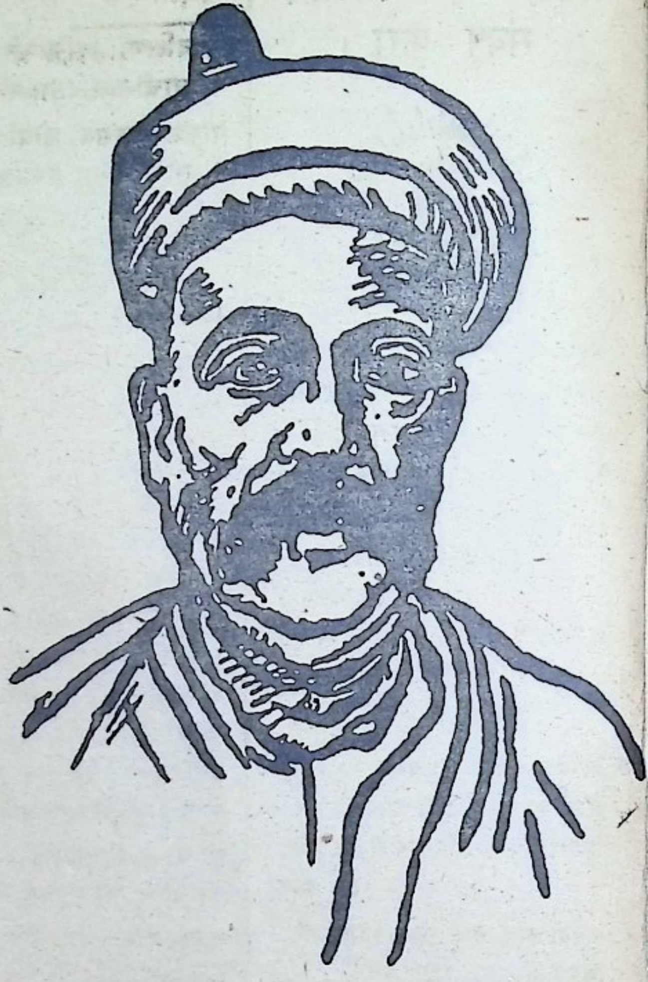

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक

जिनका सन् १९२० की ३१ जुलाई और पहली अगस्त की मध्यरात्रि को साढ़े बारह बजे निधन हुआ। उनकी प्रसिद्ध उक्ति है—

स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूँगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

चीन में नरसंहार (सम्पादकीय) ४
मृत्यु या जीवन ?-१ (महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी) ७
मोगा हत्याकांड पर (सामयिक विचार) —सिद्धार्थ १०
दूरदर्शन और महाराणा प्रताप —विमलचक्षु: १३
वेद अपौरुषेय हैं—डा० श्रीराम आर्य १७
रामजन्मभूमि—विवाद और गुरु गोविन्दसिंह —राजेन्द्र सिंह २७
आप ही के पत्र ३१
राष्ट्रीय समृद्धि के लिए हिमालय नीति की जरूरत —अनुराग ३७
डी. ए.-वी. संस्थाओं में संस्कृत और संस्कृत की उपेक्षा न हो —डा० प्रशांत वेदालंकार ४०
आजाद आखिर आजाद ही रहे —महेश बागी ४६
धर्म निरपेक्षता ने आक्रामक अल्पसंख्यकवाद को जन्म दिया —डा. विद्यासागर ५४
पंचायती राज व्यवस्था क्या है ? —चन्द्रोदय दीक्षित ६१
हिन्दू दृष्टिकोण बनाम साम्प्रदायिकता —डा. सी. पी. रामस्वामी अय्यर ६८
देवता और असुर (बोधकथा)—विवेक ७२
पांचवां बेटा (कहानी) —मधुसूदन साहा ७४
हैदराबाद सत्याग्रह की स्वर्णजयन्ती —ब्रह्मदत्त स्नातक ८२
ईश्वरीय न्याय —सिद्धार्थ ८४
बच्चे की देखभाल कैसे करें ? —अमरलाल ८६
क्रोध अनर्थ का कारण है —ज्ञानार्थी ८९
बहनों के लिए काम की बातें —सरला देवी ९१
युवकों उठो जागो ! —ज्ञानेश्वर्य ९४
रूस की धरती पर ईश्वर की वापसी —डा. श्याम सिंह शशि ९८
जून मास के समाचार एक दृष्टि में १०४
बाल जगत (व्यसन कैसे छोड़ें) —नारायण लाल १०८

(आवश्यक नहीं कि सम्पादक लेखक भी रचनाओं में अभिव्यक्त सभी विचारों से पूर्णतः सहमत हो।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

चीन में नरसंहार

मास्को और पेईचिंग साम्यवादियों के "काशी-काबा' हैं। उनकी का (मास्को) में "पेरेस्त्रोइका" और "ग्लास्नास्त" के परिणामस्वरूप भगव कृष्ण के अनुयायी 'हरे कृष्ण—हरे राम' का जाप करके नास्तिकता आस्तिकता की गंगा बहाकर बड़ी संख्या में सोवियत जनता की वर्षों आध्यात्मिक पिपासा शांत कर रहे हैं तो दूसरी ओर साम्यवादियों पावन स्थली पेईचिंग (चीन) के "थ्येन आन मन चौक" में लोकतन्त्र समर्थक युवकों और युवतियों पर चीनी सेना द्वारा निर्ममता से की गोली वर्षा ने हिन्दू चिन्तन के इस तथ्य को ही पोषित किया है कि आ तिमकता के नियन्त्रण से रहित सत्ता राक्षसी स्वरूप ग्रहण कर मान के रक्त से होली खेलने में संकोच नहीं करती।

अपने देश में भी साम्यवादी विचारधारा के प्रचार के लिए वर्ष अनेक कम्युनिस्ट दल सक्रिय हैं। वे समाज के निर्धन वर्ग के हृदय में अन्धी आस्था पनपाने मे लगे हैं कि साम्यवाद ही उनकी दुःख-दर् और आपदाओं के निवारण की औषधि है। उनका प्रचार है कि यदि से मुक्ति और अभाव से छुटकारा पाना चाहते हो तो साम्यवाद को अपनाओ। यह चिन्तन "वर्ग संघर्ष" को अनिवार्य और मानवता का कल कारक मानता है। वे मार्क्स को अपना मसीहा मानते हैं और उनकी 'दास कैपीटल" को परमपिता परमात्मा की अमरवाणी वेद से भी मान बैठे हैं। उस चिन्तन में धर्म को मानव के लिए अफीम के तुल्य बताया जाता है। उनकी दृष्टि में मानव जीवन के व्यवहार की अर्थवाद ही है। इसीलिए देश में वर्षों से एक उद्घोष गूंजता सुनाई पड़ है—'मांग रहा है हिन्दुस्तान, रोटी कपड़ा और मकान।' उसी चिन्त-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह प्रभाव है कि आज स्वयं को प्रगतिशील दर्शाने वाले साम्यवादी माँ की ममता, पिता के आशीष और बहन के पावन स्नेह की कल्पना को भी पिछड़ेपन की निशानी बताने में अपनी बुद्धि की पराकाष्ठा मानते हैं। इसी विचारधारा का अनुगमन सोवियत संघ और कम्युनिस्ट चीन करते रहे हैं। किन्तु अब इन्हीं देशों में विचारस्वातन्त्र्य की जो हवा बही है, उसने इस सत्य का साक्षात्कार करा दिया है कि—

धार्मिक सांस्कृतिक जगत् में, है झूठा व्यवहार नहीं।
केवल रोटी पर अवलम्बित, मानव का संसार नहीं॥

इस तथ्य से तो हिन्दू चिन्तन भी अवगत है कि भूख की पीड़ा मर्मान्तक होती है। मानवजीवन के लिए भोजन आवश्यक है। परन्तु हिन्दुत्व अर्थ की महत्ता और वास्तविक अर्थ को भलीभांति जानता है। उसने मानव जीवन हेतु धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रूप में चार आधार बताये हैं। इसीलिए हिन्दुत्व पर आधारित विचारधारा में "राम और रोटी" दोनों को मानव जीवन में सुख-समृद्धि और शान्ति के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण माना गया है। भौतिकता पर आधारित आध्यात्मिकता का नियन्त्रण ही हिन्दुत्व के दर्शन का परिचायक है।

इसीलिए इस चिन्तन में त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्त्ति संन्यासी और संत को चक्रवर्ती सम्राट् से भी ऊंचा आसन दिया गया है। पावन वैदिक धर्म धन के उपार्जन और वितरण पर जोर देता है, उसके संचय पर नहीं। इतिहास साक्षी है कि जब भी भौतिक सत्ता पर से आध्यात्मिकता का अंकुश हटा है, सत्तासीन प्रजापालक के स्थान पर प्रजापीड़क बन जाता है। स्वर्ण-पुरी मानी जाने वाली लंका का अधिपति, जो मृत्यु को भी अपनी चेरी मानने का दर्प करने लग जाता है, वह अपने देश को विनाश की ओर धकेलता है। आध्यात्मिक मूल्यों को भुलाने वाला कंस अपनी सत्ता पिपासा के कारण अपनी ही बहन के पुत्र के प्राण लेने का षड्यन्त्र कर बैठता है। इसी वैचारिक अन्तर की ही अभिव्यक्ति औरंगजेब और शाहजहां के प्रकरण से होती है। औरंग-जेब ने अपने पिता शाहजहां को उसके जीवन की अन्तिम वेला में कारागार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की काल कोठरी में डाल दिया था। उस अवस्था में अपने जीवन के अन्तिम दिन बिता रहे बूढ़े शाहजहां की हालत को देखने जब औरंगजेब एक दिन कारागार में गया तो उसने शाहजहां से उपहास की मुद्रा में पूछा—"आपको किसी चीज की जरूरत तो नहीं है?" बूढ़े शाहजहां ने जब अपने बेटे की आवाज सुनी तो उस समय प्यास से उसका कंठ सूख रहा था। उसने औरंगजेब से कहा—"बेटा, प्यास लगी है। मटके में पानी होगा। एक गिलास भरकर पिला दे।" कहा जाता है कि शाहजहां के इतना कहने पर औरंगजेब ने कहा था—"बूढ़े, अभी भी तेरी हकूमत की बू नहीं गई।" और इन शब्दों के साथ ही उसने लात मारकर पानी का मटका भी फोड़ दिया था। सहसा ही बूढ़े शाहजहां के मुंह से निकला था कि "हिन्दू सौ-सौ बार धन्यवाद के पात्र हैं, जो अपने मृतकों को भी जल प्रदान करते हैं। बेटे, तेरी मुसलमानी तो विचित्र ही है कि तू जीवित पिता को भी पानी के लिए तड़पा रहा है।"

कोरी भौतिकता को ही जीवन का लक्ष्य और आदर्श मान बैठने की प्रवृत्ति ही रावण, कंस और औरंगजेब को जन्म देती है, जबकि वैदिक चिन्तन मानव के जीवन में शिवत्व (सबका कल्याण) करने की भावनाओं को जगाता है। उसीसे व्यक्ति मानव से महामानव बन जाता है। वही चिन्तन पिता की आज्ञा को शिरोधार्य मान राजसत्ता को तिनके के तुल्य मानकर वन गमन को श्रेयस्कर मानता है। वही चिन्तन सिंहासनासीन शिवाजी को समर्थ गुरु रामदास के समक्ष नतमस्तक होने को प्रेरित करता है।

पेईचिंग के "थ्येन आन मन चौक" में सहस्रों निरीह जनों के रक्त की बहती धारा इसी सत्य का साक्षात्कार करा रही है कि भूख और प्यास के शमन के अतिरिक्त मानव की एक स्वाभाविक क्षुधा स्वतन्त्रता की भी है। उसी स्वतन्त्रता के लिए चीन के सहस्रों युवकों और युवतियों ने सैनिक सत्ता की गोलियों को झेलते हुए अपने प्राण विसर्जित किये हैं। एक बात विश्वास के साथ कही जा सकती है कि जहां सोवियत संघ ने अपने चिन्तन में

(शेष पृष्ठ १२ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मृत्यु या जीवन?—१

आइए, विचार तो करें कि हम कहां खड़े हैं?

इस समय भारत में आर्यसमाज की शक्ति सर्वाधिक है। इसके पास न धन का अभाव है न जन का; भवन और विद्यालय भी पर्याप्त हैं। फिर भी निष्पक्ष चिन्तन हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि आज राष्ट्र पर आर्यसमाज की छाया नहीं है। जन-जीवन पर हमारा प्रभाव नहीं है। अज्ञान पर आधारित छोटे-छोटे मत उभर रहे हैं और हम समय की दौड़ में पिछड़ रहे हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों, जब कि हमारे सिद्धान्त सत्य और अजेय हैं।

आप ने नहीं सोचा और न सोचने के लिए आप के पास समय ही है, किन्तु अज्ञान के बढ़ते प्रवाह को देख हमें सोचना ही होगा कि इस उल्टी गंगा का क्या कारण है।

आइए, निष्पक्ष भाव से स्थिति पर विचार करें। हमारी दृष्टि में इस समय की स्थिति का कारण है—

(१) वेद की उपेक्षा (२) महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा का अभाव (३) लक्ष्यभ्रष्टता (४) विद्वानों की उपेक्षा और अविद्वानों का सम्मान (५) ईश्वर के प्रति अनास्था (६) धर्म-भावना की समाप्ति (७) आर्यसमाज का व्यापारीकरण (८) पदलोलुपता व स्वार्थ-परायणता (९) सामयिक आन्दोलनों द्वारा सस्ती नेतागिरी की भूख और (१०) स्वाध्याय—साहित्य का अभाव।

इन सभी कारणों पर विवेचन करने से पूर्व हम क्षमा-याचना सहित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अत्यन्त दृढ़ता से कहना चाहते हैं कि हमारी पथभ्रष्टता से आज का आर्य-समाज संगठन महर्षि दयानन्द का संगठन नहीं रह गया। आर्यसमाज के भव्य भवनों में बैठे अधिकारी वर्ग के पास सब कार्यों के लिए धन भी है और शक्ति भी, किन्तु यदि उनके पास कुछ नहीं है तो ऋषि दयानन्द के कार्यों के लिए। आर्यसमाज संगठन द्वारा ऋषि के पावन उद्देश्य की जो घोर उपेक्षा की जा रही है, उसका स्पष्ट परिणाम है कि हम ने, दयानन्द की जय बोलने वालों ने, अपने हाथों दयानन्द की भावना को समाप्त कर दिया है।

कितनी पीड़ा होती हैं हृदय में, किसे बताऊं, कौन सुनेगा—कौन समझेगा, जो तूफान उठता है मन में, जब देखते हैं कि दयानन्द का नाम लेने वाले आज दयानन्द के लिए कुछ करना पाप समझते हैं। इनके लिए पुण्य है आन्दोलन, कभी कोई, कभी कोई।

पर कोई भी संगठन वेद प्रचार आन्दोलन नहीं चलाता। कोई पाखंड-खंडिनी पताका नहीं उठाता; कोई पाखंड के गढ़ों पर प्रहार नहीं करता।

ऋषि के पवित्र नाम पर बहका कर स्वार्थ सिद्ध तो किए जाते हैं पर कोई ऋषि का कार्य नहीं करना चाहता। आखिर यह सब क्या है, क्यों है, क्या होगा हमारा अन्त, कभी सोचा है।

आर्य भाइयो और बहनो !

हम ये पंक्तियां आपको जगाने के उद्देश्य से लिख रहे हैं। हम सोए-भटके आर्यसमाज को जगाकर ऋषि दयानन्द के तेजस्वी आर्यसमाज का रूप देना चाहते हैं। हम प्रत्येक आर्यसमाज को दयानन्द-संदेश-प्रसारक केन्द्र के रूप में परिवर्त्तित करना चाहते है। हम भारत के प्रत्येक नागरिक को ऋषि दयानन्द का अनुयायी बनाना चाहते हैं। हमें न राज्य चाहिए न धन, हमारा शरीर तिल-तिल कर भले ही जल जाए पर हम समवेत स्वरों में भारत के ६० करोड़ नागरिकों के मुख से ऋषि दयानन्द की जय-ध्वनि सुनना चाहते हैं।

नींद-प्रमाद-स्वार्थ में ग्रस्त दयानन्द के भटकते अनुयायियो ! क्या तुम इसी तरह सोते रहोगे ? स्वार्थ के लिए लड़ते रहोगे ? क्या तुम्हें दयानन्द का पवित्र नाम भी नहीं जगा सकेगा ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सोचता हूँ तो सोचता ही रह जाता हूं। समझ में नहीं आता कि कौन-सा शंख बजाऊं कि दयानन्द की यह सोई सेना जाग जाए और कहे—

दयानन्द के वीर सैनिक जगे हैं।
अंधेरा धरा पर न अब टिक सकेगा।

तो आइए, क्रमशः विचार करें गहरी नींद के कारणों पर—

१. वेद की उपेक्षा

वेद हमारा धर्मग्रन्थ है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना हमारा परमधर्म है। किन्तु क्या यह परमधर्म साधारण धर्म भी रह गया है? प्रत्येक आर्य आज अपने से पूछे कि क्या वह वेद का स्वाध्याय करता है? क्या वह वेद का सन्देश दूसरों तक पहुंचाता है? इससे ही पहले एक उभरता प्रश्न—क्या आपके घर में वेद है? यदि नहीं तो फिर क्या अधिकार है आप को अपने को वैदिकधर्मी कहने का? सोचिये और निर्णय कीजिये कि—

१. आज से प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करूंगा। २. चारों वेद आज ही घर में लाऊंगा। ३. प्रतिमास वेद सम्बन्धी साहित्य अपने मित्रों को बांटूंगा—कम से कम ५ रु० का। ४. वेद का सन्देश फैलाने में पूरी शक्ति लगाऊंगा।

प्रत्येक ऋषिभक्त से हम प्रार्थना करते हैं कि यदि उसे वेद पर तनिक भी श्रद्धा है तो इन संकल्पों को जीवन में धारण करे। हम समझें 'वेद ही जीवन हमारा, वेद ही आधार है।' वेद नहीं तो हम नहीं। वेद उभरेंगे तो हम उभरेंगे, सत्य उभरेगा, मनुष्य मनुष्य बनेगा, अन्यथा सर्वनाश कौन रोकेगा?

बढ़ते तूफान से टकराओ। आर्यो, घबराओ नहीं, वेद को अपनाओ; विजय तुम्हारे चरण चूमेगी। (क्रमशः)

जैसे भी हो
प्रत्येक हिन्दू
अधिक से अधिक धन
प्रति मास
धर्म रक्षा के लिए
अवश्य ही भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

—सिद्धार्थ

मोगा हत्याकाण्ड पर !

मोगा में उग्रवादियों ने रा.स्व. संघ की शाखा पर अंधाधुंध गोलियां चलाकर कुछ राष्ट्रभक्तों की हत्या ही नहीं की, प्रत्युत सरकारी व्यवस्था और दावों की घज्जियां उड़ाकर रख दीं। सरकार के ये दावे झूठे साबित हो चुके हैं कि पंजाब में उग्रवादी काबू में आ रहे हैं। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर किए गए बम-विस्फोट की खबरें अभी पुरानी भी नहीं पड़ी थीं कि यह बड़ा हादसा हो गया।

यह कहना अब बहुत घिसी-पिटी चीज हो गया है कि सरकार पंजाब में बहुत बुरी तरह असफल रही है। परन्तु कमाल यह है कि जो चीज दिन के सूर्य की तरह स्पष्ट है, वही चीज अन्धी सरकार को नजर नहीं आ रही। सरकार के पास शक्ति है, साधन हैं और स्वतन्त्रता भी। फिर क्या कारण है कि आतंकवाद पर काबू नहीं पाया जा सका? सरकार सत्ता और शक्ति का दुरुपयोग विपक्षियों तथा बेकसूरों को दबाने के लिए कर सकती है, प्रधानमंत्री जैसे पद पर बैठा व्यक्ति सारी नैतिकताओं को ताक पर रखकर झूठी बातों का छाती ठोंक कर प्रचार कर सकता है। बड़े मन्त्री और नेता से लेकर सत्तापक्षी छुटभैये तक रिश्वतखोरी में मगन रह सकते हैं, परन्तु आतंकवाद पर काबू नहीं पाया जा सकता, क्योंकि वह बड़ा काम है और उसमें सत्तापक्षी मगरों के स्वार्थ भी आड़े आते हैं। समय-समय पर आतंकवादियों द्वारा किए जा रहे हत्याकाण्डों को दिखाकर सरकार यह बताने की कोशिश करती रहती है कि देखो, उग्रवाद अभी खत्म नहीं हुआ। वह कभी भी, किसी के भी दरवाजे तक पहुँच सकता है। इस उग्रवाद से केवल हमारी सरकार ही तुम्हें बचा सकती है, अतः वोट हमें देना।

प्रधानमंत्री को इस समय का एक बड़ा झूठा कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं है। दूरदर्शन जैसा प्रचार माध्यम पाकर वे फूले नहीं समा रहे हैं, क्योंकि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वहाँ वे बेखटके कितना भी बड़ा झूठ बोल सकते हैं। वहाँ रोकने वाला ही कोई नहीं। जनता की परवाह करता ही कौन है। सलाहकारों ने समझा दिया है कि गांवों तक विपक्षी पार्टियां अपना प्रचार दूरदर्शन की तेजी से नहीं कर सकतीं, वहाँ के लोग दूरदर्शन पर कहे गए प्रत्येक वाक्य को वेद वाक्य मान कर विश्वास करेंगी। अतः अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए जो मन आए बको ताकि सारा देश यह मान जाए कि प्रधानमंत्री और उनके सिपहसालारों के अतिरिक्त अन्य सब या तो देशद्रोही हैं या मूर्ख !

प्रधानमन्त्री को पांच वर्ष के शासनकाल में कितनी सफलता मिली है आतंकवाद को मिटाने में ? यदि नहीं मिली, तो सत्ता में रहने का अधिकार ही क्या है उन्हें ? विपक्षी पार्टियों की राज्य सरकारों से तो जरा-जरा सी बात पर इस्तीफा माँगा जाता है और प्रधानमन्त्री के सिपहसालारों द्वारा संचालित सरकारों की नाक के नीचे से गुजरता आतंकवाद, अव्यवस्था और अन्याय का हाथी उन्हें दीखता ही नहीं।

देश की सारी समस्याएं खत्म हो जायें यदि विपक्ष खत्म हो जाए, प्रधानमंत्री की लफ्फाजियों से तो ऐसा ही प्रतिध्वनित होता है। वर्ना अपने सारे भाषणों में बोफोर्स के जोश में प्रधानमन्त्री जी झूम-झूमकर केवल विपक्ष की राष्ट्रभक्ति पर ही प्रश्नचिन्ह क्यों लगाते घूमते हैं ?

प्रधानमन्त्री के भाषणों में कहीं उन माताओं-बहनों का जिक्र होता है जिन्हें आतंकवाद ने बर्बाद करके रख दिया। कमाल यह है कि जिस देश के सभी हिस्सों के लोग आतंक के साये में जीने को बाध्य हों, उस देश के प्रधान मन्त्री को नींद कैसे आती है ? और वह अपने भाषणों में लोगों की इस बर्बादी पर व्यथित क्यों नहीं दिखता ! देश की भाषा और भूषा पर विदेशी सभ्यता को स्थापित करने का षड्यन्त्र करने वाले को इस देश की धड़कन मजाक लगती है, इस देश की नैतिकता उन्हें पसद नहीं। उनकी निगाह में हैं आने वाले चुनाव और दिख रहे हैं युवा मतदाता, जिन्हें पथभ्रष्ट करके वह वोट बटोर सकते हैं।

एक तरफ देश में मोगा-हत्याकाण्ड का मातम हो रहा है और दूसरी तरफ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन्त्री और प्रधानमन्त्री सांस्कृतिक कार्यक्रमों का समारम्भ करते घूम रहे हैं। मैं पूछता हूं कि इस्लाम के नाम पर लाखों लोगों को मौत केमुंह में झोंक देने वाले खुमैनी के मरने पर जब सरकार दूरदर्शन पर मनोरंजन कार्यक्रम स्थगित कर सकती है तो ये मोगा में मरने वाले कौन थे और जो सरकार की उदासीनता और स्वार्थ के कारण आतंकवादियों की गोली के नित्य शिकार बनते हैं, ये कौन होते हैं ? क्या ये भी देशद्रोही और गद्दार हैं ? क्या ये आदमी नहीं होते ? ये आदमी होते हैं। इनमें मां, बहन, बेटी, पति, पिता, पुत्र सभी होते हैं और सभी किसी न किसी -रूप में किसी को अनाथ कर जाते हैं। प्रधानमन्त्री जी, इनकी मौत पर भी आंसू बहाना सीखिये और देशवासियों को भी इन्हें अपना प्रियजन समझने का मौका दीजिए। जिस दिन इस देश का प्रत्येक नागरिक यह समझेगा कि आतंकवाद का शिकार मेरा अपना भाई था तो उससे खाना नहीं खाया जाएगा और वही आतंकवाद को मिटाने की सही शुरुआत होगी। हां, तब तुम्हारी कुर्सी जरूर डगमगाएगी। ★

(पृष्ठ ६ का शेष)

उदारता का समावेश कर सही मार्ग अपनाने का प्रयास कर असन्तोष के लावे को ज्वालामुखी बनने से रोका है, वहीं चीन में जो स्थिति उभरी है, वह इस बात की परिचायक है कि कोरी भौतिकता मानव मन में शांति की शीतल धारा नहीं बहा सकती। मानव को रोटी से आगे भी कुछ अभीष्ट है। इस "कुछ" से इनकार ही पेइचिंग के "थ्येन आन मन चौक" में हुए नरसंहार का कारण है। उदारता को अपनाकर ही वहां के शासक वर्त्तमान संकट से मुक्ति पा सकते हैं।

अन्ततोगत्वा आज नहीं तो कल उन्हें विचार स्वातन्त्र्य की स्थिति अपने देश में लानी ही होगी। अर्थात् वहां भी जब भौतिक समृद्धि "असीम सत्ता" के अस्तित्व की अनुभूति का अंकुश मान्य करेगी, तभी वहां वास्तविक सुख-शान्ति की सरिता प्रवाहित हो पायेगी। यह वही स्थिति होगी, जिसकी कल्पना भारतीय चिन्तन ने "संगच्छध्वं संवदध्वम्" के उद्घोष में की है।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दूरदर्शन और महाराणा प्रताप

—विमलचक्षु:

भारतीय दूरदर्शन पर जो दिखाया जाता है, उसके बारे में यह तो नहीं कहा जा सकता कि यह न्यायपूर्ण, तथ्यों पर आधारित या तर्कपूर्ण है, परन्तु ऐसी कल्पना भी हम नहीं करते कि इतिहास प्रसिद्ध तथ्यों को बेरहमी से विकृत कर जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा।

दूरदर्शन अन्धविश्वासों का विरोध भी करेगा और भूत-प्रेतों पर आधारित फिल्में भी प्रसारित करता रहेगा। यही नहीं, सैक्स और मार-धाड़ वाली फिल्में, जो किसी आदर्श को प्रस्तुत नहीं करतीं, वे भी दूरदर्शन पर जगह पा जाती हैं। उसने अंग्रेजी के प्रचार-प्रसार का तो जैसे ठेका ले रखा है। सिगरेट-शराब पीने तथा अकारण अंग्रेजी के संवादों वाले दृश्यों को सैन्सर करने की समझ अभी तक दूरदर्शन के अधिकारियों को नहीं आई है।

अस्तु, दूरदर्शन के संस्कृति विरोधी कारनामों की सूची लम्बी है। यहाँ तो हम रविवार को दिखाये जाने वाले धारावाहिक भारत की खोज मे किये गए पक्षपात को दर्शाना चाहते हैं। इस धारावाहिक को प्रसिद्ध निर्देशन श्री बेनेगल निर्देशित कर रहे हैं। यह स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा लिखित पुस्तक Discovery of India पर आधृत है। इस पुस्तक में भारत का इतिहास है, ऐसा कहा जाता है। यद्यपि नेहरू जी इतिहासकार के रूप में कहीं पर भी नहीं टिकते, परन्तु उनके जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनकी पुस्तक को आधार बनाकर यह धारावाहिक तैयार किया गया है। पुस्तक इधर-उधर के विदेशी लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकों की नकल मात्र है। उसमें नेहरूजी ने सर्वत्र अपनी हिन्दू-विरोधी मनोवृत्ति का ही परिचय दिया है।

श्री श्याम बेनेगल ने यद्यपि नेहरूजी की पुस्तक को आधार बनाया तथापि फिल्मांकन में वे अपने हिसाब से यथासुविधा संशोधन करते रहे हैं। वे चाहें तो छोटी-छोटी प्रेम कथाओं पर पूरी एक कड़ी तैयार कर सकते हैं—छोटे-मोटे राजाओं-नवाबों पर भी। परन्तु इतिहास प्रसिद्ध और करोड़ों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोगों के सम्माननीय वीर पुरुषों पर एक कड़ी तो क्या पांच मिनट भी खर्च करने को तैयार नहीं। रविवार २८ जून को दिखाई जाने वाली कड़ी में अकबर को मुख्य पात्र बनाया गया था। नेहरू जी को भारतीय इतिहास में दो ही महान् पात्र नजर आएंगे। 'अकबर दी ग्रेट' और 'अशोक दी ग्रेट'। संसार जनता है कि एक बड़े साम्राज्य के स्वामी अकबर का जितना नाम है, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप का यश उससे कहीं अधिक है। राजस्थान के ही नहीं प्रत्युत सम्पूर्ण भारत के राष्ट्रवादियों और स्वाधीनता प्रेमियों के मानस पटल पर वे सदैव विराजमान रहते रहे हैं।

श्री श्याम बेनेगल ने महारणा प्रताप के चरित्र के साथ न्याय नहीं किया। उन्हें उपर्युक्त धारावाहिक में एक तरह से लुटेरा, उजड्ड आ अक्खड़ दिखाया गया। यहां तक कहा गया कि अकबर महान् ने दया करके उन्हें पहाड़ियों में भटकने के लिए छोड़ दिया। यह बात तथ्यों के सरासर विपरीत है। यथार्थ तो यह है कि प्रताप जैसा वीर, बात का धनी और स्वाभिमानी इतिहास में अपना सानी नहीं रखता। आज सम्पूर्ण राजस्थान यदि अपने गौरव, वीरतापूर्ण इतिहास, तप और त्याग से भरा हुआ, केवल एक नाम लेने से हमारे सामने साकार हो उठता है, तो वह नाम प्रताप का है। केवल प्रताप का व्यक्तित्व ऐसा है, जो राजस्थान के नाम का प्रतिनिधित्व कर सकता है। प्रताप एक ऐसा सूर्य है, जिसके सामने राजस्थान के सारे नक्षत्र धूमिल पड़ चुके हैं। प्रताप का नाम राजस्थान का पर्यायवाची बन चुका है। सम्पूर्ण राजस्थान में यदि कोई पुरुष लोकगीतों में सर्वाधिक चर्चित हैं, तो वह प्रताप है। प्रताप के यश और वीरता का परिचय पाना हो तो कार्नल टॉड के ये शब्द पढ़ने चाहिए—"अकबर की उच्च महत्त्वाकांक्षा, शासन-निपुणता और असीम साध; ये सब बातें दृढ़चित्त महाराणा प्रताप की अदम्य वीरता और नीति को उज्ज्वल रखने वाले दृढ़ साहस और अध्यवसाय को दबाने में समर्थ न थीं। आल्प्स पर्वत के समान अरावली में कोई भी ऐसी घाटी नहीं, जो प्रताप के किसी न किसी वीरतापूर्ण कार्य उज्ज्वल विजय या उससे अधिक कीर्तियुक्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पराजय से पवित्र न हुई हो। हल्दी घाटी मेंवाड़ की थर्मोपाली और दिवेर मेवाड़ का मैराथन है।"

प्रताप को इस धाराव,हिक में ऐसा दिखाया गया था, जैसे वे उचित व्यवहार भी नहीं जानते थे। मानसिंह को एक सभ्य पुरुष और प्रताप को उजड्ड और गंवार दिखाया गया था। कहा तो यह जाता है कि वे मानसिंह के साथ भोजन करने नहीं आए, उन्होंने सिर दर्द का वहाना किया और अपने पुत्र अमर सिंह को मानसिंह के पास भेजा था। धारावाहिक में इसके विरुद्ध भोजन के समय मानसिंह के प्रति प्रताप के उजड्डपन को दर्शाया गया।

दूसरी बात यह कि क्या महाराणा अकबर की दया पर जीवित रहे? यह स्वीकारना और कहना मूर्खतापूर्ण और इतिहास विरुद्ध हैं—हल्दी घाटी के पश्चात् भामाशाह द्वारा जुटाए गए धन से महाराणा ने जो फौज तैयार की उसने चित्तौड़ और मांडल को छोड़कर सम्पूर्ण मेवाड़ अपने कब्जे में किया। कुल मिलाकर उन्होंने ३२ दुर्गों पर पुनः अधिकार किया और वे सदैव चित्तौड़ विजय के लिए प्रयत्न करते रहे। हां, इस दृष्टि से वे जरूर भटक रहे थे कि चित्तौड़-विजय की महत्त्वाकांक्षा और प्रतिज्ञा उन्हें चैन नहीं लेने देती थी। प्रताप की इस प्रतिज्ञा का भी इस धारावाहिक में कहीं दर्शन नहीं कराया गया। श्री केसरी सिंह बारहठ ने प्रताप की प्रतिज्ञा को कितने सुन्दर शब्दों में वर्णित किया है—

भिल्लन की पल्लिन में,फिरत रहौंगो सदा।
कुटी में रहौंगो,महलात में रहौंगो ना।
खावत रहौंगो बेल, पात गिरी कन्दरन।
पारतन्त्र व्यंजन को, पावत रहौंगो ना।
कुरम विधर्मीन को, दास होरहौंगो कहां।
भेंतो तुर्क हाथ ह्वै, को इच्छन रहोंगो ना।
जाति ह्वै रहौंगो में, विजाति ह्वै रहौंगो कहाँ?
मात ह्वै रहौंगो, मातहत रहौंगो ना।

इसके अतिरिक्त न तो प्रताप के अमरकीर्ति अश्व 'चेतक' का वर्णन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

आया और न ही बीकानेर के कुंवर पृथ्वीसिंह का, जिन्होंने अपने दोहों से प्रताप के हृदय में स्वाभिमान की नई आग भर दी थी। चेतक तो उतना ही प्रसिद्ध है, जितने प्रताप। अपनी स्वामिभक्ति तथा उदारता के लिए भामाशाह का भी इस धारावाहिक में कहीं नाम नहीं, जबकि ये सब इतिहासप्रसिद्ध सिद्ध तथ्य हैं।

राणा साँगा पर लम्बे दृश्य दिखाए गये, बाबर और राजा कृष्णदेवराय पर समय खर्च किया गया। अकबर पर दो-दो या अधिक प्रसंग दिखाए जाएंगे तो प्रताप ने कौन-सा गुनाह किया था। स्पष्ट है कि नेहरू प्रताप को हिन्दू संस्कृति का प्रतीक समझते थे, जिसके वे महाविरोधी थे। इसी दृष्टिकोण को श्याम बेनेगल ने अपनाया। प्रताप जैसे सर्वपूज्य व सम्माननीय व्यक्तित्व के साथ पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने से निर्माता-निर्देशक की छवि धूमिल हुई है।

हमारा निवेदन है वह दूरदर्शन का संचालन करने वाली सरकार से कि अपनी तुष्टीकरण की नीति का परिचय देते हुए वह अल्पसंख्यकों की खुशामद में इतनी दूर न जाए कि भारत के स्वाभिमान और गौरव के प्रतीकों की उपेक्षा करे। ऐसी मूर्खता भी न करे कि मुस्लिम देशों को खुश करने के चक्कर में मुहम्मद बिन कासिम जैसे लुटेरे और आक्रान्ता को धर्म का संदेश वाहक बताए। अपने राष्ट्रवादी बन्धुओं का आह्वान है कि देश की संस्कृति और स्वाभिमान को नष्ट करने वाले ऐसे नेताओं तथा दूरदर्शन के अधिकारियों का डटकर विरोध करें।

क्या यही दयानन्द का देश है ? / यही स्वर्णभंडार का वेश है ?
गांधी के अरमान,
शहीदों की चिताएं / क्या इसीलिए जलती थी,
क्या भगत सिंह इसीलिए / फाँसी पर चढ़ा था ?
बोलो मेरे भाई, / यह किसका देश है ? / यह कैसा वेश है ?
उत्तर की प्रतीक्षा करते हुए।
चलती हूं, शायद तुम कुछ सोच सको / या कर सको —राकेशरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद अपौरुषेय हैं

डॉ श्रीराम आर्य

वेद परमपिता परमेश्वर का अमर ज्ञान है, जो मानव को आदि सृष्टि में प्रभु द्वारा प्रदान किया गया था। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती पर्यन्त समस्त ऋषि-महर्षि एवं समस्त आस्तिक वैदिक विद्वान् समस्त दर्शन, स्मृति-ब्राह्मण ग्रंथ एवं उपनिषत्कारों ने वेदों को परमेश्वर का ज्ञान माना हैं। मध्यकालीन पुराणकारों ने भी वेदों को अपौरुषेय घोषित किया है। समस्त आर्य जाति वेदों को इसीलिए स्वतः प्रमाण मानती रही है और आज भी मानती है। ईश्वरीय ज्ञान होने से वेद मानवमात्र की सम्पत्ति है। उनका समस्त ज्ञान व उपदेश जगत् के कल्याण के लिए है। उनमें पक्षपात, ईर्ष्या-द्वेष, इतिहास आदि की बातों का सर्वथा अभाव है। वे सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान को बीज रूप से अपने में धारण करते हैं, जिसे जानकर, विकसित करके मानव ऐहलौकिक उन्नति करता हुआ परमानन्द (मोक्ष) तक को प्राप्त कर सकता हैं।

जब हम यह दावा करते हैं कि संसार में केवल वेद परमेश्वर का ज्ञान है, इसके अतिरिक्त अन्य सभी ग्रन्थ मानव रचित—पौरुषेय—हैं तो हमारे उस दावे को अन्य लोग स्वीकार करने को तैयार नहीं होते। दावे की पुष्टि युक्तियों व प्रमाण की अपेक्षा रखती हैं। अतः हम आगे कुछ कसौटियाँ प्रस्तुत करते हैं, जिनसे ईश्वरीय ज्ञान की परीक्षा की जा सकती है। इन कसौटियों पर केवल वेद अपौरुषेय सिद्ध होते हैं, अन्य-कोई ग्रन्थ नहीं।

ईश्वरीय ज्ञान को जाँचने की कसौटियाँ

१. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि में आना चाहिए।

परमेश्वर ने सर्वप्रथम जब इस पृथ्वी पर मानव की सृष्टि की और उसे कर्म करने एवं अपने उत्थान के लिए पूर्ण अवसर प्रदान किया तो इसे वाणी, सृष्टिविद्या एवं ब्रह्मविद्या का ज्ञान देना भी आवश्यक था और वह दिया भी गया। मनुष्य का ज्ञान नैमित्तिक होता है, स्वाभाविक नहीं, जैसा मानवेतर योनियों को प्राप्त जीवों को होता है। यदि परमेश्वर से आदिमानव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
को वाणी तथा ज्ञान के मिलता तो वह सदैव मूर्ख ही बना रहता। उसने और पशु में कोई अन्तर नहीं होता। साथ ही यदि धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान आदिमानव को परमात्मा से न मिलता तो पाप-पुण्य का कोई उत्तरदायित्व भी उस पर नहीं आ सकता था। अतः ईश्वरीय ज्ञान का आदि सृष्टि में आना परमावश्यक था।

मनुष्य सृष्टि के नियमों को, ईश्वरीय व्यवस्थाओं को समझ सके, भौतिक जगत् में सुखी जीवन व्यतीत करता हुआ परमात्मा के स्वरूप को समझ सके, योगाभ्यासादि क्रियाओं एवं साधनाओं को करते हुए मोक्ष को प्राप्त कर सके, इन सभी बातों की उसे पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके, इसके लिए परमेश्वर ने आदिसृष्टि से मानवोत्पत्ति के पाँच वर्ष के पश्चात् उसे चार वेदों का ज्ञान दिया। यही ज्ञान विषयभेद से ऋग्वेद (ज्ञानकाण्ड), यजुर्वेद (कर्मकाण्ड), सामवेद (प्रार्थना-उपासना-स्तुतिकाण्ड) तथा अथर्ववेद (विज्ञान काण्ड) इन चार नामों से जगत् में प्रसिद्ध होता है और आज भी विद्यमान है।

२. ईश्वरीय ज्ञान की भाषा किसी देश-विशेष की न होकर अलौकिक होनी चाहिए।

सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा द्वारा प्रदत्त मानवमात्र की एक ही वाणी (भाषा) होती है। अन्य भाषाओं की उत्पत्ति बहुत लम्बे काल के बाद मनुष्यों के पृथ्वी के विभिन्न प्रदेशों में जाकर बसने पर देश, काल एवं वायुमण्डल के प्रभाव से वाणी की विकृतियों के परिणामस्वरूप होती है। यदि परमेश्वर दीर्घकाल बाद देश-विशेष के लोगों को उनकी भाषा में ज्ञान देगा तो उस पर पक्षपात का आरोप आएगा तथा आदि सृष्टि से लेकर उस ज्ञान को देने की लम्बी अवधि में मानव पर बिना ईश्वरीय ज्ञान के धर्माधर्म की व्यवस्था लागू न हो सकने से अव्यवस्था पैदा होगी।

३. ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में अनित्य इतिहास तथा भूगोल का वर्णन नहीं होना चाहिए।

ईश्वर नित्य सत्ता है, अतः उसका ज्ञान भी नित्य है। अनित्य बातों का वर्णन होने से वह ग्रन्थ नित्य (सार्वकालिक) एवं सार्वदेशिक ज्ञान को धारण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करने वाला होने से ईश्वरीय ज्ञान की कोटि में नहीं आएगा।

ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में सृष्टि नियम तथा विज्ञान के विरुद्ध कोई बात नहीं होनी चाहिए।

ईश्वरीय ज्ञान को ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल और सर्वथा विरुद्ध होना चाहिए।

ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में सृष्टि के अनादित्व-अनन्तत्व, उसकी आयु आदि का ठीक-ठीक उल्लेख होना चाहिए।

यदि परमेश्वर सृष्टि के सम्बन्ध में मनुष्य को स्वयं जानकारी नहीं ायेंगे तो प्रलयकाल, उससे पूर्व सृष्टि—वर्तमान सृष्टि की आयु आदि के में मनुष्य ठीक-ठीक कभी कुछ भी नहीं जान सकेगा। इसलिए ईश्वरीय में इन विषयों का ठीक-ठीक वर्णन होना आवश्यक है।

संसार के किसी भी ग्रन्थ में इन विषयों पर ठीक-ठीक प्रकाश नहीं ा गया। केवल वेदों में यह सब कुछ मिलता है, जो वर्तमान भौतिक ान के भी सर्वथा अनुकूल एवं उसके द्वारा समर्थित हैं। निम्नलिखित ाण द्रष्टव्य है—

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं, नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्नम्भः, किमासीदहनं गभीरम् ॥१॥
तम आसीत्तमसा गूढ़मग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसान्महिना जायतैकम् ॥३॥
इयं विसृष्टिर्यत आबभूव, यदि वा दधे यदि वा न।
योऽस्याध्यक्षः परमे व्योमन सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥७॥

ऋग्वेद १०। १२९॥

अर्थ :— इस कार्य जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व सर्वशक्तिमान् परमात्मा तथा जगत् का उपादान कारण प्रकृति विद्यमान थी। उस समय ाकाश भी नहीं था, क्योंकि उसका व्यवहार नहीं था। न ही जगत् बनाने सामग्री (उपादान कारण) से आच्छादित था। उस समय सतोगुण, गुण, तमोगुण मिश्रा के प्रधान कहलाता है, वह भी नहीं था। उस समय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
स्थूल रजकण भी नहीं थे। उस समय विराट् अर्थात् जो स्थूल जगत् है, वह भी नहीं था। जो यह वर्तमान जगत् है, ब्रह्म के निवास का स्थान है, वह भी नहीं था। जो यह वर्तमान जगत् है, ब्रह्म को नहीं ढांक सकता और उससे महान् वा अथाह भी नहीं हो सकता है, जैसे कुहरे का जल पृथ्वी को नहीं ढांक सकता। अर्थात् ब्रह्म अनन्त है और उसका बनाया जगत् उसकी अपेक्षा से कुछ भी नहीं है। ब्रह्म एकरस नित्य सर्वव्यापक सत्ता है।

सृष्टि उत्पन्न होने की पहली अवस्था में अन्धकार से ढंका हुआ घोर अन्धकार था। यह सब दृश्यमान जगत् न जानने योग्य सलिल (परमाणुओं के समुद्र) जैसा था, जो न होने के समान सब ओर फैला हुआ था। वह परमाणु रूप से व्याप्त जगत् परमेश्वर की सामर्थ्य से प्रकट हुआ ३।

परमेश्वर से यह जगत् उत्पन्न होता है। प्रलय में कारण रूप से परमेश्वर में निवास करता है। जो व्यक्ति परमेश्वर को जानता है, वह उसे प्राप्त होता है। जो उसे नहीं जानता, वह दुःख उठाता है। परमेश्वर जगत् का स्वामी है, वही जगत् को बार-बार उत्पन्न करता है। इस विषय में विशेष विवरण ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका में देखा जा सकता है।

पृथ्वी की आयु वेद में निम्नलिखित मन्त्र में बताई गई है—

शतं तेऽयुतं हायनान् द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः।
इन्द्राग्नी विश्वेदेवास्तेऽनु मन्यतामहृणीयमानाः॥

अथर्व ८।२।२१॥

अर्थात् दस लाख तक बिन्दु रखने पर दो तीन चार अंक उससे पूर्व सृष्टि की आयु निकल आती है। अर्थात् ४,३२,००,००,००० वर्ष की सृष्टि की आयु होती है। वर्तमान विज्ञान भी इसका समर्थन करता है कि पृथ्वी को बने अब तक लगभग दो अरब वर्ष हो चुके हैं, जबकि वैदिक सृष्टिसम्वत् ठीक-ठीक आयु १९७२९४९०८९ वर्ष बताता है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति॥

ऋ० १।१६४।२०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस वेदमन्त्र में ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति के अनादित्व को स्वीकार किया गया है।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथ्वीं चान्तरिक्षमथो स्वः॥

ऋ० १०।१९०। ३॥

परमेश्वर ने आकाश, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, सूर्य, चन्द्रमा आदि की रचना पूर्वकल्प के अनुसार इस बार भी की है।

वेद का यह प्रमाण जगत् की उत्पत्ति और विनाश का अनादि क्रम प्रकट करता है।

६. ईश्वरीय ज्ञान में परस्पर विरोधी शिक्षा या विवरण नहीं हो सकता।

परमात्मा सर्वज्ञ है। उसका समस्त ज्ञान निर्भ्रम तथा सार्वकालिक सत्य एक जैसा रहने वाला होता है। मानव अल्पज्ञ है, उसका ज्ञान भ्रमयुक्त अथवा परस्पर विरोधी बातों जैसे दोषों से युक्त हो सकता है। संसार के सभी माने जाने वाले धर्मग्रन्थों में परस्पर विरोधी वर्णन व शिक्षायें देखने को मिलती हैं, जबकि परमात्मा के ज्ञान वेद में इस प्रकार का कोई भी दोषपूर्ण स्थल विद्यमान नहीं। वे नित्य सत्य का ही प्रतिपादन करते हैं। जिस प्रकार परमेश्वर सर्वज्ञ है, उसी प्रकार उसका ज्ञान वेद भी निर्भ्रम एवं पवित्र ज्ञान का आगार है। यह गुण वेदों के ईश्वरीय होने का प्रमाण है।

कृति को देखकर कर्त्ता के गुणों का तथा कर्त्ता के गुणों का उसकी कृति में दर्शन होता है। दोषपूर्ण मान्य ग्रन्थों से ही प्रकट हो जाता है कि वे अल्पज्ञ मानव की कृतियाँ हैं। वेदों के समस्त ज्ञान परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप होने से वे ईश्वरीय ज्ञान स्वयंसिद्ध हैं।

७. ईश्वरीय ज्ञान में ईर्ष्या, द्वेष और पक्षपात का लेशमात्र भी नहीं होता।

चारों वेदों में एक भी मन्त्र ऐसा नहीं जिसमें ईर्ष्या, द्वेष या पक्षपात की गन्ध आती हो। ये दोष लगभग सभी धर्मग्रन्थ माने जाने वाले साम्प्रदायिक ग्रन्थों में मिलते हैं, जो यह प्रकट करते हैं कि उनके लेखक इन दुर्गुणों से युक्त थे। परमात्मा जगत् का पिता है, सभी प्राणी उसके पुत्रवत् हैं। तब ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थों में प्राणियों से द्वेष उन्हें एक दूसरे से ईर्ष्या, द्वेष व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पक्षपात करने, लड़ने-झगड़ने-मारपीट करने, दूसरों को हानि व कष्ट पहुं के उपदेश हो सकते हैं। जो सबका कल्याण चाहता है, वह पक्षपात व द्वेष की बात कैसे कह सकता है। जो दुर्गुण प्राणियों की उन्नति में विघ एवं उनके पतन का कारण होते हैं, परमपिता परमेश्वर उन बातों का उ व आदेश कैसे दे सकते हैं। अतः जो भी ग्रन्थ इन दोषों से युक्त है मानवरचित तथा जो वेद इन दोषों से मुक्त हैं, वे ईश्वरोक्त हैं।

८. ईश्वरीय ज्ञान में मनुष्य की स्थिति, आयु, जन्म और मुक्ति का व ठीक-ठीक होना चाहिये —

संसार के किसी ग्रन्थ में इन विषयों का ठीक-ठीक वर्णन नहीं मिलत केवल ईश्वरीय ज्ञान ही इन बातों का सत्य-सत्य बर्णन करते हैं।

वेद ने मानव की आयु साधारणतया सौ वर्षों की मानी है। यथा—

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूय शरदः शतात्॥ यजु० ६६।२४॥

इस वेदमन्त्र में सौ वर्ष तक देखने, बोलने, सुनने, अदीन होकर जी रहने तथा प्रभु से सौ से भी अधिक वर्षों तक जीवन धारण करते रहने प्रार्थना करने का विधान है।

'त्र्यायुषं जमदग्नेः'। यजु ३।६२॥ इस वेदमन्त्र में योगियों की आयु सौ वर्ष तक होने की बात कही गई है।

मनुष्य का जन्म माता के पेट से १०वें मास में होता है। इस वि का वर्णन वेद में इस प्रकार किया गया है—

दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधिमातरि।
निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि॥

ऋ० ५।७८।९॥

इसमें बताया गया है कि दस मास तक बालक का शरीर माता के गर्भ रहकर पूर्ण विकसित होकर बिना किसी भी क्षति के जीवित माता के श से बाहर आता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मोक्ष के विषय में वेद में कहा गया है—

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं
तमसः परस्तात्
तमेव विदित्वातिमृत्युमेति
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय
यजु० ३१।१८॥

अर्थात् मनुष्य योगाभ्यास द्वारा प्रकाश एवं ज्ञानस्वरूप परमेश्वर को जानकर उसका अनुभव करके मृत्यु से तर जाता है। मोक्ष प्राप्ति का इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।

इस कसौटी पर भी केवल वेद ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ सिद्ध होते हैं।

९. ईश्वरीय ज्ञान जाति-विशेष के लिए न होकर मनुष्यमात्र के लिए होना चाहिये—

संसार के सभी अन्य ईश्वरीय माने जाने वाले ग्रन्थ अपनी-अपनी जाति-विशेष के लिए हैं, कोई भी मनुष्य मात्र के लिए नहीं है। यथा—कुरान मुसलमानों के लिए, बाइबिल ईसाइयों के लिए, तौरेत यहूदियों के लिए, जिन्दावस्था पारसियों के लिए आदि। किन्तु वेद सार्वभौम ग्रन्थ हैं। उनमें परमेश्वर का किसी भी जाति-विशेष के साथ पक्षपात एवं दूसरों से द्वेष करने का दोष नहीं आ सकता। एक वेदमन्त्र प्रमाणस्वरूप देखें—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय॥
यजु० २६।२॥

परमपिता परमात्मा आदेश देते हैं कि जैसे मैं इस वेदवाणी का उपदेश तुम्हें करता हूं वैसे ही तुम भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र शब्द मानव-समाज गुणवाचक व्यक्तियों के लिए हैं, ये जातिवाचक नहीं हैं।

१०. ईश्वरीय ज्ञान का ग्रन्थ लौकिक विज्ञान से अविरुद्ध होना चाहिये—

वेदों में समस्त विज्ञान बीज-रूप से विद्यमान हैं। कुछ प्रमाण प्रस्तुत हैं—

कतरा पूर्वा कतरा परायोः
कथा जाते कवयः को विवेद।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्वात्मना विभृतो यद्ध नाम
विवर्त्तेत अहनीय क्रियेव ॥१॥
ऋ० १।१८५।१।

इस मन्त्र में पृथ्वी ही नहीं वरन् समस्त नक्षत्र, राशिमण्डल का नियमबद्ध होकर घूमना बताया गया है।

अहस्ता यदयदी वर्धत गाः शचीभिर्वेदयानाम् ।
शुष्णं परि प्रदक्षिणिद् विश्वायवे नि शिश्नथः ॥
ऋ० १०।२२।१४॥

इसमें पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर घूमना बताया गया है।

सवित्स यन्त्रैः पृथिवीमरम्णाद
स्कम्भने सविदताद्या मद्वं हत ।
अश्यमिवाधुक्षद्ध निसन्त-
रिक्षमर्त्तेर्ते बद्धं सविता समुद्रम् ॥
ऋ० १०।१४९।१॥

सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति से पृथ्वी को चारों ओर घुमा रहा है। अनेक नक्षत्र सूर्य के चारों ओर घूम रहे हैं, यह भी इससे स्पष्ट है।

यत्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसा विध्यदासुरः ।
अक्षेत्र विद्यया मुग्धो भुवनात्यदीधयुः ।
ऋ० ५।४०।५॥

यं वै स्वर्भानुस्तमसा विध्यदासुरः ।
अत्रयस्तमन्त्र विन्दन्नह्यन्ये अशक्नुवन् ॥
ऋ० ५।४०।९॥

इन मन्त्रों में चन्द्रमा का सूर्य से प्रकाश ग्रहण करके प्रकाशित होना बताया गया है।

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो
निवेशयनमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सविता रथेन
देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
ऋ० ४।३५।२॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसमें सूर्य को पृथ्वी का आकर्षण करने की बात कही गई है। वेदों में सहस्रों मन्त्र विज्ञानपरक हैं, जो वर्तमान विज्ञान के पूर्णतः अनुकूल हैं।

११. ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ पूर्ण एवं सर्वविद्याओं का भण्डार होने चाहिये।

ईश्वरीय ग्रन्थ का पूर्ण तथा सर्वज्ञानयुक्त होना आवश्यक है ताकि मनुष्य उसके आधार पर सत्य विद्याओं का ज्ञान प्राप्त कर सकें। संसार के साहित्य में केवल वेद ऐसे ग्रन्थ हैं, जो सर्व सत्य विद्याओं के भण्डार हैं, क्योंकि वे सर्वज्ञ परमेश्वर का नित्य ज्ञान हैं। अल्पज्ञ मानवकृत ग्रन्थ कभी भी सर्वविद्यायुक्त नहीं हो सकते।

१२. मिथ्या माहात्म्य का ईश्वरीय ग्रन्थ में अभाव होना चाहिये।

ग्रन्थों में माहात्म्य लोगों को गलत रूप से उनके प्रति आकर्षित करने को लिखे जाते हैं, जो ईश्वरीय ग्रन्थों में नहीं होना चाहिए। वेद इस प्रकार के किसी भी मिथ्या माहात्म्य से युक्त नहीं हैं, क्योंकि वे परमेश्वर का सत्य ज्ञान धारण करते हैं, जब कि अन्य सभी साम्प्रदायिक ग्रन्थों में मिथ्या माहात्म्यों की भरमार है।

महर्षि दयानन्द प्रतिपादित ईश्वरीय ज्ञान की कसौटियां

(क) जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्ध गुण-कर्म-स्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुण वाला है, वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुकूल कथन हो, वह ईश्वरकृत, है अन्य नहीं। ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में ईश्वर के वास्तविक यथार्थ तथा युक्तियुक्त गुण, कर्म और स्वभाव का वर्णन होना चाहिये। यह केवल वेदों में मिलता है, अन्य किसी ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं है।

(ख) जिसमें सृष्टिक्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्तों के और पवित्रता के विरुद्ध कथन न हो, वह ईश्वरीय ग्रन्थ होगा।
जैसा ईश्वर का निर्भ्रम ज्ञान है, वैसा जिस पुस्तक में भ्रान्तिरहित ज्ञान का प्रतिपादन हो, वह ईश्वरीय होगा।

(घ) जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रचा है, वैसा ईश्वर, सृष्टि, कार्य, कारण और जीव प्रतिपादन जिसमें हो, वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(ङ) जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों से अविरुद्ध शुद्धात्मा के स्वभाव के विरुद्ध न हो, इस प्रकार के ग्रन्थ वेद हैं। (सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ७)

चार वेदों के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द का मत

विदन्ति, जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति, विदन्ते, लभन्ते, विंदते, विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्या, यैर्येषु वा, तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः। तथा ऽऽदिसृष्टितारभ्याद्य मर्यन्तं ब्रह्मादिभिः सर्वाः सत्यविद्याः श्रूयन्तेऽनया सा श्रुतिः। न कस्यचिद्देहधारिणः सकाशात्कदाचित्कोऽपि वेदानां रचने दृष्टवान्। कुतः निरवयवेश्वरं क्तिषां प्रादुर्भावात्। अग्निवाय्वादित्याङ्गिरसस्तु निमित्तीभूता वेद प्रकाशार्थमीश्वरेण कृता इति विज्ञेयम्। तेषां ज्ञानेन वेदानामनुत्पत्तेः वेदेषु शब्दार्थ सम्बन्धाः परमेश्वरःदेव प्रादुर्भूताः मस्यपूर्णं विद्यावत्त्वात् अतः कि सिद्धमग्नि वायु रव्यङ्गिसे मनुष्यदेहधारि जीवद्वारेण परमेश्वरेण श्रुतिर्वेदः प्रकाशीकृत इति बोध्यम्॥

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदोत्पत्ति विषयः)

वेद सृष्टि के आदि में परमेश्वर से मिल

इन्द्रेण युजा निःसृजन्त वाघतो वज्रं गोमन्तमश्विनम्।
सहस्रं मे ददतो अष्ट कर्ण्यः श्रवो देवेष्वक्रत॥

ऋ० १०।६२।७॥

आप हमें इस प्रकार भी सहयोग दे सकते हैं।
५०१ रु० भेज कर
जन-ज्ञान मासिक
के आजीवन सदस्य बनिए।
तथा १५१ रु० का उपहार साहित्य
(१०१ रु० के अमूल्य ग्रन्थ वैदिक सम्पत्ति और
५०रु० मूल्य के सामवेद हिन्दी पद्यानुवाद सहित)
प्राप्त कीजिये।
२२८६, आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रामजन्मभूमि--विवाद और गुरु गोविन्द सिंह

—राजेन्द्र सिंह

राजीव सरकार ने अल्पसंख्यकों की परितुष्टि और समाधानार्थं रामजन्म भूमि को विवाद का विषय बनाते हुए अन्ततः इसे न्यायालय में घसीट ही लिया। शाहबानो-विवाद में न्यायालय ने अपना जो निर्णय दिया था, वह राजीव सरकार को इसलिए मान्य न रहा, क्योंकि सरकार उन मुसलमानों से भय खाती थी, जिन्होंने सरकार को आँखें दिखाते हुए यह चेतावनी दी थी कि शाहबानो-विवाद एक मजहबी मामला है और इस कारण सरकार को इसमें हस्तक्षेप का कोई अधिकार नहीं। अब राजीव गाँधी रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर न्यायालय का निर्णय मान लिया जाये, इस बात पर बल देते हुए न्यायालयीय निर्णय के सम्मान की अपेक्षा भारतवासियों (विशेषकर हिन्दुओं) से करते हैं। प्रधानमन्त्री ने यह बात तो ऐसे कह दी मानो कांग्रेसी सरकार न्यायालय का बहुत सम्मान करती रही है। न्यायालय द्वारा अनेक ऐसे निर्णय हुए हैं, जिन्हें स्वयं सरकार ने कभी मान्यता नहीं दी। उदाहरणार्थ भूतपूर्व प्रधानमन्त्री (और अभूतपूर्व महिला) श्रीमती इन्दिरा गाँधी पर प्रयाग के उच्च न्यायालय ने जो निर्णय को मान लिया जाता तो इन्दिरा गांधी को प्रधानमंत्री पद से वंचित होना पड़ता, जो राजीव-जननी को कदापि स्वीकार नहीं था। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने प्रधानमन्त्री का पद त्यागने के स्थान पर पद के मोह में सम्पूर्ण देश पर आपातकाल लाद दिया। इन बातों से ज्ञात होता है कि कांग्रेसी सरकार अपनी परम्परा के अनुसार न्यायालय के निर्णय का सम्मान करने में कतराती रही है। फिर वह किस मुंह से हिन्दुओं से न्यायालय का निर्णय मान लेनें की आशा करती हैं।

किसी बात का निर्णय करने के लिए एक राजा में मानसिक बल होना चाहिये। राजीव गांधी में ऐसे बल का अभाव है। इसी कारण वामपन्थी-साम्प्रदायिक-प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ राजीव गाँधी को अपनी अंगुलियों पर नचाती रहती हैं। पंजाब समस्या इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है। जैसे भारत छोड़ो आन्दोलन (१९४२) के काल में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूर्ण चन्द्र जोशी ने परोक्ष रूप में पाकिस्तान बनाने में अंग्रेजों को अपना पूर्ण सहयोग दिया था परन्तु दिखावे के रूप में अंग्रेजों का विरोध किया था, उसी प्रकार कम्युनिस्ट पार्टी पंजाब के सन्दर्भ में कर रही है। आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव का समर्थन करने वाले जगजीत सिंह चौहान (भाकपा के छात्र संघ के नेता), हरि किशन सिंह सुरजीत और अकाली तथा सरकार के बीच मध्यस्थ बने इन्द्र कुमार गुजरात—ये सभी वामपंथी नेता ही हैं। भाकपा के महा-सचिव राजेश्वर राव की आज्ञा से ही कामरेड सोहन सिंह जोश ने १९७१ में, पंजाबी में 'अकाली मोर्चंया दा इतिहास' और फिर १९७४ में इसका हिन्दी रूपान्तर 'अकाली मोर्चों का इतिहास' ग्रंथ लिखा था जिसको रूससमर्थक पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस ने प्रकाशित किया था। अब पंजाब समस्या को भड़काने के पश्चात् एक-एक करके ये सभी कामरेड समाचार-शीर्षकों से इस प्रकार खिसक रहे हैं मानो पंजाब-समस्या भड़काने में उनका कभी हाथ न रहा हो। इसलिए यदि राजीव सरकार सचमुच ही किसी निर्णय पर पहुंचना चाहती है तो उसे स्वयं में सशक्त मानसिक बल प्राप्त करना होगा। और इस कार्य के लिए राष्ट्रीय महापुरुष गुरु गोविन्द सिंह से प्रेरणा ली जा सकती है क्योंकि उनका जन्म मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के वन्दनीय कुल में हुआ था और उन्होंने रामजन्मभूमि की रक्षार्थ अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था। वामपंथी शक्तियाँ अकालियों को पंजाबी सूबा बनाने में तो खुले मन से सहयोग देती है परन्तु उनको अपने गुरु की ओर ले जाने में सदैव बाधक बनती है। अभी कुछ दिन पूर्व प्रगतिशील लेखक मुल्क राज आनन्द ने कहा है कि राम के ऐतिहासिक होने में क्या प्रमाण है। उसका प्रमाण यह है कि जिन अकालियों को वामपंथी मार्ग पर आप डाल कर साम्प्रदायिक तत्वों को उछाल रहे हो उन्हीं के इष्ट गुरु जी ने स्वयं अपनी रचना 'बचित्र नाटक' में राम को एक ऐसा ऐतिहासिक महापुरुष माना है जिसके वे वशंज थे। इसी प्रकार जिस पन्थ के एक वर्ग विशेष को भड़काकर आप एक नये पाकिस्तान की पुनरावृत्ति करना चाह रहे हैं उसी पन्थ के प्रवर्त्तक प्रातःस्मरणीय गुरु नानक ने (भाई बाले जन्म साखी की साखी मदीना के अनुसार) पीर बहाउद्दीन के एक उत्तर में अपना परिचय देते हुए कहा था कि—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूरज कुल ते रघु भइया रघु वंसी भइया राम।
राम चन्द्र के दोइ सुत लतू कुसु तिह नाम।
इह हमारे बड़े हैं जुगां जुगां अवतार।
इनही के घर उपजे नानक कल अवतार।।

अतः हिन्दू-सिक्ख में कोई अन्तर हैं, ऐसा कोई मूढ़मति ही मान सकता है। अब मुल्क राज आनन्द सदृश कामरेड क्या यह मान लेने का दुस्साहस कर सकेंगे कि श्री दशमेश पिता एक काल्पनिक व्यक्ति के वंशज रहे होंगे ? क्या श्री गुरु जी ने अपने को जो रामवंशी कहा है वह बिना प्रमाण के कह दिया ? श्री गुरु जी एक राजा थे। उनके राजकुल में अवश्य ही ऐसी प्रामणिक सामग्री विद्यमान रही होगी, जिनके आधार पर उनको अपने वन्दनीय कुल का पता लगा था। वैसे भी वे एक तपस्वी महापुरुष थे।

औरंगजेब के आलमगीर नामा पृष्ठ ६२३ के अनुसार (बाबर द्वारा तोड़ी गई रामजन्मभूमि पर बना ली गई) बाबरी मस्जिद के काफिरों (हिन्दुओं) ने ३० हमले किये। सत्र में लापरवाही की वजह से फौज ने शिकस्त खाई। आखिरी हमला (गुरू) गोविन्द सिंह के साथ वैष्णवदास पर हुआ। उसमें शाही फौज का सबसे ज्यादा नुकसान हुआ। इस लड़ाई में शहजादा मनसबदार सरदार हसन अली खाँ भी मारा गया।'

इससे स्पष्ट हो जाता है कि श्री गुरू जी ने राम जन्म भूमि की रक्षा में और उसे पुन पुण्यस्थली बनाने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया था। उनके बलिदानी जीवन के अन्निम दिनों की एक घटना से प्रेरणा मिलती है कि रामजन्मभूमि हिन्दुओं की तपोभूमि है।

ज्ञानी ज्ञान सिंह कृत श्री गुरु पन्थ प्रकाश (१९३९ विक्रमी, दिल्ली संस्करण) के पृष्ठ २७०-७१ के अनुसार एक दिन नांदेड़ में बहादुरशाह के मुंशी भाई नन्द लाल (गुरु भक्त) ने गुरुजी को शंदेश दिया कि शाह आपसे मिलना चाहता है। कुछ दिन उपरान्त शाह श्री गुरू जी से मिला और वीर बन्दा वैरागी की विजयों से घबड़ाकर गुरुजी से बन्दे को युद्ध बन्द करने का आदेश दिलाने का निवेदन किया। परन्तु गुरूजी ने बात को टाल दिया। बहादुरशाह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असफल होकर अपने डेरे पर चला गया। इसी समय—

तब ही एक पठाण नै ह्वै कर बहु गरजी।
साहि बहादुर ढिग दई सतगुरु पर अरजी।
कह्यो हमारी भूम में गुरु नगर बसायो।
जोर बजोरी आन के इन डेरा लायो।। 52
सात पुसत ते जिमीं है हमरी यह जानो।
पीर हिन्दु के नै अबी दब लई महानो।
बादसाहि ने गुरु तें बूझ्यो यहि जब ही।
जिमी हमारी है यही गुरु भाख्यो तब ही।। 53
परयो अधक अकरार जौ तब गुरु इक थल को।
पुरवायो छै हाथ लौ दिखलायो थल को।
निकस्यो धरती मध तै इक मन्दर चारू।
धूणी तिंसके बीच में जग रही अपारू।। 54
कर मण्डल वर आसन आसा अर माला।
यहि समान दिखरायो निज गुरु बिसाला।
बादसाहि नै बूझ्यो यहि निकस्यो कैसे।
तब गुरु नै फिर भाख्यो तिस प्रति ऐसे।। 55

गुरुजी ने अपना निर्णय दिया।

जब जुग द्वापर था हुतो तब हम इस थानम्।
बरस हजार हु बैठ कै तप कीन महानम्।

और तब

बादसाहि ने गुरु को बहु बन्दन कीनो।
तब ही तिसी जमीन का पठ्टा लिख दीनो।। 56

यहां अपने अन्तिम दो टूक निर्णय में श्री दशम गुरु जी ने स्पष्ट कर दिया कि मुसलमान आक्रान्ता तो यहां कुछ पीढ़ियों से है, परन्तु भारत हमारी आदि काल से चली आ रही तपोभूमि है, जिसे बहादुर शाह सदृश आक्रामक-वंशयों ने हरण कर लिया था। अतः इस तपोभूमि पर किसी आक्रपक का कोई अधिकार नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

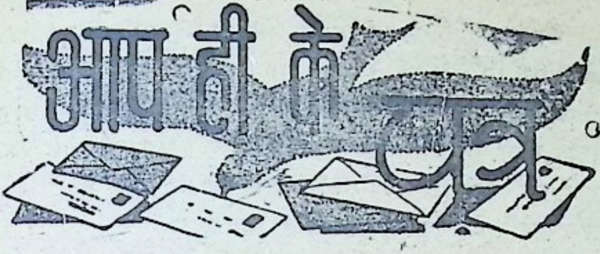

भारतीय जीवन में देववाणी संस्कृत की अनिवार्यता

प्रिय महोदय,

मुझे 'जनज्ञान' का १६ फरवरी—१५ मार्च, ८९' का अंक देखने को मिला। पत्रिका २१ वर्ष से निकल रही है, परन्तु इसे देखने का मेरे लिए यह पहला अवसर है। आद्योपान्त सामग्री सुरुचिपूर्ण और वर्त्तमान परिस्थितियों में उपयोगी है।

श्री गंगादत्त शर्मा का इंग्लिश मीडियम स्कूल लेख शत-प्रति-शत सटीक सामयिक और देश के भविष्य के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अंग्रेजी माध्यम से वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत तथा प्राचीन इतिहास को पढ़ा कर यह शिक्षा पद्धति जहां भारतीय जीवन में देववाणी संस्कृत अनिवार्यता को आंख से ओझल कर रही है, इससे अधिक घातक अपराध अज्ञान का प्रचार कर रही है, अधूरी दुर्बल और भ्रष्ट अंग्रेजी को बढ़ावा देकर यह शिक्षा अज्ञान को ज्ञान कह कर राष्ट्र को मूर्ख बना रही है। अग्रेजी में गिटपिटाते, भयंकर गरमी में कोट-टाई में जकड़े भारतीय नवयुवकों की दशा आज मोर पंख कौए से भी अधिक दयनीय हो रही है। परन्तु जब सभी मोरपंखधारी कौए हों, तब कौन किसे लज्जित करे और किसे लज्जा आए! लेखक का कहना सही है कि यह अंग्रेजी शिक्षा एक घातक बीमारी का रूप ले चुकी है और अब शहरों से, छोटे नगरों, कस्बों, मोहल्लों और गांवों तक में फैल रही है। स्वास्थ्य के कीटाणु नहीं होते, स्वास्थ्य स्वतः नहीं फैलता, उसके लिए बहुत सावधानी और प्रयत्न की आवश्यकता होती है, परन्तु बीमरी, महा-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मारी स्वतः फैलती है। अंग्रेजी शिक्षा से शिक्षक का महत्व तो घटा ही है, उसका आत्मसम्मान और गरिमा भी नष्ट हो गई है। जब गुरु गुरु नहीं रहा वेतनभोगी कर्मचारी हो गया, तो उसकी शिक्षा की गुणवता और प्रभुविष्णुता स्वतः ही शिरोहित हो जाती है। विद्यार्थी उससे भय शायद खायें, प्रभावित नहीं होते, इस प्रकार राष्ट्रीय चरित्र और देश प्रेम का पतन हो रहा है। जीवन का लक्ष्य धर्माचरण न रह कर स्वार्थ लिप्स्त और येनकेन प्रभारेण अर्थ प्राप्ति और अर्थ सिद्धि हो गया है।

संस्कृति की बात जाने भी दे, तो रचनात्मकता के स्तर पर इस दूषित विदेशी शिक्षा के कारण परम्परागत व्यवसाय और कलायें लुप्त होती जा रही है। आज धोबी, मोची, जुलाहा, कुम्हार, लौहार, बढ़ई आदि की सन्तान अपना परम्परागत व्यवसाय अपनाना नहीं चाहती। इन परिवारों को अपने माता-पिता के व्यवसाय अपनाने में शर्म महसूस करते हैं। फलस्वरूप इन सभी व्यवसायों का मशीनीकरण हो गया है, जिससे ये सेवायें और उनके बेहद खर्चीले और दुष्प्राप्य हो गए हैं। विडम्बना यह भी है कि इन व्यवसायों के कारखानों में इन नवयुवकों को मजदूरी कहते शर्म नहीं आती। मशीनी करण के कारण इन व्यवसायों से जुड़ी हुई जो रचनात्मकता, कलात्मकता, और अपने व्यवसाय में उत्कृष्टता के गर्व भी भावना थी, उसका सर्वथा लोप हो गया है। जहां पहले उपयोगिता के साथ सौन्दर्य सुरुचि और कलात्मकता थी, उसका स्थान अब दिखावे और फैशन ने ले लिया है। आज तक के विज्ञापन पश्चिम की नकल पर सामान्य उपयोग की समग्री का प्रचार करते रहते हैं।

लेखक ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रयत्नों का जिक्र किया है। विद्या भारती, सरस्वती शिशु मन्दिर जैसी संस्थाएं चल रही हैं, परन्तु चारों ओर दूषित वातावरण के कारण ये संस्थायें पनप नहीं पाते। गुरुकुल संस्थानों का आपसी कलह और अनुशासनहीनता आज सभी देख रहे हैं। वही हाल भारतीय विद्या भवन, रामकृष्ण मिशन आदि के स्कूलों का है। डी. ए. वी. स्कूल भी इसी लहर की चपेट में हैं। यदि ये संस्थायें वर्तमान प्रणाली का अनुकरण न करें, तो इनके बन्द होने की नोबत न आ जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो फिर निदान क्या है ? किसी भी रोग की सफल चिकित्सा के लिए रोग के मूल कारण को जानना आवश्यक है 'इंग्लिश मीडियम' स्कूलों के बढ़ने का मूल कारण है 'अंग्रेजी का नोकरियों में रोजी-रोटी से जुड़ा होना। जब व्यापार, प्रशासन, न्याय, शिक्षा, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों में नौकरियां अंग्रेजी के माध्यम से मिलेंगी, तो स्कूलों में अंग्रेजी पढ़ाये बिना काम नहीं चलेगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अपने विद्या भारती अभियान द्वारा कभी भी इंग्लिश मीडियम का सामना नही कर सकता। इसके लिए विशाल और सशक्त सतत आन्दोलन की आवश्यकता है। जिन साधनों से महात्मा गान्धी ने अंग्रेजी को निकाला, उन्हीं साधनों से अंग्रेजियत और अंग्रेजी को निकाला जा सकता है। नान्य: पन्था विद्यतेयनाय। मुझे वह लक्ष्य नजर नहीं आता। उलटे आज हम लाखों रुपये व्यय करके विदेशी शिक्षा पर विदेशी माध्यम से उच्च तकनिकी और विज्ञान के विद्यार्थी तैयार कर रहे हैं और उनमें से ३५ प्रतिशत सर्वश्रेष्ठ प्रतिभावान् नवयुवक विदेश चले जाते हैं। आज शिक्षा और व्यापार द्वा धडल्ले से भारत का आर्थिक और सांस्कृतिक दोहन हो रहा है। इसे केवक्ष देशव्यापी क्रान्ति ही समाप्ति की ओर ले जा सकती है। चीन और सोवियत रूस दिशानिर्देश दे रहे हैं, परन्तु क्या हमारी नई पीढ़ी में वह ऊर्जा और साहस शेष हैं? वर्त्तमान शिक्षा पद्धति के चलते यह संभव नहीं, क्योंकि हाल ही में एक लेखक ने आज 'सरस्वती को पाठ्यपुस्तकों में कैद, कह-कर यह विलाप किया था कि, "आज हमारी शिक्षा पद्धति ने हमें विदेशों से आयातित ज्ञान अथवा सूचनाओं का उपभोक्ता मात्र बना दिया है, विशुद्ध ज्ञान का स्वतन्त्र उत्पादक नहीं !" अमेरिका में आज जो हो रहा है, हमारे यहाँ भी वही होना चाहिये। रान और बौद्धिक उर्जा का जो अवनुलन हुआ है, उसे देख कर हृदय दो टूक होता है। आज प्रत्येक बालक अंग्रेजी में गिनती सीखता है। हिन्दी गिनती उसे नहीं आती। गणित में वह पहाड़े भूल गया है। यहां तक कि साधारण जोड़ और गुणा भी उसके दिमाग से बाहर हैं। प्रत्येक स्तर पर उसे "कैलकुलेटर" चाहिए। गणित में अंक और दशमलव पद्धति और ज्योतिष के अद्यतन आविष्कार करने वाले देश का यह घोर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बौद्धिक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अधःपतन है। आज परीक्षा में साधिकार डंके की चोट पर नकल करने वाले विद्यार्थियों की संख्या लाखों में है। विद्यार्थी-स्तर पर अपराध भावना से मुक्त होकर ये नवयुवक समाज में कैसी क्रान्ति करेंगे, इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

पत्र लम्बा हो गया है, परन्तु प्रश्न हमारे अस्तित्व और हमारी राष्ट्रीय अभिज्ञा का है, जिसे अब त्रिभाषा फार्मूले से संस्कृत को हटाकर जड़-मूल से समाप्त करने की अभियोजना चालू कर दी गई है। आप अपने पत्र के माध्यम से प्रयास जारी रखें।

शुभ कामनाओं सहित
कमला रत्नम्

'ईशान' एफ-१/७ होजखास एन्क्लेव, नई दिल्ली-११००१६

हिन्दू संसद् 10 और 11 अगस्त को

महोदय,

हिन्दू समाज संकट में है। इस देश में हिन्दुओं की जनसंख्या लगभग ८४ प्रतिशत है, फिर भी अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के कारण हिन्दुओं को दूसरी श्रेणी का नागरिक बना दिया गया है तथा हिन्दुओं के हितों का विधिपूर्वक और लगातार दमन हो रहा है। सब जानते हैं कि सरकार के परिवार नियोजन उपाय केवल हिन्दुओं के लिए हैं। मुसलमानों को अधिक से अधिक सन्तानें उत्पन्न करने की खुली छूट है। इसके अतिरिक्त मुस्लिम जनसंख्या का अनुपात बढ़ाने के लिए बंगलादेश और पाकिस्तान से लगातार मुसलमानों की भारी संख्या में अवैध घुसपैठ हो रही हैं, जिसे वर्तमान सरकार रोकने को तैयार नहीं। विदेशों से निर्धन और पिछड़े हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करने के लिए मुस्लिम और ईसाई संस्थाओं को अपार धन मिल रहा है। साम्प्रदायिक दंगे प्रतिदिन की की घटना हो चुके हैं, जिस कारण हिन्दुओं के जन और धन की भारी हानि हो रही है और देश में आतंक का वातावरण उत्पन्न हो रहा है। यह सब एक सुनियोजित षड्यंत्र का परिणाम है। १८८१ से १९४१ तक हिन्दुओं की जनसंख्या घटी तो देश का दुःखद विभाजन हुआ। इस गंभीर स्थिति पर विचार करने, राष्ट्र का मार्गदर्शन करने और हिन्दुओं में अपने हितों की रक्षा करने के लिए चेतना उत्पन्न करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए दिल्ली में 'हिन्दू संसद्' १० व ११ अगस्त १९८९ को मावलंकर हाल, रफी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ में आयोजित करने का निर्णय किया गया । इस संसद में हिन्दू हितों से सम्बन्धित निम्नलिखित आवश्यक विषयों पर प्रस्ताव पारित कर एक भारी प्रदर्शन के साथ भारत के राष्ट्राध्यक्ष एवं लोकसभा के अध्यक्ष को एक ज्ञापन के साथ दिये जायेंगे—

१. भारत को हिन्दू राज्य घोषित किया जाये ।

२. भारत की समस्त जनता पर समान सामाजिक संहिता लागू की जाये ।

३. गोवध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाये ।

४. भगवान् राम जन्म भूमि, भगवान् कृष्ण जन्म भूमि तथा काशी विश्वनाथ मंदिर हिन्दुओं को वापिस दिये जायें तथा सभी मन्दिरों पर से सरकारी नियंत्रण समाप्त किया जाये ।

५. जम्मू और कश्मीर से सम्बधित धारा ३७० समाप्त की जाए । साथ नगालैंड तथा मिजोरम राज्यों के विशेषाधिकार समाप्त किये जायें ।

६. ईसाई मिशनों तथा मुस्लिम संस्थाओं को विदेशों से आने वाले धन पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जाये ।

७. अल्पसंख्यक आयोग को भंग किया जाये तथा अल्पसंख्यकों के विशेषाधिकार समाप्त किये जायें ।

८. बंगलादेश तथा पाकिस्तान से मुसलमानों की अवैध घुसपैठ पर कड़ी रोक लगाई जाये और भारत की समस्त सीमा पर सुरक्षा पट्टी बनाई जाये । केन्द्रीय विधि पारित कर परिवार नियोजन सभी समुदायों पर समान रूप से लागू किया जाये ।

१०. अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कर हिन्दी को केन्द्र की राजभाषा बनाया जाए एवं समस्त भारतीय भाषाओं को उचित स्थान तथा संस्कृत को विशेष सम्मान का स्थान दिया जाए ।

११. निर्धन तथा पिछड़े हिन्दुओं के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के लिए प्रभावशाली पग उठाए जायें ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपसे अनुरोध है कि हिन्दू संसद् को सफल बनाने के लिए अपना
योग प्रदान करें। इस संसद की सफलता से भारत की राजनीति पर
अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।

—इन्द्रसेन शर्मा, उपाध्यक्ष, आ. भा. हिन्दू महासभा, नई दिल्ली

आपका साहस प्रशंसनीय है

श्रद्धेय सम्पादिकाजी, सादर नमन।

जनज्ञान का प्रत्येक अंक उत्कृष्ट कलेवर का प्रतीक बन गया है। भक्ति और देशभक्ति की शिक्षा देने वाली इस की सामग्री हम जैसे सं प्रेमियों के लिए प्रेरणादायक है और स्वदेशभिमान का पाठ पढ़ाती हैं।

ताजा अंक में आपकी कविता पढ़कर तो ऐसा लगा कि मानो आपने ही विचारों को छन्दोबद्ध कर दिया हो। हमारा देश संक्रान्तिकाल से रहा है। जनज्ञान सदृश पत्रिकायें देश का मार्ग दर्शन करती है।

आपका और जनज्ञान के दिवंगत संस्थापक महात्मा वेदभिक्षु: साहस प्रशंसनीय है। परमात्मा आपको दीर्घ आयु प्रदान करे। आप रहें।

पवन जे. खंडेलवाल, नाथ द्वारा (राजस्थान)

आपका साहित्य बहुत प्रभावशाली है

आदरणीया सम्पादिकाजी,

आपके दयानन्द संस्थान से प्रकाशित साहित्य बहुत प्रभावशाली ईसाइयत के सम्बन्ध में आपने जो साहित्य प्रकाशित किया है, उसे मेरा एक मित्र चौबीस घंटे में ईसाइयत से विमुख हो गया। अब वह मित रूप से और रुचिपूर्वक जनज्ञान मासिक पढ़ता है। ऐसे उपयोगी सत्त का जितना भी प्रचार हो, उतना ही कम है।

—सर्वजीत, नौ

वेद मन्दिर की यज्ञशाला अधूरी पड़ी है। उसे पूरा करने के लि मन-धन से सहयोग दीजिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्रीय समृद्धि के लिए हिमालय नीति बनाने की जरूरत

—अनुराग

कश्मीर से नेपाल की सीमा तक विशाल हिमालय क्षेत्र सदैव से भारत के लोगों की श्रद्धा, आस्था और आदर का केन्द्र रहा है। यह आध्यात्मिक रणा, कौतूहल और रहस्य का स्थल भी माना जाता रहा है। आध्यात्मिक सलिए कि हिमालय की ऊंची, बर्फीली, शांत और सुरम्य र्वत चोटियां, वनाच्छादित सुरम्य घाटियां और गिरिकन्दराएं प्राचीन काल साधकों की साधना का प्रिय केन्द्र रही हैं। रहस्य का स्थल इसलिए कि हमालय के गर्भ में रहस्यमय योगियों और सम्पदाओं के मिलने की चर्चा रही है।

किन्तु इस सबके बावजूद आधुनिक युग में हिमालय की सम्पदा का इतना दोहन नहीं हो पाया हैं कि यह भारत की समृद्धि का देवता बन सके। विभिन्न क्षेत्रों में दीर्घकाल से चर्चा है कि एक विशिष्ट हिमालय नीति या हिमालय आयोग बनाया जाए ताकि हिमालय के बारे में एक सघन विकास योजना तैयार हो सके।

सामान्यतः अभी तक हिमालय के दो पक्षों पर ही ध्यान केन्द्रित रहा है। पहला इसके सामरिक और सुरक्षा महत्त्व पर और दूसरा इसके अनुपम नैसर्गिक सौंदर्य पर।

जहां तक हिमालय के सामरिक महत्त्व का प्रश्न है, उसकी ओर हमारी सरकार का का भी ध्यान गया है और हिमालय सीमाओं को इस दृष्टि से अधिकतम सुरक्षित बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

हिमालय के लोग

आश्चर्य होगा यह जानकर कि विराट् हिमालय की गोद में रहने वाले लोग बड़े भोले-भाले और सरल हैं। आधुनिकता का गहरा रंग उन्हें स्पर्श नहीं कर पाया है। वे न्यायसंगत, शाश्वत मूल्यों वाली भारतीय संस्कृति के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीते-जागते उदाहरण दिखाई देते हैं। छल-प्रपंच की उनसे कल्पना भी न की जा सकती। हां, अन्य क्षेत्रो के चालाक लोगोंद्वारा उन्हें छल भले ही लि जाता है। दहेज प्रथा जैसी बुराइयाँ यहां अभी तक नहीं हैं। हि और विघटनकारी प्रवृत्तियों से ये दूर हैं। किन्तु हिमालय क्षेत्र के बा से आए लोगों के कारण कुछ सांस्कृतिक और सभ्यता प्रदूषण शुरू अव हो गया है जिसे ये लोग अशक्त और असमर्थ होने के कारण झेल पाने असमर्थ हैं। उनकी इस विवशता का कारण है उनकी आर्थिक स्थिति छोटी-मोटी खेती, और वन संपदा पर आधारित आजीविका के कारण इन स्थिति पहले से ही बहुत अच्छी नहीं थी। वन संरक्षण योजनाओं के कार जहाँ वन विकास को बल मिला है वहाँ परंपरागत जीविका के साधनों प भी प्रभाव पड़ा है। विकास की हर प्रक्रिया में इस प्रकार की पीड़ाएं होन स्वाभाविक भी है। एक छोटी-सी सड़क, बांध या पुल बनता है तब भी कुछ लोगों की जीविका पर प्रभाव तो पड़ता ही है। स्वाभाविक है कि वन योजनाओं के कारण भी पर्वत पुत्रों की परम्परागत वनस्पति आधारित आजीकिा को धक्का पहुंची।

किन्तु अब सरकार ने इस ओर भी गंभीरता से ध्यान दिया है और इन क्षेत्रों में कुछ ऐसे लघु उद्योग प्रारंभ किये हैं जिनमें स्थानीय लोगों काम मिल सके। निसन्देह हिमाचल पुत्रों की आर्थिक समृद्धि ही हिमालय की शक्ति में वृद्धि का कारण बनेगी। किसी क्षेत्र के लोगों का विकास ही उस क्षेत्र के विकास की गारण्टी होती है।

हिमालय में अपार सम्पदा

हिमालय क्षेत्र की समृद्धि के लिए कहीं बाहर से प्रयत्न करने की जरूरत नहीं। हिमालय में अपार संपदा छिपी पड़ी है। अकेले, उत्तर प्रदेश के उत्तरांचल क्षेत्र में वन संपदा से ४५ करोड़ रुपये वार्षिक की आय होती हैं। यहां का दो तिहाई क्षेत्र वनाच्छादित है। प्रति वर्ष दो लाख क्विंटल लीसा लकड़ी से ही साढ़े पांच करोड़ रुपये राजस्व प्राप्त होता है।

किन्तु इस संपदा के उचित विनियोजन द्वारा इस क्षेत्र में ही अधिकतम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लघु उद्योग खोले जाने की परियोजनाएं अब शुरू हो रही हैं। पर्वतीय क्षेत्र के विकास के लिए यह जरूरी है कि इस क्षेत्र के लोग ही स्थानीय योजनाओं में सहभागी बनें। लघु उद्योगों के विस्तार से आजीविका के साधन बढ़ने पर इस क्षेत्र के लोगों की भागीदारी यहां के विकास में अधिक बढ़ सकेगी, ऐसी संभावनाएं हैं।

पर्यटन विकास योजनाएं

यह एक सुखद बात है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने हिमालय क्षेत्र की ओर विशेष ध्यान देकर इसे सर्वोत्कृष्ट पर्यटन स्थल बनाने की ओर ध्यान दिया है। ऋषिकेश से लेकर बद्रीनाथ तक और अल्मोड़ा-नैनीताल क्षेत्र तक पर्यटन केन्द्रों का जाल फैला दिया गया है। पर्यटन गृह और पर्यटक आवासों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। पर्वतीय सड़कों को अधिक सुरक्षित और विस्तीर्ण बनाया जा रहा है। एक समय था जब बद्रीनाथ मन्दिर तक किसी वाहन द्वारा पहुंचना संभव नहीं था लेकिन अब ठीक मन्दिर के स्थल तक सड़क बनने के कारण वाहन पहुंचना संभव हो गया है।

किन्तु अभी पर्यटन विकास की महती आवश्यकता है। पर्यटन सुविधाओं के प्रचार की भी आवश्यकता अनुभव की जा रही हैं। प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों और विख्यात पूजा स्थलों के जीर्णोद्धार की भी जरूरत है ताकि पर्यटक इन के प्रति आकृष्ट हो सकें।

इसमें सन्देह नहीं कि हिमालय क्षेत्र में विश्व का सबसे बड़ा पर्यटन केन्द्र बनने की क्षमता है। किन्तु इस क्षेत्र के लोगों में इस विषय में भारी विवाद चल रहा है कि इसे विदेशी मुद्रा कमाने के लिए पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जाए अथवा नहीं। जहां एक बड़े वर्ग का कहना है कि इसे स्विटजरलैंड जैसा विकसित पर्यटन क्षेत्र बनाया जाए, वहीं दूसरे बहुत बड़े वर्ग का यह कहना है कि इसे ऐसा शांत, सुरम्य तीर्थ स्थल ही रहने दिया जाए, जहां साधक और शान्ति के इच्छुक आकर आत्मशांति प्राप्त कर सकें। ये लोग हिमालय के पर्यटन विकास में सांस्कृतिक प्रदूषण का खतरा अनुभव करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

परन्तु एक पक्ष यह है कि हमें इस क्षेत्र के लोगों को आधुनिक सुविधाओं से वंचित रखने का क्या अधिकार है? इसे पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करके क्यों न हम उन्हें धन-साधन और रोजगार के अवसर प्रदान करें।

मध्यमार्गी लोगों का कहना है कि भारत के संदर्भ में पर्यटन विकास किया जा सकता है लेकिन स्थानीय संपदा पर आधारित लघु उद्योग स्थापित कर यहां के लोगों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न किये जा सकते हैं।

स्थानीय लोगों के विकास की आवश्यकता में किसी को मतभेद नहीं है। और यह भी सच है कि विकास की प्रक्रिया बहस का विषय हो सकती है किन्तु यह निर्विवाद है कि हिमालय के विकास के लिए एक शीघ्रगामी योजना की जरूरत है। इस संदर्भ में एक हिमालय आयोग बनाने की बात पर विभिन्न क्षेत्रों में गंभीरता से विचार किया जा रहा है। इस रचनात्मक पहल से निश्चय ही विकासहीनता से उपजे असन्तोष के स्वर शांत हो सकेंगे।

हिमालय का महत्त्व इसी से समझा जा सकता है कि १९८३ में संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय और कुछ अन्य संस्थाओं ने गंगा और हिमालय पर आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के प्रस्ताव में इसके महत्त्व को उजागर किया था। इससे स्पष्ट है कि हिमालय भारत का ही नहीं, विश्व की श्रद्धा का केन्द्र है। ★

जनज्ञान के मूल्यों में वृद्धि क्यों

जैसा आपको सूचित किया जा चुका है, मई १९८९ से जनज्ञान मासिक का वार्षिक शुल्क चालीस रुपये और एक प्रति का मूल्य चार रुपये कर दिया हैं। इसके लिए हमने तीन महीने पूर्व ही सूचना दे दी थी।

पिछले एक वर्ष में कागज का मूल्य अनेक बार बढ़ा है। इसी कारण हमें मूल्य बढ़ाना पड़ा। आपने पत्र-पत्रिकायें तो इस बीच कई बार मूल्य बढ़ा चुकी हैं।

पूर्ण आशा ही नहीं, अपितु विश्वास भी है कि आप हमारी विवशताओं को समझते हुए हमें यथापूर्व सहयोग देते रहेंगे। हम अपनी ओर से जनज्ञान को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए पूर्णतः प्रयत्न शील है। —राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डी.ए.वी. संस्थाओं में संस्कृत और संस्कृति की उपेक्षा न हो

—डॉ० प्रशान्त वेदालंकार

डी.ए.वी. संस्थाओं की शिक्षा पद्धति कैसी हो, इस सम्बन्ध में प्रारम्भ से ही मतभेद रहे हैं—संचालकों में ही नहीं, अभिभावकों और आम जनता में भी।

सुयोग्य लेखक ने इस विषय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विशद प्रकाश डाला हैं। एक पठनीय लेख।

८ नवम्बर १८८३ को महर्षि दयानन्द की स्मृति में दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक स्कूल और कॉलेज की स्थापना का निर्णय लिया गया। इसका उद्देश्य महर्षि के सिद्धान्तों को शिक्षण के माध्यम से क्रियान्वित करना था।

उस समय के नेता यह निरन्तर अनुभव करते रहे थे कि अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी साहित्य के कारण भारत में शिक्षित लोगों का एक ऐसा वर्ग उत्पन्न हो गया है, जो सर्वसाधारण जनता से भिन्न है। ऐसी भाषाओं द्वारा उनमें परस्पर सम्पर्क व मेल होने में सहायता मिलेगी। यदि शिक्षित व्यक्ति अपने देश की भाषा तथा साहित्य का भी समुचित ज्ञान प्राप्त कर लें, तो सर्वसाधारण जनता से उनकी वह दूरी कम हो जाएगी, जो अंग्रेजी के कारण अब निरन्तर बढ़ती जा रही है।

धन के लिए पहली सार्वजनिक अपील २३ दिसम्बर १८८३ को प्रकाशित की गई थी, जिसमें कहा गया कि आर्यसमाज ने बहुत विचार तथा विमर्श के पश्चात् यह तजवीज सोची है कि उस महात्मा तथा ब्रह्मर्षि के स्मारक के रूप में एक ऐसा महाविद्यालय अर्थात् कालेज बनाया जाए, जिसमें संस्कृत भाषा का उच्च कक्षा तक अध्ययन हो और वेद तथा वेदविद्या के ग्रन्थ भी पढ़ाये जाएं।

रजिस्टर्ड कराए गये स्मरण-पत्र में सोसायटी के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये थे— (क) हिन्दी साहित्य के अध्ययन को प्रोत्साहित,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्नत तथा प्रचलित करना, (ख) प्राचीन संस्कृत साहित्य और वेदों के अध्ययन को प्रोत्साहित, उन्नत तथा प्रचलित करना।

२४ अप्रैल, १८८६ की बैठक में प्रस्तावित दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक स्कूल के लिए जो पाठविधि निर्धारित की गई, उसकी कुछ उल्लेखनीय बातें निम्न-लिखित थीं—

राय मूलराज ने प्रस्ताव किया कि इस शिक्षण संस्था के प्राइमरी विभाग में शिक्षण का माध्यम हिन्दी भाषा हो। लाला ईश्वरदास ने प्रस्ताव का समर्थन किया और प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

दयानन्द ऐंग्लो- वैदिक स्कूल और कॉलेज में सस्कृत और वेद-वेदांगों की शिक्षा को कितना स्थान दिया जाये, इस प्रश्न पर उसके संचालकों में मतभेद अवश्य उत्पन्न हो गये। आर्य जनता में इस संस्था के लिए जो अत्यधिक उत्साह था, और न केवल सम्पन्न आर्य सज्जन ही, अपितु साधारण आर्थिक स्थिति के आर्य लोग भी जो उसके लिए उदारतापूर्वक धन प्रदान कर रहे थे, उसका कारण यह था कि उनकी दृष्टि में इसके द्वारा संस्कृत-वेद, वेदांगों तथा प्राचीन शास्त्रों के पठन-पाठन की व्यवस्था की जानी थी।

पर डी.ए-वी. कालेज के सब संस्थापक एवं संचालक स्वीकार नहीं करते थे कि इस संस्था की स्थापना केवल संस्कृत तथा वेदशास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन के लिए की गई है। वे एक ऐसी शिक्षण-संस्था की स्थापना के पक्षपाती थे, जो सरकारी तथा ईसाई शिक्षणालयों में दी जाती थी, पर साथ ही जहाँ संस्कृत, हिन्दी और धर्मशास्त्रों की भी शिक्षा दी जाये, और जिसका वातावरण आर्य संस्कृति तथा सदाचरण के मन्तव्यों के अनुरूप हो। उनका कथन था कि इस संस्था के नाम में जो 'ऐंग्लो' और 'वैदिक' विशेषण प्रयुक्त किये गये हैं, उनमें ऐंग्लो शब्द प्रचलित आधुनिक शिक्षा का परिचायक है और वैदिक शब्द प्राचीन आर्य धर्म, सभ्यता और संस्कृति के पुनः स्थापना के लक्ष्य की ओर संकेत करता है। पर प्रश्न यह था कि डी.ए-वी. कॉलेज में कितना स्थान 'ऐंग्लो' को प्राप्त हो और कितना 'वैदिक' को।

जो लोग डी.ए-वी. कालेज में संस्कृत तथा वेदशास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को प्रमुख स्थान देने के पक्ष में थे, उनके नेता पण्डित गुरुदत्त थे। कहा करते थे कि "कितना अच्छा हो, यदि मैं समस्त विदेशी शिक्षा को पूर्णतया भूल जाऊं तथा केवल विशुद्ध संस्कृतज्ञ बन सकूं, क्योंकि जो बात अंग्रेजी ग्रंथों के सहस्रों पृष्ठों में मिलती है, वह वेद के एक मन्त्र अथवा ऋषियों के एक सूत्र में मिल जाती है। मिल की समस्त फिलासफी न्याय दर्शन के दो सूत्रों की व्याख्या ही होती है।" उनका मत था कि "यद्यपि पाश्चात्य विज्ञान अच्छा है और इसके द्वारा विविध कलाओं का आविष्कार हुआ है, पर वैशेषिक दर्शन के समक्ष यह अभी कुछ भी नहीं है।" उनका यह भी कथन था कि इस समय पृथ्वी पर ऋषि कणाद सदृश पदार्थ विद्या का ज्ञाता कोई नहीं है। इन्हीं विचारों के कारण पण्डित गुरुदत्त का यह कथन था कि संस्कृत की और अधिक ध्यान देना चाहिये, चाहे इसके लिए अंग्रेजी की पढ़ाई कम भी क्यों न करनी पड़े। लाहौर आर्य समाज के वार्षिकोत्सवों पर डी.ए-वी. कालेज के लिए धन की अपील करते हुए वे यही कहते थे कि संस्था संस्कृत की शिक्षा के लिए स्थापित की गई है।

२१ जनवरी, सन् १८८६ के सोसायटी के वार्षिक अधिवेशन में गुरुदत्त जी ने सस्कृत, हिन्दी और वेदशास्त्रों के अध्यापन की एक विस्तृत 'योजना प्रस्तुत की, जिसके अनुसार डी.ए.वी. स्कूल के सब विद्यार्थियों के लिए चौथी कक्षा से आर्य भाषा (हिन्दी) और संस्कृत का पढ़ना अनिवार्य किये जाने की बात प्रस्तावित की गई थी, स्कूल की पाठ विधि में पाणिनि की अष्टाध्यायी, सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका को भी रखने का प्रस्ताव था। लाला रलाराम का यह भी प्रस्ताव था कि डी.ए.वी. शिक्षण-संस्था के साथ एक वैदिक पुस्तकालय की भी स्थापना की जाये।

डी.ए.वी. सोसायटी के लिए यह सम्भव नहीं था कि आर्यसमाज की इस शिक्षण-संस्था में संस्कृत तथा वेदशास्त्रों की पढ़ाई के प्रश्न की उपेक्षा कर सके। इसीलिए कालेज की कमेटी ने संस्कृत की शिक्षा के सम्बन्ध में विचार करने के प्रयोजन से एक उपसमिति की नियुक्ति की, और पण्डित गुरुदत्त को उसका संयोजक बनाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं० गुरुदत्त को इस बात का हार्दिक दुःख था कि डी०ए-वी० स्कूल में संस्कृत की पढ़ाई के लिए उस लघुकौमुदी का प्रयोग हो रहा था, जिसकी महर्षि दयानन्द ने निन्दा की थी। वे चाहते थे कि डी०ए-वी० स्कूल तथा कालेज में संस्कृत के लिए अष्टाध्यायी और महाभाष्य आश्रय लिया जाये। सन् १८८६ में लाहौर आर्यसमाज से वार्षिकोत्सव के अवसर पर कालेज कमेटी की जो बैठक हुई, उसमें लाला (महात्मा) हंसराज ने यह सुझाव प्रस्तुत किया कि अष्टाध्यायी को सम्मुख रखकर संस्कृत व्याकरण की एक ऐसी पाठविधि तैयार की जाये, जो लघुकौमुदी के समान ही सुबोध हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित वेदांगप्रकाश में अष्टाध्यायी के सूत्रों की जो व्याख्या हिन्दी में की गई है, उसके आधार पर व्याकरण की ऐसी पाठ्य-पुस्तकें लिखी जाएं, जिन्हे डी०ए-वी० स्कूल की मिडिल तथा हाई स्कूल कक्षाओं में संस्कृत के सन्दर्भों को संकलित कर स्कूल की विविध कक्षाओं में पढ़ाया जाये। महात्मा हंसराज का यह सुझाव बहुत क्रियात्मक था। इसके द्वारा संस्कृत व्याकरण की शिक्षा के लिए लघुकौमुदी को पढ़ाने की आवश्यकता नहीं रह जाती थी और महर्षि-विरचित वेदांगप्रकाश के आधार पर अष्टाध्यायी की शिक्षा दी जा सकती थी। साथ ही संस्कृत साहित्य की पढ़ाई के लिए संस्कृत की नई पुस्तकों के स्थान पर मनुस्मृति सदृश प्राचीन ग्रन्थों का प्रयोग एक ऐसी बात थी, जिससे पण्डित गुरुदत्त सन्तोष अनुभव करते थे। महात्मा हंसराज के इस प्रस्ताव के स्वीकृत हो जाने पर सन् १८९० में डी०ए-वी० स्कूल की आठवीं कक्षा में अष्टाध्यायी की पढ़ाई को अनिवार्य कर दिया गया।

यहां यह उल्लेखनीय है कि कुछ लोग डी०ए-वी० संस्थाओं को आवश्यकता से अधिक आधुनिक बनाये रखने के पक्ष में थे। लाला परमानन्द ने यह प्रस्ताव रखा कि बजट को तब तक स्वीकृत न किया जाये, जब तक कि हिन्दी, प्राचीन संस्कृत तथा वेदों के अध्ययन को प्रोत्साहित करने की बात बजट में सम्मिलित न कर ली जाये। इस प्रस्ताव के पक्ष में केवल दो वोट आये, जबकि ३३ सदस्यों ने इसके विरोध में मत दिये। पर इससे संस्कृत के पक्षपाती निराश नहीं हुए। उन्होंने अपने प्रयत्न जारी रखे, जिनके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिणामस्वरूप पहली जून, सन् १८९० को सोसायटी की बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हो गया—डी०ए-वी० सोसायटी की इच्छा है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका (हिन्दी भाग) के भाग व भागों को मैनेजिंग कमेटी द्वारा इस संस्था की प्राइमरी और मिडिल कक्षाओं के पाठ्यक्रम में, परिस्थितियों को दृष्टि में रखकर सम्मिलित किया जाये और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के संस्कृत भाग को इस संस्था के उच्चतर एवं कालेज भागों के पाठ्यक्रम में, परिस्थितियों के अनुसार, मैनेजिंग कमेटी द्वारा सम्मिलित कर लिया जाये। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रस्ताव द्वारा जो व्यवस्था की गई थी, उसके परिणामस्वरूप डी०ए-वी० स्कूल और कालेज में सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की पढ़ाई को समुचित स्थान प्राप्त हो जाता था और सर्वसाधारण विद्यार्थियों के लिए इसे पर्याप्त समझा जा सकता था। पर पण्डित गुरुदत्त के साथी व अनुयायी इससे भी पूर्णतया सन्तुष्ट नहीं हुए और उन्होंने डी०ए-वी० कालेज में संस्कृत को और भी अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कराने के अपने प्रयत्न में कोई कमी नहीं आने दी।

६ मार्च १८९० को पंडित गुरुदत्त का देहावसान हो गया। अब उनका स्थान महात्मा मुंशीराम ने लिया। लाला मुंशीराम जालन्धर आर्यसमाज के प्रमुख नेता और उसी की ओर से डी०ए०-वी० सोसायटी के सदस्य थे, उनके नेतृत्व में संस्कृत और वेदशास्त्रों की शिक्षा को प्रमुख स्थान दिलाने के पक्षपाती लोगों में नवीन उत्साह का संचार हुआ। पहली मई १८९१ को उन्होंने डी०ए-वी० कालेज सोसायटी की सेवा में विचारार्थ कुछ प्रस्ताव भेजे, जिनमें मुख्य ये थे—(१) डी०ए-वी० कालेज में वैदिक विभाग के नाम से एक पृथक् विभाग की स्थापना की जाये, जिसमें वेदों, वेदांगों और और उपवेदों का उस पद्धति से शिक्षा दी जाये, जिसका प्रतिपादन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में किया है। (२) वेद विभाग को दो भागों में विभक्त किया जाये, (निम्न भाग और उच्च भाग) निम्न भाग में वेदांगों और उपांगों की पढ़ाई हो और उच्च भाग में वेदों और उपवेदों की। यह मानकर कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्तमान स्कूल डी.ए-वी. में विद्यार्थी अष्टाध्यायी की पढ़ाई पूरी कर चुके होंगे, वैदिक विभाग के निम्न भाग में पाठ्यक्रम इस प्रकार रहे—१८ महीनों में महाभाष्य का अध्ययन, अगले १८ महीनों में निरुक्त, निघण्टु और कात्यायन कोष का अध्ययन, अगले १८ महीनों में पिंगल सूत्र, काव्यालंकार सूत्र, मनुस्मृति और रामायण तथा महाभारत के कतिपय अंशों का अध्ययन, अगले १२ महीनों में ज्योतिष् और गणित का अध्ययन और अन्त के २५ महीनों में जैमिनि की पूर्वमीमांसा, कणाद के वैशेषिक दर्शन, गौतम के न्याय दर्शन, पातंजल योग, कपिल के सांख्य, व्यास के वेदांत तथा दस उपनिषदों का अध्ययन। जब वेद विभाग के निम्न भाग की पढ़ाई की समुचित व्यवस्था हो जाये और समुचित रूप से उसका अध्ययन प्रारम्भ हो जाये, तो उच्च भाग के पाठ्यक्रम का निर्णय किया जाये।(३) जो विद्यार्थी हाईस्कूल परीक्षा कर चुके हों या किसी यूनिवर्सिटी में उस स्तर तक शिक्षा प्राप्त कर चुके हों, उन्हें वेद विभाग में प्रवेश पाने का अधिकारी माना जाये, बशर्ते कि उन्होंने द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत पढ़ी हो। हाईस्कूल परीक्षा जिन्होंने उत्तीर्ण न की हो या उस स्तर तक की शिक्षा प्राप्त न की हो, ऐसे विद्यार्थियों को वेद विभाग में प्रवेश दिया जा सके, बशर्ते कि वे सम्पूर्ण अष्टाध्यायी पढ़े हुए हों वा संस्कृत व्याकरण में समुचित योग्यता प्राप्त कर चुके हों। (४) डी०ए-वी० शिक्षा-संस्थाओं (स्कूल और कालेज दोनों) में वैदिक धर्मशास्त्र (थियोलोजी) विषय की अनिवार्य रूप से शिक्षा दी जाया करे और मैनेजिंग कमेटी से यह अपेक्षा की जाये कि वह इस निर्णय को अतिशीघ्र क्रियान्वित करे। २६ अप्रैल, १८९० को भी सोसायटी के लिए कुछ प्रस्ताव संस्कृत के पक्षपातियों द्वारा भेजे गये थे, जिनमें वेद-वेदांगों तथा प्राचीन शास्त्रों की शिक्षा को प्रमुख स्थान देने के अतिरिक्त इस बात पर भी जोर दिया गया था कि डी०ए-वी० कालेज के छात्रावास में विद्यार्थियों के जीवन को अनुशासित करने पर जोर दिया जाना चाहिये। आर्यसमाज मन्दिर, लाहौर के समीप से ही भारत सुधार नामक एक पत्रिका प्रकाशित होती थी, जिसमें सोसायटी के बहुसंख्यक सदस्यों के मत का समर्थन किया जाता था। जालन्धर से प्रकाशित होने वाले सद्धर्मप्रचारक में लाला रलाराम और लाला मुन्शीराम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सदृश संस्कृत के पक्षपातियों के विचारों को योग्यतापूर्वक अभिव्यक्त किया जाता था। जुलाई, सन् १८९३ में डी०ए०-वी० कालेज समाचार नामक एक अन्य पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ, जिसके सम्पादक लाला लाजपतराय थे। कुछ मास पश्चात् सितम्बर १८९३ में लाला रलाराम ने वेदाध्ययन प्रेरक नाम से एक पत्र निकालना शुरू किया; जो संस्कृत के पक्षपातियों के मत को योग्यतापूर्वक प्रस्तुत करने में संलग्न था। इस प्रकार अब डी०ए०-वी० कालेज की पाठविधि तथा उसमें संस्कृत और वेदशास्त्रों के स्थान विषय पर सर्वसाधारण आर्य जनता को दोनों पक्षों के विचार जानने का अवसर प्राप्त होने लगा और इसकी सर्वत्र चर्चा होने लग गई। संस्कृत को जो स्थान डी.ए.वी. कालेज एवं स्कूल में दिया गया और उसकी शिक्षा-पद्धति में जिन अनेक नये तत्त्वों का समावेश किया गया था, उनके महत्त्व को लाला लाजपत राय सशक्त रूप से डी.ए.-वी. कालेज समाचार में प्रचारित कर रहे थे। उनका कहना था कि डी.ए.वी. स्कूल की प्रारम्भिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम आर्यभाषा (हिन्दी) को रखा गया है, जो अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है और इसके कारण डी.ए.-वी. स्कूल की शिक्षा-पद्धति ने एक नया रूप प्राप्त कर लिया है। अंग्रेजी और उर्दू की तुलना में हिन्दी को इतनी प्रमुखता देकर डी.ए.-वी. कालेज ने महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के शिक्षा-सम्बन्धी आदर्शों को क्रियान्वित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण पग उठाया है। लाला रलाराम इससे सहमत नहीं थे। उनका मन्तव्य था कि संस्कृत के बिना हिन्दी का विकास नहीं है। संस्कृत ही भारत की प्राचीन साहित्यिक भाषा है और उसी में इस देश के अध्यात्मशास्त्र, विज्ञान, कला एवं नीतिशास्त्र का परम्परागत ज्ञान विद्यमान है। जब तक भारत के विद्यार्थियों के अध्ययन और चिन्तन का माध्यम उनके पूर्वजों की भाषा नहीं बन जाती, उनके मनों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हो सकना असम्भव है। जिस शिक्षा-पद्धति में अंग्रेजी भाषा को प्रमुख स्थान प्राप्त हो, वह विद्यार्थियों को मानसिक रूप से गुलाम बनाये बिना नहीं रह सकती। विदेशी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने के कारण जहां विद्यार्थियों में मौलिकता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का विकास सम्भव नहीं रहता, वहां साथ ही उसमें हीन भावना भी उत्पन्न हो जाती है। संस्कृत का साहित्य बहुत समुन्नत है। उसे पढ़ लेने पर जहां विद्यार्थी ज्ञान-विज्ञान की समुचित शिक्षा प्राप्त कर लेता है, वहां साथ ही राष्ट्रीय गौरव की भावना भी विकसित हो जाती है। अतः महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्मारक के रूप में स्थापित डी.ए.-वी. स्कूल और कालेज में संस्कृत की पढ़ाई को ही सर्वाधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए। लाला रलाराम यह भी स्वीकार नहीं करते थे कि सरकारी यूनिवर्सिटियों द्वारा निर्धारित पाठ्य विषय के साथ-साथ संस्कृत की शिक्षा की अतिरिक्त रूप से व्यवस्था कर देने से उस उद्देश्य की पूर्ति की जा सकती है, जिसे सम्मुख रखकर आर्यसमाज ने डी.ए.-वी. स्कूल व कालेज की स्थापना की है। उनका कहना था कि विद्यार्थी दोहरा बोझ नहीं उठा सकेंगे। उनके लिए यह कदापि सम्भव नहीं होगा कि सरकारी पाठ्य विषयों में भी प्रवीणता प्राप्त कर लें और संस्कृत भाषा तथा वेदशास्त्रों के भी विद्वान् बन जायें। वे इस बात को जोर देकर कहते थे कि पाश्चात्य आधुनिक ज्ञान विज्ञान के लिए सरकारी व अन्य शिक्षणालय विद्यमान हैं। इस शिक्षा के लिए आर्यसमाज को अपने स्कूल व कालेज खोलने की क्या आवश्यकता है। सामान्य शिक्षा की व्यवस्था करना आर्यसमाज का काम नहीं है। वह एक धार्मिक संगठन है, जिसका उद्देश्य धर्म का प्रचार करना है। उसके द्वारा ऐसी शिक्षण-संस्थायें स्थापित की जानी चाहिए, जिनसे धर्म-प्रचार में सहायता मिलती हो या ऐसे विद्वान् तैयार किये जाते हों, जो वेदों और धर्मशास्त्रों के प्रचार की समुचित योग्यता रखते हों। उनका यह भी कहना था कि आर्यसमाज धर्म-प्रचार के अपने प्रधान उद्देश्य के प्रति विमुख होता जा रहा है और उसका ध्यान स्कूल-कालेज खोलने की ओर अधिक है।

बाद में डी.ए.-वी. स्कूल की पाठविधि में ऐसे परिवर्तन किये गये, जिनके परिणामस्वरूप अष्टाध्यायी तथा वेदांगप्रकाश को संस्कृत व्याकरण की शिक्षा के लिए प्रयुक्त किया जाने लगा। इतना ही नहीं, अगस्त, १८९४ में कालेज कमेटी ने यह निर्णय किया कि डी.ए-वी कालेज की हाईस्कूल की कक्षाओं तथा कालेज विभाग में महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदभाष्य के कतिपय अंशों के

(शेष पृष्ठ १०६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आजाद आखिर आजाद ही रहे

—महेश बाग़ी

२३ जुलाई को चन्द्रशेखर आजाद का जन्मदिवस है। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि वे जिस देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर गये, हम उसके नवनिर्माण में प्राणपण से जुट जायें।

शहीद-शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद कहां जन्मे तथा उन्होंने किस तरह क्रांतिकारी गतिविधियां संचालित कीं, इस पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है।

आजाद के क्रांतिकारी साथियों के अनुसार, जो उनकी मृत्यु के बाद तक जीवित रहे तथा जिन्होंने उनकी माताजी की देख-भाल भी की थी, आजाद का जन्म मध्य प्रदेश में हुआ था। उनके पिता पं. सीताराम तिवारी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के ग्राम बदरवा के निवासी थे, किन्तु नौकरी के सिलसिले में वे झाबुआ जिले के ग्राम भाबरा में रहने लगे थे, जहां उन्होंने खुद झोंपड़ी बनाई थी, जिसमें २३ जुलाई १९०६ को आजाद का जन्म हुआ था। आजाद के साथी भगवान्दास माहौर ने तो इस आधार पर उनकी जन्म कुंडली भी बनाई थी।

ग्राम भाबरा में बनी झोंपड़ी में आजाद की माताजी ने अपने जीवन के दुर्दिन भी बिताये। आजाद २७ फरवरी १९३१ को शहीद हो गये थे। उनके बाद उनकी देख-रेख कुछ क्रांतिकारी साथियों ने ही की थी। आज जो नेता भाबरा में मजमा लगाकर श्रद्धांजलियों के घड़ियाली आंसू बहाते हैं, वे सब असहाय जगरानी देवी के पास कभी नहीं फटके।

एक बार यशपाल तथा शिव वर्मा के साथ बातें करते समय आजाद अपने भविष्य के प्रति चिन्तित दिखाई दिये। उन दिनों यह चर्चा थी कि अंग्रेजों द्वारा देश का भार कांग्रेस को सौंप दिया जायेगा। कांग्रेसी नेता अहिंसावादी थे तथा अंग्रेजों से मिलते-जुलते थे, किन्तु क्रांतिकारियों की दशा इसके ठीक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विपरीत थी। अंग्रेज सरकार क्रांतिकारियों को डाकू मानकर उन पर इनाम घोषित किया करती थी और कांग्रेसी उन्हें आतंकवादी तथा फासिस्ट कहते थे। क्रांतिकारियों की सारी गतिविधियां भूमिगत होकर संचालित करनी पड़ती थीं। ऐसे में कांग्रेसियों के हाथ आजादी लगने पर क्रांतिकारी अपनी स्थिति के प्रति चिन्तित थे। तब आजाद ने यशपाल से पूछा कि क्या कांग्रेसियों के हाथ देश की बागडोर आ जाने के बाद भी उन्हें इसी तरह भूमिगत रहना पड़ेगा ? इस पर यशपाल ने कहा, "नहीं, कांग्रेसी हमारे योगदान का कुछ तो मूल्यांकन करेंगे। तुम (आजाद) अच्छे डीलडौल वाले हो, तुम्हें कम से कम थानेदार की नौकरी जरूर मिल जायेगी। थानेदार के रूप में तुम खूब जमोगे भी। रहा सवाल हमारा, तो शिव वर्मा को किसी न किसी स्कूल में मास्टरी मिल जायेगी। मैं भी ऐसा ही कुछ कर लूंगा।"

कांग्रेसियों के हाथ आजादी लगने के बाद यशपाल द्वारा लिखित क्रांति के इतिहास "सिंहावलोकन" में उन्होंने लिखा है कि आजाद सही कहते थे। आजादी के बाद शिव वर्मा को मास्टर पद की नौकरी तक नसीब नहीं हो सकी। मैं तो लिख-लिखकर अपना गुजारा चला रहा हूं।"

आजाद ने सबसे पहले महात्मा गांधी को ही अपना नेता माना था। उन दिनों आजाद काशी में विद्याध्ययन करते थे। वे गांधी जी द्वारा छेड़े गये असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया। न्यायाधीश द्वारा पूछने पर उन्होंने अपना नाम "आजाद", पिता का नाम "स्वाधीनता" और पता "जेलखाना" बताया। उन्हें १५ बेंतों की सजा मिली। हर बेंत पड़ने पर वे "महात्मा गांधी जिन्दाबाद" का नारा लगाते रहे किन्तु आगे चलकर खुद उन्होंने अपने कहे को झुठला दिया। जेलखाने को अपना पता बताने वाले आजाद कभी जेल में नहीं रहे। यहां तक कि काकोरी कांड के बाद उनके सभी साथी पकड़ लिये गये, लेकिन वे आजाद ही रहे। दूसरे, वे महात्मा गांधी के अहिंसा-दर्शन के विरुद्ध हिंसावादी बन गये।

इसका भी कारण था। चौरीचौरा की हिंसात्मक घटना के बाद गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया। इससे अच्छा-खासा आन्दोलन ठप्प

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुआ, जिससे आन्दोलनकारियों को भारी धक्का पहुंचा।
स्वयं गांधी जी के अनुयायी देशबन्धु चितरंजन दास तथा मोतीलाल नेहरू ने भी इसे गलत कदम बताया। ऐसी स्थिति में उग्र विचारधारा वालों का क्या कहना। रामप्रसाद विस्मिल ने अपने साथियों को इकट्ठा कर 'हिन्दुस्तान प्रजातांत्रिक संगठन' की स्थापना की तथा इसके द्वारा क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन किया। आजाद भी इससे जुड़ गये। उन्हीं दिनों अंग्रेज सरकार ने साइमन कमीशन लाने की घोषणा की। ब्रिटेन से चलकर साइमन इसकी घोषणा करने भारत पहुंचा, जिसका विरोध-प्रदर्शन करते समय अंग्रेज सार्जेन्ट सॉण्डर्स ने लाला लाजपतराय पर तीव्र प्रहार किया, जिससे कुछ ही दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गई। इस वरिष्ठ कांग्रेसी नेता की हत्या पर गांधीजी के नेतृत्व में कांग्रेसियों ने विरोध-प्रदर्शन भी किया। क्रांतिकारी दल ने इसका बदला लेने की ठानी और आजाद ने सांडर्स की हत्या कर दी। इसके दूसरे दिन देश भर में पर्चे वितरित किये गये, जिनमें लिखा था कि एक व्यक्ति का खून बहाने का हमें बेहद अफसोस है, किन्तु यह व्यक्ति उस व्यवस्था का अंग था, जिससे सारा देश आक्रांत है तथा जिसने हमारे देश के वरिष्ठ नेता की हत्या की है। इसलिए इसकी हत्या करना जरूरी था। हम मानव द्वारा मानव का खून बहाये जाने के सख्त खिलाफ हैं, किन्तु आजादी के लिए की जा रही क्रांति में कुछ न कुछ रक्तपात आवश्यक है।

लालाजी की मौत का बदला लेने के लिए क्रांतिकारियों के इस कदम पर जब गांधीजी से राय चाही गई तो वे चुप रहे, क्योंकि लालाजी उनके दल के थे तथा दूसरे गरम दल के लोगों ने इसका हिसाब चुकाया था। गांधीजी इसे अपने अहिंसा-दर्शन के कारण उचित नहीं कह सके। लेकिन अन्दर ही अन्दर वे खुश थे, इसलिए चुप भी रहे। इन्हीं क्रांतिकारियों की अन्य गतिविधियाँ गांधीजी के लिए असहनीय थीं। वे कांग्रेस के मंच से अंग्रेज सरकार की कम तथा क्रान्तिकारियों की अधिक आलोचना करते थे। उन्हें आतंकवादी कहते थे। इस पर क्रांतिकारियों की ओर से उन्हें पत्र लिखा गया कि आप हमें सहयोग भले ही न दें, पर कम से कम हमारी आलोचना तो न करें। आपकी तरह हमारा लक्ष्य भी आजादी पाना है किन्तु हम लड़कर जीतना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भीख मांगने से अच्छा समझते हैं। इस अपील का भी गांधीजी पर कोई असर नहीं पड़ा और वे अपना विरोध प्रदर्शित करते रहे।

यहां यह भी स्पष्ट कर देना जरूरी है कि क्रांतिकारी कोई सिरफिरे नहीं थे। उनका अपना आदर्श, सिद्धांत तथा विचारधारा थी। काकोरी कांड के बाद जब बहुत-से क्रान्तिकारी गिरफ्तार हो गये, तब चन्द्रशेखर आजाद ने फिर से दल का गठन किया। भगतसिंह, भगवतीचरण वोहरा, विश्वनाथ वैशम्पायन, शिव वर्मा आदि साथियों सहित क्रांति संबंधी गतिविधियां प्रारम्भ की गईं। तब क्रांतिकारियों ने अपना उद्देश्य स्पष्ट करने के लिए अपने संठगन के नाम में 'समाजवादी' शब्द भी जोड़ा। इस प्रकार हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संगठन बना, जिसके नेता चन्द्रशेखर आजाद रहे। इन गतिविधियों से अंग्रेज तो आतंकित थे मगर उससे ज्यादा कांग्रेसी नेता चिन्तित थे कि कहीं ये क्रांतिकारी उनसे ज्यादा लोकप्रिय न हो जायें। इस कारण वे उनकी खुलेआम आलोचना करते थे। ऐसी स्थिति में भूमिगत आतंकवादी जनता के सामने अपना दृष्टिकोण कैसे स्पष्ट करते। इसलिए तय हुआ कि असैम्बली में बम का धमाका कर गिरफ्तारी दी जाये। इस पर अदालत में मुकद्दमा चलेगा, जहां अपनी विचारधारा प्रकट करने का मौका मिलेगा। अदालत में दिये गये बयान अखबारों के माध्यम से सारे देश में पहुंच जायेंगे। इसके लिए भगतसिंह तथा सुखदेव को तैयार किया गया।

असैम्बली बम कांड में भगतसिंह तथा सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई। इन्हें फांसी से बचाने के लिए आजाद जवाहरलाल नेहरू से मिले कि वे अंग्रेज सरकार पर दबाव डालें कि फांसी की सजा रद्द हो, किन्तु उन्होंने आजाद तथा अन्य क्रांतिकारियों को 'फासिस्ट' कहकर सहयोग देंने से इनकार कर दिया। 'फासिस्ट' शब्द आजाद को बहुत बुरा लगा। तब तो अन्य साथियों को महात्मा गांधी के पास भेजा गया। उन्हीं दिनों गांधी-अरविन वार्त्ता होने वाली थी। क्रांतिकारी चाहते थे कि गांधीजी यह वार्त्ता इसी शर्त पर करें कि क्रांतिकारियों की फांसी की सजा रद्द हो। किन्तु गांधीजी ने स्पष्ट कहा कि वे हिंसा करने वालों की तरफदारी नहीं कर सकते।

अन्ततः लार्ड अरविन से वार्त्ता में गांधी जी ने फांसी का मुद्दा नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उठाया। इस स्थिति से आजाद बहुत दुःखी हुए। उन्होंने स्वयं भगतसिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को जेल से छुड़ाने की योजना बनाई, किन्तु स्थितियों की जटिलता के कारण वे ऐसा नहीं कर सके।

आजाद यों तो ब्रह्मचर्य का पालन करते थे, किन्तु एक बार उन्होंने यशपाल से अपनी शादी का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि हमारे सारे ठिकानों पर अंग्रेजों का कब्जा हो जाये तथा पुलिस हमारे पीछे रहे, तब मैं और वह (पत्नी) एक-एक बन्दूक तथा कारतूस का थैला लिये सीमा पार चले जायें। वह बन्दूक भर-भर कर देती रहे और मैं दनादन चलाता जाऊं। एक ब्रह्मचारी क्रांतिकारी द्वारा अपनी पत्नी का सहयोग लिये जाने की यह कल्पना आजाद के व्यक्तित्व और उनकी विचारधारा को स्पष्ट करती है। वे अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में भी निश्चिन्त थे। उन्होंने कहा था कि गिरफ्तार होकर अदालत में भाषणवाजी और बंदर की तरह हाथ नचाना मुझे नहीं आता। वे अपनी पिस्तौल को चूम कर कहते, "जब तक गोली है, चलाता जाऊंगा और जब बचने का कोई चारा नहीं रहेगा, तब आखिरी गोली अपनी कनपटी में मार लूंगा।" अन्ततः उन्होंने यही किया भी। २७ फरवरी १९३१ को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में वे अंग्रेजों से घिर गए। जब तक गोलियां थीं, चलाते रहे और आखिरी गोली अपनी कनपटी में मार कर शहीद हो गये।

आजाद के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि वे जिस देश के लिए अपने प्राण न्योछावर कर गये, हम उसके नव-निर्माण में प्राण-पण से जुट जाएं। ★

परमात्मा आपको और अधिक शक्ति दे

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय मासिक जनज्ञान की प्रत्येक रचना रूचिपूर्वक पढ़ता हूं। यह पत्रिका हिन्दू समाज की रक्षक और विधर्मियों को निर्भीकता से चुनौती देने वाली है। आपके सम्पादकीय विचारोत्तेजक, राष्ट्रीयता के प्रतिपादक और तुष्टीकरण की सरकारी नीति की समालोचना करने वाले होते हैं। आपकी पत्रिका दिवंगत महात्मा वेदभिक्षु जी के स्वप्नों को साकार करने के लिए प्रयत्नशील है। परमात्मा आपको और अधिक शक्ति दे।

—ओमप्रकाश गुप्त, बम्बई-४०००६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्मनिरपेक्षता ने आक्रामक अल्पसंख्यकवाद को जन्म दिया ?

—डा. विद्यासा

कहा तो यह जाता है कि जवाहरलालजी नेहरू न्याययु समाज की स्थापना की अपेक्षा अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लि अधिक चिन्तित थे। लेकिन वास्तविकता यह है कि वे हिन्दू-विरो हो गये थे और हिन्दुत्व से सम्बन्धित हर बात का विरोध करते थे

आम विश्वास है कि अल्पसंख्यकों की समस्या प्रथम विश्वयुद्ध का परिण है, जब यूरोप में नये राज्यों का गठन हुआ, जिसके फलस्वरूप प जिन समुदायों का बहुमत था, वे नये राज्यों में रातों-रात अल्पसंख्यक हो ग उदाहरणार्थ पौलैण्ड में जर्मन और चैकोस्लोवाकिया में आस्ट्रियन। शा संधियों और लीग आफ नेशन्स के घोषणा-पत्र में उनके हितों की रक्षा क वाले कुछ सिद्धान्त प्रतिपादित करके समस्या का समाधान करने का प्र किया गया।

इन सन्धियों और घोषणाओं में अल्पसंख्यकों की चर्चा इन शब्दों में गई कि "वे एक ऐसे देश के निवासी हैं, जो नस्ल, भाषा और मजहब आबादी की बहुसंख्या से भिन्न हैं।"

यूरोपियन अल्पसंख्यकों के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रकार के अल्पसं पिछले सैकड़ों वर्षों में पैदा हुए—

१. शिकारियों और पाषाणयुग के किसानों की आदिवासी आब जो उत्तर और दक्षिण अमेरिका, साइबेरिया, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अ के कुछ भागों में अधिकाधिक और बेहतर टैक्नॉलॉजी से सुसज्जित थे।

२. अटलांटिक दास-व्यापार के काल में अफ्रीकनों का नये विश्व स्थानान्तरण। आदिवासियों के विपरीत अफ्रीकन लौहयुग के लोग थे तीन शताब्दियों में लगातार सम्पर्क से न केवल जीवित रहे, अपितु बढ़े।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे उत्तर, मध्य और दक्षिण अमेरिका के अधिकतर देशों में 'लाभ से वंचित अल्पसंख्यक' हैं।

३. स्थानीय तौर पर दुर्लभ श्रमिकों अथवा दक्ष टैक्नीकल कर्मचारियों की कुछ किस्मों की आवश्यकता के फलस्वरूप जन्मे अल्पसंख्यक। ये भारतीय खेतिहर वे हैं, जो बीसवीं शताब्दी की मध्यावधि में मॉरीशस, नेटाल, कैरिबियन, गुयाना, फिजी आदि उपनिवेशों में जा बसे।

४. १९५० और १९६० के दशक में औद्योगिक विश्व में त्वरित आर्थिक विकास के कारण कुछ निर्धनतम देशों से समृद्धतम देशों को सामूहिक स्थानांतरण। इनमें दक्ष, अर्धदक्ष और अदक्ष कर्मचारी भी सम्मिलित हैं।

भारत में अल्पसंख्यक

भारत में अल्पसंख्यकों का मामला सर्वथा भिन्न है और उपरिलिखित श्रेणियों में से किसी में भी नहीं आता। भारत के मुख्य अल्पसंख्यक हैं—मुसलमान, ईसाई और सिख। इनके अतिरिक्त पारसी हैं। पारसियों ने सैकड़ों वर्ष पूर्व अपनी और अपने मजहब जरदुश्त की रक्षा के लिए फारस (अब ईरान) से निष्क्रमण कर भारत में शरण ली थी। सिख मूल रूप से भारतीय हैं। इतना ही नहीं, सिख मत को हिन्दू धर्म का हिस्सा माना जाता है यद्यपि पिछले ६० वर्षों में वे हिन्दुओं से दूर जा रहे हैं और अपनी अलग पहचान पर जोर दे रहे हैं।

दो अन्य अल्पसंख्यक मुसलमान और ईसाई भारत में मुस्लिम और ईसाई शासनों की पैदावार हैं। दोनों अल्पसंख्यक कट्टर मजहबी हैं और अनेक कारणों से इन मजहबों में हिन्दुओं के बलपूर्वक लाये जाने के फलस्वरूप अस्तित्व में आये हैं। यहां इन कारणों की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं। कुछ मामलों में उर्दू और अंग्रेजी सदृश अलग भाषा का भी प्रश्न उठता है, विशेषकर जब इस बात पर विचार करना हो कि कुछ क्षेत्रों में उनका बहुत प्रचलन है।

एक ओर मुसलमानों, ईसाइयों और दूसरी ओर हिन्दुओं में अन्तर का मुख्य कारण इसलिए पैदा हुआ कि मजहब की तबदीली पर संस्कृति (शिष्टा-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चार, पसन्द और बौद्धिक विकास) में परिवर्तन हुआ। विवाद तब खड़ा हो है, जब इन धर्मान्तरितों में से अधिकतर अन्यत्र अपने आपको यदि मुसलमा का हिस्सा नहीं तो उनके नजदीक मानते हैं, यद्यपि मुसलमानों से उनकी ब कम बातें सांझी हैं। इसके बावजूद अनेक ईसाई धर्मान्तरित भारतीय संस्क और इतिहास से पूर्णतः अलग नहीं। उनमें से अनेकों की वेशभूषा और भा वही है। वे संस्कृत नाम रखते हैं और अपने आपको समाज का हिस्स समझते हैं।

भारत में अल्पसंख्यकों के बारे में किसी भी बहस में जहां देश के विभि धार्मिक गुटों में सामान्य विरासत, संस्कृति और इतिहास पर जोर दिया जात है, वहां ब्रिटिश शासकों को इस बात के लिए दोषी ठहराया जाता है कि अपने शासन को स्थायी बनाने के लिए हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डाल थे। फलस्वरूप भारत और पाकिस्तान के रूप में देश के विभाजन को उ नीति का परिणाम समझा जाता है। इसके बावजूद वे इस्लाम के अन्तर्राष्ट्री चरित्र के बुनियादी तथ्य की उपेक्षा करते हैं—इस बात की भी उपेक्षा कर है कि ये केवल धार्मिक विश्वासों में अन्तर के कारण अपने पड़ोसियों भिन्न विचार अपनाते जाते हैं।

धर्म के नाम पर एकता ने मुसलमानों और ईसाइयों को इस बात प विश्वास करने को विवश किया है कि वे अलग वर्गों के लोग है और पृथ राष्ट्र हैं। यही तथाकथित दो राष्ट्रों की थ्योरी के आधार पर पाकिस्तान क स्थापना का मूल कारण था।

यहां यह याद दिलाना उपयोगी होगा कि देश में सन् १९४६ का आम चुना अखण्ड भारत और विभाजित भारत के प्रश्न पर लड़ा गया था। जबकि हिन्दुओं ने भारी बहुमत से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का समर्थन किया, क्योंकि महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू ने अखण्ड भारत का समर्थन किया था ९७ प्रतिशत मुसलमानों ने विशेषतः हिन्दु बहुसंख्यक क्षेत्रों और बंगाल में मुस्लिम लीग का समर्थन किया, जो पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी भारत में मुसल मानों के लिए पृथक् 'होमलैंड' चाहती थी। उसका दावा था कि मुसलमा सब मामलों में हिन्दुओं से अलग है—संस्कृति, भाषा, धर्म और इतिहास में।

जब कांग्रेसी नेताओं ने अपने पिछले वादों के विपरीत पाकिस्तान मान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तब उन्होंने केवल अपनी असहायता प्रकट की, लेकिन साथ ही हिन्दुओं को आश्वासन दिया कि इस कार्य द्वारा उन्होंने हमेशा के लिए मुस्लिम पृथक्ता की समस्या हल कर दी है। उन्होंने अखण्ड भारत के समर्थकों को यह भी आश्वासन दिया कि अब शेष भारत में जो लोग रह रहे हैं, उनका विश्वास सांझी संस्कृति में है। लेकिन बाद की घटनाओं से पता चल गया कि वे लोग कितने अदूरदर्शी थे।

सन् १९४७ के बाद का दृश्य

ऊपर की पृष्ठभूमि में यह आम विश्वास था कि भारत में अल्पसंख्यकों की समस्या अतीत की बात हो गई है और अब भारत एक नया रास्ता अपना सकता है और राष्ट्र को सुदृढ़ और क्रान्तिधर्मी बना सकता है, लेकिन ऐसा नहीं होना था। यही कारण है कि हम अभी भी भारत में अल्पसंख्यकों की समस्या पर विचार कर रहे हैं।

जब मजहब के आधार पर पाकिस्तान की स्थापना कर दी गई, तब उसकी तार्किक परिणति यह होनी चाहिये थी कि भारत को हिन्दू राज्य घोषित कर दिया जाता। ऐसा करने की बजाय भारत के नये शासकों ने भारत को एक 'धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रीय राज्य' घोषित कर दिया, जहां इसके सब निवासी धर्म, भाषा आदि के भेदभाव दूरकर जीवन के सब विभागों में समान अधिकारों का लाभ उठाते हैं। इनमें सरकारी दफ्तर और सरकार व राज्य में उच्चतम पद प्राप्त करने के विषय भी सम्मिलित हैं।

इसके अतिरिक्त अल्पसंख्यकों को विशेष संरक्षण दिये गये, ताकि वे शिक्षा के मामले में अपने अल्पसंख्यक चरित्र और विशेषाधिकारों की रक्षा कर सकें। बहुत कम लोगों ने यह जानना चाहा कि समान अधिकार और धर्म के नाम पर अल्पसंख्यकों को विशेषाधिकार परस्पर विरोधी बातें हैं और इसी कारण हम आज के टकराव से दो-चार हो रहे हैं। इस सबसे हमने छिपे तौर पर ही नहीं, प्रकट रूप में भी मान लिया कि अल्पसंख्यकों को उनके उचित अधिकार नहीं दिये जा रहे और इस कारण उन्हें राजकीय संरक्षण की आवश्यकता है। सच तो यह है कि भारत में अल्पसंख्यकों को जो विशेषाधिकार प्राप्त हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके कारण उनकी संख्या बढ़ रही है। इसका एक उदाहरण यह है कि रामकृष्ण मिशन ने दावा किया कि यह हिन्दू धर्म से अलग है और उसका यह दावा मान लिया गया। इस उदाहरण से पता चलता है कि अल्पसंख्यकों को विशेषाधिकार देने का भारत की एकता पर क्या प्रभाव पड़ा है।

यह बात याद रखी जानी चाहिये कि हमारे नेता "विविधता में एकता" का जो नारा अक्सर बुलन्द करते है, वह विचारों की स्पष्टता के अभाव का सूचक है और देश में पृथक्तावाद को प्रोत्साहित करता है। इससे अधिक दुर्भाग्य की बात नहीं हो सकती कि देश के धर्मनिरपेक्ष चरित्र में विश्वास करने वाले सार्वजनिक भाषणों में कहते हैं कि हमारे देश में हिन्दू, मुसलमान, सिख और बौद्ध रहते हैं इत्यादि-इत्यादि। बेहतर तो यह होता कि देशवासियों की विविधता की अपेक्षा एकता पर अधिक जोर दिया जाता।

भूतपूर्व शिक्षामन्त्री मौलाना आजाद की पुस्तक "भारत ने स्वाधीनता जीती" के लेखक प्रोफैसर हुमायूं कबीर ने अपनी पुस्तक "लोकतन्त्र में अल्पसंख्यक" में इस बात पर जोर दिया है कि भारत में अल्पसंख्यकों का पृथक् चरित्र है। मुसलमानों के बारे में वे लिखते हैं कि "वे भारतीय हैं और वे मुसलमान हैं। एक मुसलमान के नाते उसके सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं, कुछ सांस्कृतिक विशेषताएं हैं, जो उसे अन्यों से अलग करती हैं। उनका भारत से बाहर रहने वाले मुसलमानों से भी भाईचारा है। वस्तुतः वे विश्व भर में फैली मुस्लिम बिरादरी के सदस्य हैं। (पृष्ठ ३६)

गलत रणनीति

१५ अगस्त १६४७ को भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने स्वाधीनतादिवस के अवसर पर प्रसारित अपने भाषण में अल्पसंख्यकों को आश्वस्त किया कि "हम सब भारत के एक जैसे बच्चे हैं, चाहे हमारा सम्बन्ध किसी भी धर्म से क्यों न हो। हम साम्प्रदायिकता अथवा संकीर्णचित्तता को प्रोत्साहित नहीं कर सकते, क्योंकि कोई भी राष्ट्र, जिसकी जनता विचार और कार्य में संकीर्ण है, महान् नहीं हो सकता।" यहां तक तो ठीक है। लेकिन इसके बाद उन्होंने एक अन्य बात कही। उन्होंने कहा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि "जब तक शासन मेरे हाथ में है, भारत हिन्दू राज्य नहीं बनेगा। यदि वे मेरे आदर्शों को नहीं मानते और मेरे साथ सहयोग को तैयार नहीं, तो मेरे पास प्रधानमन्त्रिपद से त्याग पत्र देने के सिवा कोई चारा न रहेगा। (भारत के अल्पसंख्यक, प्रकाशन विभाग, सूचना व प्रसारण मन्त्रालय, १६४८, पृष्ठ १६)

ऊपर अंकित नेहरू जी की प्रवृत्ति बाद के उनके सब भाषणों में प्रकट हुई और वस्तुतः उसी ने सब सरकारी नीतियों को रूप दिया। या तो नेहरू जी हिन्दुत्व से विरक्त थे अथवा उनकी आँखें होने वाले चुनावों में मुसलमानों के सामूहिक वोटों पर लगी थीं। नेहरूजी के चरित्र का यह महत्त्वपूर्ण पहलू उन समाजवैज्ञानिकों द्वारा विस्तृत अध्ययन करने योग्य है, जो यदि भारत में साम्प्रदायिकता के उभार को पूर्णतः दबाना नहीं चाहते तो उसे रोकना तो चाहते ही हैं। भारत की राजनीति में धर्मनिरपेक्षता का सिद्धान्त इसी उद्देश्य से सम्मिलित किया गया था। यह अलग बात है कि धर्मनिरपेक्षता शब्द का सही अर्थ बहुत कम लोग समझते हैं और प्रत्येक व्यक्ति अपनी धारणाओं के अनुसार इसका अर्थ लगाता है।

"तीसरी दुनिया में राष्ट्र निर्माण" शीर्षक से लिखित चार लेखों की एक लेखमाला में गोपालकृष्ण ने तीन रणनीतियों के दृष्टिकोण से भारत में साम्प्रदायिक समस्या पर अपने विचार प्रकट किये हैं। ये तीन दृष्टिकोण हैं—राष्ट्रवादी उदार धर्मनिरपेक्षवादी, मार्क्सवादी और सम्प्रदायवादी। भारत में जबकि धर्मनिरपेक्षवादी प्रथम दृष्टिकोण की बात कर रहे हैं, हम लोग दूसरे और तीसरे दृष्टिकोण का अनुकरण करते हैं।

जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं, विभाजनोत्तर भारत में नेहरूजी न्याययुक्त समाज के गठन की अपेक्षा अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के बारे में अधिक चिन्तित थे। लेकिन वस्तुतः वे हिन्दू विरोधी हो गये—हिन्दुत्व से सम्बन्धित प्रत्येक बात के विरुद्ध हो गये। नेहरूजी और अन्य कांग्रेसी नेताओं ने मुस्लिम पृथक्ता के कारणों को समझने की कोशिश न की। वे इस सीधी-सी बात

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को न समझ सके कि जब पांच प्रान्तों में बहुमत रखने वाले ३३ प्रतिशत मुसलमान अपने को सुरक्षित अनुभव नहीं कर सकते थे, तो जब वे कुल आबादी का केवल दस प्रतिशत रह गये, तब वे अपने आपको कैसे सुरक्षित अनुभव कर सकते थे।

सात अगस्त १९४७ को नेहरूजी ने संविधान सभा के अध्यक्ष डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद को गोहत्या के बारे में एक पत्र लिखा। उन्होने लिखा कि "मेरे विचार में हम राजनैतिक पहलू की उपेक्षा नहीं कर सकते। अपनी बहुसंख्यक हिन्दू आबादी के बावजूद भारत धार्मिक और अन्य दृष्टियों से एक मिलाजुला देश है। हमारे लिए यह एक महत्त्वपूर्ण समस्या है, जिसे हमें हल करना है कि क्या हम इस देश को मिश्रित संस्कृति वाला देश मानकर अपने विशिष्ट ढंग से आचरण करें अथवा अन्य वर्गों के दृष्टिकोणों की उपेक्षा करके एक हिन्दू देश के रूप में आचरण करें। हर हालत में इस बात से अन्तर पड़ेगा कि हम इस देश को मिश्रित संस्कृति वाला देश मानें अथवा हिन्दू देश।"

जैसा गोपालकृष्ण ने लिखा है—भारत एक ऐसे फारमूले की ओर बढ़ रहा था, जो उसकी भावी नीति के लिए बुनियादी था। संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है—भारत को साम्प्रदायिकता की ओर से गम्भीर चुनौती का सामना करना है। यह हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की साम्प्रदायिकता है। दोनों समान भूमि पर थीं, लेकिन विभाजनोत्तर प्रसंग में हिन्दू साम्प्रदायिकता अधिक खतरनाक हो गई। प्रथम आम चुनाव के दौरान नेहरूजी की आलोचना का मुख्य लक्ष्य हिन्दू साम्प्रदायिकता थी। नेहरूजी का कहना था कि हिन्दू दुराग्रही, पुराणपन्थी, अन्यायपूर्ण संस्थाओं को मानने वाले, दमनात्मक असमानताओं और प्रारम्भिक काल की मजहबपरस्ती वाले लोग हैं। क्योंकि कांग्रेस के अन्दर उनका जो विरोध हुआ, वह भी हिन्दू भावनाओं वाले लोगों की ओर से था। नेहरूजी ने हिन्दुत्व के सब रूपों के विरुद्ध अधिकाधिक विरोध पाल लिया।

(क्रमशः)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंचायती राज व्यवस्था क्या है ?

—चंद्रोदय दीक्षित

६४वें संविधान संशोधन विधेयक द्वारा पंचायती राज व्यवस्था को सम्पूर्ण देश में एकरूपता प्रदान की जायेगी। गांव-पंचायत क्षेत्र अथवा विकास समिति और जिला परिषद्, इन तीनों स्तरों पर स्वशासी स्थानीय निकाय का ढांचा तैयार किया जायेगा। इस व्यवस्था द्वारा सत्ता के विकेन्द्रीयकरण, गरीबी—उन्मूलन और विकास कार्यक्रमों के माध्यम से गांव में रोजगार उपलब्ध कराकर बेकारी और बेरोजगारी को दूर करने का प्रयास किया जायेगा। जवाहर रोजगार योजना को गांव स्तर पर चलाया जायेगा। गांव पंचायत अध्यक्ष को प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित करके उसे इन कार्यों का अधिकार और उत्तरदायित्व सौंपा जायेगा। इस व्यवस्था के संचालन में राज्यों के अधिकारों का अतिक्रमण नहीं होगा।

प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने गत १५ मई को लोक-सभा में संविधान का ६४वां संशोधन विधेयक प्रस्तुत कर दिया। उन्होंने इस विधेयक को ऐतिहासिक और क्रांतिकारी कदम बताते हुए इस बात को स्पष्ट किया है कि इससे संविधान के मूल ढांचे पर कोई असर नहीं पड़ेगा। इसके द्वारा राज्यों के अधिकारों को कम नहीं किया जायेगा। इस विधेयक का उद्देश्य पंचायतों के चुनाव नियमित कराने और पांच वर्ष तक उन्हें भंग न करने देना है। यदि किसी कारणवश पंचायतों को भंग अथवा निलंबित भी किया जायेगा तो छह महीने के अन्दर उसके चुनाव कराने की व्यवस्था की गई है।

इस विधेयक के संबंध में विपक्ष की ओर से यह शंका उठाई गई कि संविधान के अनुच्छेद २४६ के अन्तर्गत यह राज्यों के अधीन है। अतः संसद् में इस विधेयक को लाना उचित नहीं। मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री पी. शिवशंकर ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद ३६८ के अन्तर्गत संविधान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

संशोधन का अधिकार संसद् को है। यह भी स्पष्ट किया गया कि इस विधेयक के पारित हो जाने के बाद जम्मू-कश्मीर की विधानसभा की स्वीकृति के बाद इसे वहां भी लागू किया जा सकेगा। नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, स्वायत्त जिला परिषद् वाले क्षेत्रों, आदिवासी क्षेत्रों, निकोबार, लक्षद्वीप, पांडिचेरी और दिल्ली में इसे लागू नहीं किया जा सकेगा, क्योंकि वहां या तो पहले ही पारंपरिक पंचायत व्यवस्था मौजूद है अथवा वहां विशेष परिस्थिति है। प्रस्तावित विधेयक के प्रावधान के अनुसार सभी राज्यों को संविधान संशोधन के एक वर्ष के भीतर पंचायत कानून बनाने होंगे, लेकिन वर्तमान पंचायतों को अपना कार्यकाल पूरा करने दिया जायेगा।

इस विधेयक द्वारा संविधान में एक नया भाग जोड़ा जायेगा, जिसमें पंचायतों की परिभाषा, उनकी संरचना, स्थानों का आरक्षण, कार्यकाल तथा पंचायतों की शक्तियां, प्राधिकार और उत्तरदायित्व का उल्लेख किया जायेगा। पंचायतों को कर लगाने का अधिकार, उनकी निधियां स्थापित करने, वित्तीय स्थिति की समीक्षा के लिए वित्त आयोग की नियुक्ति, उनके लेखाओं की जांच, उनके बारे में विधानमंडलों के अधिकार आदि का भी जिक्र किया गया है।

हमारे देश में प्राचीन काल से पंचायतों की परम्परा रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देश की स्वाधीनता के बाद गांव की पंचायतों को सामाजिक ढांचे का आधार बनाने का सुझाव दिया था। उनके विचार से प्रत्येक गांव की पंचायत को गणतन्त्र के रूप में भी आवश्यक अधिकारों से संपन्न स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाया जाना चाहिए। गांवों को अपना प्रबन्ध स्वयं चलाना चाहिये। ग्राम स्वराज्य का अर्थ यही है कि उन्हें आत्मनिर्भर होकर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये।

सर्वोदय आन्दोलन और भूदान आन्दोलनों में भी सदैव सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर जोर दिया गया और इस बात का आग्रह किया गया कि हमारे राजनैतिक और सामाजिक ढांचे को ग्राम पंचायतों के आधार पर संगठित किया जाना चाहिए। ऐसा होने पर ही प्रत्येक देशवासी को उसके अधिकार दिलाये जा सकेंगे और साथ ही उन्हें उत्तरदायित्व सौंपे जा सकेंगे। देश के

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक जीवन में प्रत्येक देशवासी को भागीदार बनाकर ही हम अपने ग्राम स्वराज्य की कल्पना को साकार कर सकेंगे।

पंचायती राज व्यवस्था के विकास क्रम को देखने से स्पष्ट होता है कि प्राचीन परम्पराओं का लोप अंग्रेजी शासनकाल में हो चुका था, लेकिन स्वाधीनता आन्दोलन में उनके महत्त्व पर जोर दिया गया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रेरणा से अनेक राज्यों में १९४० से पंचायतों की स्थापना के लिए कानून बनाये गये और १९४६ में लोकप्रिय सरकारों की स्थापना के बाद पंचायतों और जिला परिषदों का गठन किया गया। पंचायती राज व्यवस्था के महत्त्व को स्वीकार करके संविधान के निदेशक सिद्धान्तों के अध्याय के अनुच्छेद ४० में यह निर्देश दिया गया है कि राज्य गांव पंचायतों के गठन के लिए उचित कदम उठायेगा और उन्हें ऐसे अधिकार और शक्तियाँ प्रदान करेगा, जिससे वे स्वशासन के स्थानीय निकाय के रूप में कार्य कर सकें।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में सामुदायिक विकास कार्यक्रम द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक व्यवस्था में तेजी से सुधार लाने का प्रयास किया गया, लेकिन गांव पंचायतों को स्वशासन की स्थानीय इकाई के रूप में विकसित करने के काम में ढिलाई बरती गई। १९५७ में बलवन्त राय मेहता अध्ययन समिति ने सामुदायिक विकास और राष्ट्रीय प्रचार कार्यक्रमों में जन सहयोग का गहराई से अध्ययन किया। उस समिति ने निर्वाचित गांव पंचायत के गठन पर जोर देते हुए उन्हें आवश्यक संसाधन दिलाने, शक्ति और अधिकार प्रदान कर सत्ता के विकेन्द्रीयकरण पर जोर दिया। उस समिति की सिफारिश थी कि प्रत्येक गांव में निर्वाचित पंचायत होनी चाहिए और प्रत्येक विकास खण्ड में पंचायत समिति (विकास समिति) होनी चाहिए और उनके आधार पर अप्रत्यक्ष चुनाव द्वारा जिला परिषदों का गठन होना चाहिए।

२ अक्तूबर, १९५९ को तत्कालीन प्रधानमन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने नागौर (राजस्थान) में पंचायती राज संस्थाओं के नये युग का शुभारम्भ किया था। इस व्यवस्था को उन्होंने नये भारत के निर्माण में अत्यन्त क्रान्तिकारी और ऐतिहासिक महत्त्व का युगान्तरकारी कदम बताया था। अनेक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज्यों में पंचायती राज की व्यवस्था संगठित की गई। लेकिन संशोधनों के अभाव और अन्य कारणों से उन्हें पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया जा सका।

सन् १९७७ में अशोक मेहता समिति ने अपनी रिपोर्ट में पंचायती राज व्यवस्था को संगठित करने में मंडल पंचायत (विकास समिति) और जिला परिषदें बनाने का सुझाव दिया, लेकिन १९७९ में मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में इस सुझाव को स्वीकार नहीं किया गया और स्थानीय निकाय की तीन-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को कायम रखने का फैसला किया गया। यह भी तय किया गया कि पंचायतों के चुनाव को राजनैतिक पार्टियां पार्टी के आधार पर न लड़ें।

२५ मार्च १९८५ को भारत सरकार ने डा. जी. वी. के. राव की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की। इस समिति ने यह सिफारिश की कि योजना की नीति और उसके कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए "जिला" को इकाई माना जाये। इसी आधार पर जिला परिषदों को विकास कार्यक्रमों को पूरा करने का काम सौंपा गया। उस समिति ने गांव पंचायतों के चुनाव नियमित कराने का सुझाव दिया। आई. आर. डी. पी. (समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम), राष्ट्रीय रोजगार योजना (नेशनल रूरल ऐम्प्लायमेंट प्रोग्राम) और आर. एल. ई. जी. पी. आदि योजनाओं में इनसे लाभ पाने के हकदार लोगों की पहचान गांव सभाओं की बैठकों में करने पर जोर दिया गया। ऐसी सभाओं की अध्यक्षता ग्राम पंचायत के प्रधान अथवा सरपंच को करनी चाहिए और इस बात को देखना चाहिए कि विकास कार्यों का अधिकाधिक लाभ गरीब लोगों को मिले।

बाद में एल. एम. सिंघवी की अध्यक्षता में जून, १९८६ में एक समिति गठित की गई। उसने गांव में आर्थिक साधन सम्पन्न पंचायतों के पुनर्गठन पर जोर दिया और न्याय पंचायतों को गठित करने की सिफारिश की। इस समिति ने यह भी सिफारिश की कि विभिन्न राज्यों में पंचायती राज व्यवस्था में एकरूपता लाने का प्रयास किया जाये।

सरकारिया आयोग की एक समिति ने यह सुझाव दिया कि पंचायती राज संस्थाओं को वैधानिक रूप से मान्यता दी जानी चाहिये और जिलों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजनैतिक एवं प्रशासनिक ढांचे का आधार ग्राम पंचायतों को बनाया जाना चाहिए।

उक्त समितियों के निरन्तर अध्ययन के बाद प्रधानमंत्री द्वारा आयोजित जिला अधिकारियों की कार्यशालायें संगठित की गईं और ३० जुलाई १९८८ को मुख्य सचिवों के सम्मेलन में यह आम राय हुई कि पंचायती राज व्यवस्था को सुसंगठित किया जाये। जनवरी, १९८८ में दिल्ली में पंचायती राज सम्मेलन आयोजित किया गया।

पंचायती राज संस्थाओं को पुन: संगठित करने के उद्देश्य से जनवरी, १९८९ में पंचायती राज सम्मेलन किया गया। उसमें इन व्यवस्था को पुनर्जीवित करने और उसे शक्तिशाली बनाने के लिए पूरे देश में तीन-स्तर के आधार पर स्थानीय निकाय की स्वशासी संस्थाओं को संगठित करने पर जोर दिया गया। पंचायत के चुनाव प्रत्येक पांच वर्ष में अनिवार्य रूप से कराने की सिफारिश की गई। चुनाव आयोग को इन चुनावों की व्यवस्था का भार सौंपने पर जोर दिया गया। सम्मेलन में पंचायतों में गरीब लोगों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों को आरक्षण देने की मांग की गई। महिलाओं और अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व देने पर जोर दिया गया। गत अप्रैल में बंगलौर में भी पंचायती राज सम्मेलन किया गया। सभी प्रश्नों को राष्ट्रीय विकास परिषद् के समक्ष रखने की सिफारिश की गई।

इस समय देश के १४ राज्यों अथवा केन्द्र शासित प्रदेशों में तीन-स्तरीय स्थानीय निकाय की संस्थायें गांव पंचायत, विकास समिति अथवा क्षेत्र समिति और जिला परिषद् काम करती हैं। आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, चंडीगढ़ और अरुणाचल प्रदेश में तीन स्तर वाली पंचायत राज व्यवस्था है। असम, हरयाणा, ओड़िसा और मणिपुर में गांव पंचायत और विकास खंड स्वर पंचायत समितियां काम कर रही हैं।

प्रस्तावित संविधान संशोधन द्वारा सभी राज्यों में तीन-स्तर वाली पंचायती राज व्यवस्था गठित की जायेगी। ग्राम पंचायत उसकी आधारभूत इकाई होगी। उसका चुनाव प्रत्यक्ष आधार पर होगा। बाद में क्षेत्र अथवा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विकास समिति अप्रत्यक्ष आधार पर गांव पंचायत के प्रतिनिधियों से चुनी जायेगी और जिला परिषदों को गठित किया जायेगा। इन संस्थाओं में लोगों को नामजद करने की परिपाटी नहीं रखी जायेगी, लेकिन सहकारी संस्थाओं, नगरपालिका आदि स्थानीय निकायों को तथा स्थायी बुद्धिजीवियों को "कोऑप्ट" (शामिल) करने की व्यवस्था होगी। क्षेत्र अथवा विकास समिति और जिला परिषद् में क्षेत्रीय सांसदों और विधायकों का भी प्रतिनिधित्व रहेगा।

गांव पंचायत का प्रधान अथवा अध्यक्ष गांव के सभी बालिग लोगों के मताधिकार के आधार पर चुना जायेगा। क्षेत्र अथवा विकास समिति और जिला परिषद् के अध्यक्ष का चुनाव ग्राम पंचायत संस्थाओं के निर्वाचित सदस्य करेंगे। पंचायती राज संस्थाओं में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं के प्रतिनिधित्व को आरक्षित किया जायेगा।

सामान्य रूप से इन संस्थाओं का कार्यकाल पांच वर्ष का रहेगा। इन संस्थाओं के चुनाव, कार्यकाल और उनकी आर्थिक व्यवस्था के लिए ही संविधान में संशोधन का प्रस्ताव किया गया है, जिससे उन्हें अधिक सार्थक, संपन्न और कार्य-गतिशील बनाया जा सके।

राज्य सरकारों को सलाह दी गई है कि संविधान के अनुच्छेद-२८० के अंतर्गत ऐसा वित्त आयोग गठित करें, जो पंचायती राज संस्थाओं के लिए वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने की व्यवस्था करे। प्रस्तावित संशोधन का उद्देश्य है कि गांव पंचायतों द्वारा गाँव के उपेक्षित, उत्पीड़ित और शोषित लोगों की आर्थिक विपन्नता को समाप्त करके उन्हें आर्थिक-सामाजिक विकास की प्रक्रिया में शामिल करने का प्रयास किया जाये।

विधेयक में पंचायतों की शक्तियों, अधिकार और उत्तरदायित्व के संबंध में कहा गया है कि इस संविधान संशोधन के उपबन्धों के अधीन रहते हुए राज्य सरकार कानून द्वारा पंचायतों को ऐसी शक्तियां और अधिकार प्रदान कर सकेगी, जो उन्हें स्वायत्तशासी संस्थाओं के रूप में काम करने योग्य बनाने के लिए आवश्यक हो। इस कानून के अंतर्गत पंचायतों को स्थानीय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्तर पर आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के लिए योजनाएं तैयार करने और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए शक्तियों और उत्तरदायित्व के प्रावधान किये जा सकेंगे।

आज यह बात सभी लोग स्वीकार करते हैं कि देश के अन्दर ग्रामीण स्वराज्य (गांव पंचायतों) के माध्यम से ही गरीबी उन्मूलन के कार्यक्रमों को पूरा किया जा सकता हैं। देश के आर्थिक और सामाजिक विकास की प्रक्रिया को तेज किया जा सकता है। इस प्रकार पूरे समाज में प्रगति को प्रशस्त करके सामाजिक न्याय और उसके आधार पर सामाजिक परिवर्तन के कार्य को पूरा किया जा सकता है। देश प्रत्येक नागरिक के जीवन को शोषणविहीन, जाति और वर्गविहीन समाजवादी समाज में साकार रूप प्रदान किया जा सकता है। (पत्र सूचना विभाग द्वारा प्रसारित)

क्या आप श्रीराम जन्मभूमि के इतिहास से परिचित हैं ?

१. सम्राट् विक्रमादित्य ने श्री राम की जन्मभूमि पर विशाल और भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया था।

२. सन् १५२८ में बाबर ने अयोध्या पर आक्रमण करके इस मन्दिर को ध्वस्त कर दिया। इसमें ७४ हजार हिन्दुओं ने अपने प्राणों की आहुति दी थी।

३. सन् १५३० में स्वामी महेश्वरानन्द जी ने संन्यासियों और गृहस्थों को संगठित करके जन्मभूमि की मुक्ति के प्रयास में अपने प्राणों का उत्सर्ग किया।

४. हुमायूं के शासन काल में हसवर की रानी जयराज कुंवरि ने इसी पवित्र कार्य के लिए युद्ध में प्राण दिये।

५. सन् १६८० में गुरु गोविन्द सिंह जी के नेतृत्व में सिखों, राजपूतों और बाबा वैष्णव दास जी की सेनाओं ने जन्मभूमि की मुक्ति का प्रयास किया।

६. सन् १६८४ में रमजान की सातवीं तारीख को शाही फौज ने जन्मभूमि पर अचानक आक्रमक किया, जिसमें दस हजार हिन्दू वीरों का बलिदान हुआ।

७. आज तक ३ लाख हिन्दू श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन में शहीद हो चुके हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू दृष्टिकोण बनाम साम्प्रदायिकता

—डा. सी. पी. रामस्वामी अय्यर

कैसे भी क्यों न हो, किन्हीं अदृश्य अथवा रहस्यमय कारणों के परिणाम-स्वरूप आज स्थिति यह है कि यदि कोई मुसलमान, ईसाई, पारसी या किसी अन्य सम्प्रदाय का अनुयायी अपनी जाति, अपने सम्प्रदाय अथवा अपने क्षेत्र के सम्बन्ध में कोई भी बात कहता है तो उसे साम्प्रदायिक की संज्ञा नहीं दी जाती। यही नहीं, उक्त सम्प्रदायावलम्बियों द्वारा उनकी किसी भी समस्या पर विचार किया जाना उचित माना जाता है। किन्तु इसके विपरीत कोई भी व्यक्ति जिस समय यह कहता है—"यही हिन्दू दृष्टिकोण है" अथवा "यह वही है, जो हिन्दू भारत सोचता है" तो उस व्यक्ति को साम्प्रदायिक कह कर बदनाम किया जाता है। उसे पृथक्ता का प्रबल पोषक, विघटनकारी और अन्ततोगत्वा राष्ट्र का विनाशकर्त्ता बताया जाता है। इसलिए वर्तमान परिस्थिति में हिन्दू संगठन के गहनतम और मौलिक प्रश्न पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करना आवश्यक है।

'हिन्दू' शब्द की व्याख्या करना अति कठिन है। किन्तु प्रश्न यह है कि ऐसा क्यों है? ऐसा कोई विशिष्ट कार्यक्रम, पर्व एवं उत्सव नहीं है, जिसे मानने मात्र से किसी व्यक्ति को हिन्दू कहा जा सके अथवा वह हिन्दू बन जाये। अभी कुछ दिनों पूर्व तक तो यह धारणा प्रचलित थी कि गैर-हिन्दू समाज में उत्पन्न किसी व्यक्ति का 'हिन्दू' बन जाना असम्भव है, किन्तु अब धारणा अमान्य हो चुकी है।

हिन्दुओं का विचार दर्शन

हमने 'दर्शन' शब्द तो सुना ही है। 'दर्शन' का तात्पर्य है एक विशिष्ट विचार-दर्शन। संस्कृति में 'दर्शन' शब्द का अभिप्राय है—साक्षात्कार, आत्म-दृष्टि, आत्मानुभूति, आत्मानुभव। अतः दर्शन अथवा विशिष्ट विचार-दर्शन से तात्पर्य है एक विशिष्ट आत्मानुभूति। हिन्दू-दर्शन के अन्तर्गत वैष्णव, शैव, वेदांत, सिख, जैन और बौद्ध-दर्शन अथवा सिद्धान्त आते हैं। इनमें नास्तिक (जो भगवान् को तथा मृत्यु के उपरान्त जीवन के अस्तित्व को मान्यता नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
देते) भी सम्मिलित है। इस प्रकार हिन्दू धर्म विभिन्न विचारों का समन्वय एवं विभिन्न विचारों व आदर्शों का संश्लिष्ट समूह है। हिन्दू धर्म में सभी अच्छाइयां समाहित हैं। इसमें कोई भी बात अछूती नहीं, छूटी नहीं है।

इस विशाल हिन्दू समाज में आर्य नेतृत्व द्वारा अन्य जातियों के आत्मसात् किए जाने की प्रक्रिया के सम्बन्ध में ऐतरेय ब्राह्मण में अनेक उदाहरण विद्यमान हैं। शांतनु अथवा सत्यवती की कथा, भीष्म की प्रतिज्ञा, अम्बिका एवं अम्बालिका की कहानी और विदुर जन्म की कथा आदि उपर्युक्त आत्मसात् की प्रक्रिया के विस्तृत व्याख्यान मात्र हैं।

पुनश्च महाभारत में भी उल्लिखित है कि भीम ने असुर कन्या हिडिम्बा से और अर्जुन ने नाग कन्या उलूपी से विवाह किया था। वस्तुतः आत्मसात् करने की इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप आर्यों में कात्यायन गोत्र के अन्तर्गत 'उपकृष्ट' नामक एक नव-उपजाति का उदय हुआ। शतपथ ब्राह्मण के रचना काल में शूद्रों को भी आर्य जाति में सम्मिलित कर लिया गया था। इसका स्पष्ट उदाहरण 'निषाद' है। यह एक वास्तविक तथ्य है कि समाज में कुछ वर्ग थे, जो स्वयं को 'आर्य ब्राह्मण' कहते थे, जिससे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि कुछ गैर-ब्राह्मण—अब्राह्मण भी आर्य समाज में विद्यमान थे।

ऋषि पाराशर ने सत्यवती नामक मछुए की कन्या से विवाह किया था, जो आगे चलकर महाभारत और पुराणों के प्रसिद्ध रचयिता व्यास की माता बनी। इस प्रकार के अन्तर्जातीय विवाहों की अनेक घटनाएं बहुतायत से उल्लिखित हैं।

हिन्दू और बौद्ध एक ही हैं

चन्द्रगुप्त महान् (जो क्षत्रियेतर जाति का बताया जाता है) ने लिच्छवी जाति की कन्या कुमार देवी से विवाह किया था, जो ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय में से कोई एक थी। यही कुमार देवी आगे चलकर अशोक महान् की दादी हुई। यह तो सर्वविदित है कि महाराजा हर्ष हिन्दू धर्म और बौद्ध मत का समान आदर करता था। ह्वेनसाँग ने अपने यात्रा वर्णनों में इस बात का तथ्यपूर्ण उल्लेख किया है कि हर्ष की राजधानी में सूर्य, ब्रह्मा, बुद्ध और जैन तीर्थंकरों से सम्बन्धित धार्मिक मन्दिर एक-दूसरे के साथ-साथ बने हुए थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनेक विदेशी पर्यवेक्षक वर्तमान भारत में विद्यमान जातियों एवं उप-जातियों में अन्तर्जातीय भोज एवं अन्तर्जातीय विवाह सम्बन्धी कठोर नियमों की कड़ी आलोचना करते हैं। कई पुराणों में इस सम्बन्ध में एक श्लोक पाया जाता है, जिसमे यह स्पष्ट परिलक्षित है कि इस प्रकार के कठोर नियम एवं प्रतिबन्ध बहुत ही बाद में लागू हुए हैं। महान् ऋषि वसिष्ठ एक दासी महिला के पुत्र थे, किन्तु अपने संयम, तप और त्याग के द्वारा वे समाज में ज्ञानी के रूप में जाने जाते थे। आत्म विकास ही ब्राह्मणत्व की प्राप्ति का एकमात्र उपाय था।

एक श्लोक में इस बात का उल्लेख है कि महाभारत और पुराणों के सुप्रसिद्ध रचयिता श्री व्यास जन्म से मछुए थे और उनके पिता पराशर जन्मत: श्वपच जाति के थे।

प्राचीन काल में एक ही जाति थी

भागवत पुराण में एक पुरातन परम्परा का वंशानुगत उल्लेख है, जिसके अनुसार आरम्भ में एक ही जाति थी, जिसे हंस कहते थे। भगवद् गीता में अत्यन्त स्पष्ट रूप से इस बात का अनुमोदन किया गया है कि जातियों की रचना और विकास व्यक्तियों के गुण और कर्म के अनुसार किया गया—

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्त्तारमपि मां विद्ध्यकर्त्तारमव्ययम्॥

उपर्युक्त अनेक घटनाओं एवं आख्यानों का उल्लेख यह दर्शाने के लिए किया गया कि जिसे एकता किंवा संगठन की बात आज हम करते हैं अर्थात् विभिन्न गुण-कर्म के लोगों को आत्मसात् कर उन्हें अपने में मिलाकर एक करना वह एकता किंवा संगठन न तो पहले और न आज ही जन्म, जाति अथवा अन्य किसी बात पर निर्भर था, अपितु व्यक्ति के अन्तर्निहित एवं विकसित गुणों पर ही निर्भर था, अर्थात् आत्मसात् की प्रक्रिया का आधार व्यक्ति के अन्तर्निहित एवं उसके द्वारा अधिगृहीत गुण थे। अशोक ने अपने एक प्रसिद्ध शिलालेख में कहा है कि समवाय एव साधु अर्थात् अन्य लोगों, जातियों एवं समाजों पर विजय पाने, उन्हें विजित करने का एक ही मार्ग है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
उनके मन, हृदय और उनकी भावनाओं को विजित करना। विजय की प्रक्रिया को ही समवाय कहते हैं। यह समुचित ही है कि समवाय एवं साधु अर्थात् समवाय सम्मिलन का मार्ग ही विजय का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। भूतकाल में विलय की यही परिकल्पना थी।

धर्म सर्वोपरि था

मानव इतिहास में एक ऐसा काल था, जब धर्म सर्वोपरि था। धर्म जो कुछ कहता था। वही महत्त्वपूर्ण था किन्तु आज हम एक ऐसी स्थिति में पहुंच गये हैं, एक ऐसे बिन्दु पर पहुंच गये हैं, जब मन का परिचालन धर्म नहीं करता। व्यक्ति का प्रेरणा स्रोत धर्म नहीं रह गया है। आज संसार में विद्यमान धर्मेतर अन्य बातें अर्थात् सांसारिकता किंवा ऐहलौकिकता का बहुत अधिक महत्त्व है। धर्म का स्थान राजनीति ने ले लिया है। अतः अपने देश के इतिहास के इस वर्त्तमान काल में, जब कृत्रिम उपबंध एवं विचारों के आधार पर अलगाव बढ़ रहा है, हम एक-दूसरे से पृथक् हो रहे हैं, प्रभुता की भावना बढ़ रही है, विभिन्नताएं वृद्धिगत हो रही हैं, यह आवश्यक है कि आज संगठन और एकता का पाठ पढ़ाया जाए। अपने देश में संगठन और एकता की पुरातन परम्परा चली आ रही है। हमें विरासत में सम्मिलन और समवाय की सर्वश्रेष्ठ पुरातन परम्परा प्राप्त है, जिसे हम अपना सकते हैं। ❋

मेरे लहू को…

अश्कों को मुस्कान की छवि दे, अंगारों को शबनम कर दे।
मां, मेरे शादाब वतन के हर मौसम को गुलशन कर दे।।
मेरे देश क्षितिज में भैया, नया-नया इक चाँद उगा है।
अंधियारों के दीप जले हैं, उजियारों की पूनम कर दे।
हिन्दू-मुस्लिम सिख-ईसाई, अब एक नया भूगोल बनाएं।
जो इस देश के घाव भरे, और मेरे लहू को मरहम कर दे।।

—लक्ष्मी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बोधकथा

देवता और असुर

— विवेक

बहुत पहले की बात है। तब देवता और असुर इस पृथ्वी पर रहते थे। एक बार किसी गृहस्वामी ने शुभ अवसर पर बहुत-से विद्वानों को भोज पर आमंत्रित किया। उस भोज में देवता भी आए। असुर भी आए और अन्य ऋषि-मुनि व विद्वान् भी पधारे।

अभी भोज के लिए लोग बैठने ही वाले थे कि असुरों ने गृहपति को बुलाया और शिकायत करते हुए बोले कि 'आप लोग हम असुरों के साथ हमेशा असमानता का व्यवहार करते हैं। यह उचित नहीं है। यह हमारा अपमान है। अगर आज से ऐसा व्यवहार हमारे साथ किया गया तो हम इस अन्याय का भरपूर विरोध करेंगे।

गृहपति ने हाथ जोड़कर कहा—"अतिथियों व आपके साथ किस प्रकार का अभद्र व अपमानजनक व्यवहार किया जाता है? कृपा कर साफ-साफ बतलाइए!"

असुरों में से दो-चार लोग सामने आए और जोश तथा क्रोध में फुफकारते हुए बोले—"यही कि आप लोग हर जगह देवताओं को पहले पूछते हो। उन्हें पहले भोजन परोसते हो। क्या यह अन्याय नहीं है? आज से यह सब नहीं चलेगा!"

तभी दूसरा बोला—"हम आखिर किस बात से देवताओं में कम हैं। हमारा शास्त्रार्थ करा लें। चाहे संगीत में, चाहे किसी भी विषय में, चाहे युद्ध विद्या में, चाहे ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में... ।"

गृहपति ने असुरों को समझाते हुए कहा—"क्रोध शान्त करें। आज आप लोग ही पहले भोजन करेंगे। पर एक शर्त है। जो भी लोग भोजन करेंगे, उनके हाथों में एक-एक लकड़ी बांधी जाएगी और उसी अवस्था में पूरा भोजन एक सीमित समय में करना होगा। जो भोजन भर पेट कर लेगा, वही ज्ञानवान् समझा जाएगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"हमें शर्त स्वीकार है। चलिए भोजन परोसिये !" असुरों ने जोश में आकर कहा।

अब सारे असुरों के हाथों में भुजा से लेकर कलाई तक एक-एक लकड़ी बांध दी गई। भोजन एक सीधी पंक्ति में परोस दिया गया।

गृहपति ने हाथ जोड़ कर कहा—"विद्वानों, कृपा कर भोजन करना आरंभ कीजिए !"

असुर झटपट सीधी पंक्ति में बैठ गए और पत्तलों से भोजन का कौर उठाकर जो मुंह में डालने का प्रयास करते, तो वह कभी सिर पर पहुंचता, कभी सिर के पीछे। सभी को अपने-अपने पेट की पीड़ा थी। किसी दूसरे का उन्हें ध्यान ही न था। कोहनी से उनकी लकड़ी बंधी होने के कारण मुड़ नहीं सकती थी। अतः वे भोजन का एक कौर भी नहीं खा सके। ऊपर से सारा हलुआ, पूड़ी-खीर, बूंदी आदि उनके सिर पर गिर गया था। देखकर सभी को उनकी हालत पर हंसी आती थी।

अब देवताओं की बारी आई। उनके भी दोनों हाथों में लकड़ियां ठीक उसी प्रकार बांधी गईं और भोजन की पत्तलें एक पंक्ति में रखकर गृहपति ने हाथ जोड़कर कहा—"देवगण, कृपा कर अब आप भी भोजन करें।"

देवताओं ने पहले तो एक-गक पत्तल उठाई और अपने साथी को अपनी तरफ सामने मुंह करके बैठाया और उसके सामने अपनी-अपनी पत्तलें रख दीं। इस प्रकार दो-दो देवता आमने-सामने बैठ गए और एक-दूसरे के आमने-सामने अपनी-अपनी पत्तलें रख लीं।

ज्यों ही भोजन परोसा गया, वे ग्रास बना-बना कर एक दूसरे को खिलाने लगे।

इस प्रकार देवताओं ने एक-दूसरे को बिना हाथ मोड़े लकड़ी बंधे हाथों से भरपेट भोजन कराया।

असुर काफी लज्जित हुए। वे समझ गए कि हममें न तो तात्कालिक बुद्धि है, न सहयोग की भावना और वे वहां से बिना कुछ कहे चुपचाप खिसक गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

पाँचवाँ बेटा

—मधुसूदन साहा

दादी बनने की खबर पाते ही मेरी पत्नी का अंग-अंग खिल उठा। वह दौड़कर अन्दर गई और फ्रिज से मिठाई निकालकर मुंह मीठा कराने लगी। इससे पहले मैंने उसे इतना खुश कभी नहीं देखा था, इसलिए छेड़ते हुए कहा—"भई, इतना खुश तो तुम बेटे के जन्म पर भी नहीं हुई थीं ?"

"ईर्ष्या क्यों कर रहे हैं ? क्या दादा बनने की खुशी आप को नहीं हुई है ?" प्रश्न जितना सीधा और सपाट था, उत्तर उतना ही कठिन था। मैं इस खुशी को उतनी ही सहजता से नहीं जी पा रहा था, जितनी सहजता से मेरी पत्नी जी रही थी, क्योंकि मेरे स्वीकार करने के पीछे अनुभूतियों की ऐसी धूमिल रेखाएं थीं, जो मुझे खुशी के सागर में पूरी तरह बह जाने से रोक रही थीं।

खुशियां हमेशा व्यक्ति-सापेक्ष होती हैं। एक ही सूचना किसी के अंग-अंग को महका जाती है तो दूसरे को विषाद की अन्धेरी घाटी में भटकने के लिए मजबूर कर देती हैं। मैं कुछ क्षण के लिए अतीत की एक ऐसी ही घटना की परिधि में चक्कर काटने लगा।

तब मैं बिल्कुल छोटा था। करीब दस-बारह साल का रहा होऊंगा। मेरी भी दादी थी। गोरी चिट्टी। चेहरे पर झुर्रियों की अतेल गाढ़ी-तीखी लकीरें। पोपला मुख। झुकी हुई कमर। सफेद रूखे बाल। कमजोर सर्द हाथ और शरीर का बोझ ढोने में अपनी असमर्थता जाहिर करते हुए दो सूखे-सूखे पाँव। एड़ियों में बिवाई। पानी खाई उँगलियों में फिचफिचाती हुई पोकव। जब भी मुझे दादी की याद आती है, मेरे जहन में ऐसी ही एक धुंधली-सी तस्वीर बनती है।

लेकिन गांव के बूढ़े-पुराने लोग कहते हैं कि जिस दिन दादी ब्याह कर आई थीं, उसके रूप को देखकर गांव भर की आंखे जुड़ा गई थीं। सचमुच किसी राजकुमारी-सी लगती थी वह।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरे दादा गांव के सबसे बड़े जोतदार थे। इसलिए विवाह खूब धूमधाम से हुआ था। छप्पन गांव न्यौते गये थे। कोसभर लम्बी बैलगाड़ी की कतार जब पालकी के पीछे-पीछे कहलगांव पहुंची तो लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा था। गांव-जवार में वर्षों तक इस बारात की चर्चा चलती रहती थी। अब भी बुजुर्गों के मुंह से मौके-बेमौके इसकी चर्चा सुनी जाती है।

समय क्रम से दादा के घर एक के बाद एक छह सन्तानें हुईं—चार बेटे और दो बेटियां।

गांव में जो खाता-पीता परिवार होता है, उस पर सबकी निगाहें लगी रहती हैं। लोग मौका मिलते ही उसे ऐसे चोंच में डाल देते हैं कि देखते ही देखते सब कुछ मटियामेट हो जाता है। दादा भी ऐसे ही पेंच में पड़ गये। खैरा के ठाकुर को मौका मिला और उसने दादा को एक खून के मामले में फँसा दिया।

खैरा और हमारे गांव के सिवाने पर एक पोखर है, जिससे जरूरत के मुताबिक दोनों गाँवों से किसान पटवन के लिए पानी की निकासी करते हैं। उस बार पोखर में पानी कम था और दोनों बैहियारों में गेहूं की फसल सूख रही थी। दोनों गांवों के पंचों ने मिल-बैठकर तय किया कि पारी-पारी से पानी दोनों गांवों के किसानों को दिया जायेगा। तीन-तीन दिन एक लगार में पानी छोड़ने का फैसला हुआ। पहली पारी में ठाकुर के गांव को तीन दिन लगातार दिया गया। फैसले के मुताबिक जब हमारे गांव वालों ने पानी काटना चाहा तो ठाकुर अपने दल के साथ डट गये—"एक पारी और खैरा बैहियार पटने के बाद तुम लोगों को पानी मिलेगा।" ठाकुर की इस गैर-इन्साफी को बर्दास्त करने के लिए गांव का कोई आदमी तैयार नहीं था। शाम को सभा हुई और तय हुआ कि आज रात पानी हमारे बैहियार में बहेगा। सभा के फैसले के अनुसार लाठी, भाला, कुदाल, फरसा लेकर गाँव के लोग पोखर पर जुते। खैरा वाले पहले से वहाँ छिप कर बैठे थे। जैसे ही पानी काटने के लिए हमारे गाँव वालों ने कुदाल चलानी शुरू की, ठाकुर के लठैत टूट पड़े। जमकर मारपीट हुई। कुछ लोगों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के माथे फूचे, कुछ के हाथ-पैर टूटे। ठाकुर का लठैत पुनमा पोखरी पर ही मारा गया। ठाकुर ने मौका देखा और बयान में लिखा दिया कि गाँव के लोगों को मारकाट के लिए गिरधारी लाल ने ही उकसाया। इसी के इशारे पर सितबिया ने पूनमा के पेट में भाला भोंक दिया।

मामला हाईकोर्ट तक गया। पन्द्रह वर्ष तक कोर्ट-कचहरी दौड़ते-दौड़ते सारा का सारा गांव तबाह हो गया। मिसिर टोला के दो और भगत टोली के चार सवांग तीन-तीन साल के लिए वंधा गए। काफी ले—देकर दादा छूट तो गये, किन्तु घर की तबाही ने उन्हें ऐसा तोड़ा कि चालीस साल भी हार न सके। मानसिक परेशानियों ने शरीर को इह तरह जर्जर कर दिया था कि वे सब कुछ अधूरा छोड़कर चल गये—न तो बेटों की पढ़ाई पूरी करवा सके और न वेटियों के लिए योग्य लड़के ही तलाश सके।

एक ओर मामलों-मुकद्दमों का इतना लम्बा चक्कर और दादा की अकस्मात् मौत तथा दूसरी ओर घर में दो-दो ब्याह योग्य लड़कियां बड़का बाबू अचानक ही बुढ़ा गये। दादा की मृत्यु के बाद बड़ा बेटा होने के नाते बड़का बाबू ही घर के मालिक बने। बचा-खुचा खेत-पथार भोली-बखरा पर चढ़ा जवान बहनों को पालकी में बैठाकर भंजने के बाद घर में दोनों शाम चूल्हा जलना मुश्किल हो गया। कहा गया है कि धन जाने से धरम भी जाता है। हमारे घर भी यही हुआ। चारों भाइयों का सोचने का ढंग ही बदल गया। बाबूजी एक-एक पैसा जोड़ते थे और इस अतिरिक्त जोड़ तंगड़ को ही अपनी बुद्धिमानी समझते थे। उन्होंने ही सबसे पहले यह सवाल उठाया कि "जब सब एक बराबर कमाते हैं, सब का परिवार एक बराबर नहीं है तो फिर एक चूल्हा जलने का क्या मतलब ? सब अलग-अलग कमाते, अलग-अलग खायेंगे।"

बड़का बाबू को यह बात बिल्कुल पसन्द नहीं थी। उन्होंने सबको समझाते हुए कहा—"एक ठो पैरुआ का ही परिवार बड़ा है, बाकी तो सबके परिवार में दो या तीन परानी हैं, फिर बेचारा खटता भी तो सबसे वेसी है। हटिया-हटिया जाकर गुड़ बेचता है, रजीन से लेकर डुमरिया तक लदनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समसा है, वह नहीं सूझता। उसके दो बच्चों का खाना फट-से आंख पर चढ़ गया"

"बड़ा मालिक बने हैं। इजमाइल से सदावरत बांटने में क्या बुझायेगा। जरा अपने बखरा से दानवीर कर्ण बन कर दिखायेंगे तो हम भी बूझेंगे कि हमरो घर में हरिश्चन्द्र जी पैदा किये हैं।" बाबूजी के व्यंग्यवाण से बड़का बाबू तिलमिलाकर कुछ बोलना ही चाहते थे कि मंजले बाबू बमक उठे— "मेरे बच्चों का खाना जिस भाई की आंखों में गड़ता है उसके साथ मैं क्या, कोई नहीं रह सकता है, मुझे बांट दो। मैं अपना देख लूंगा।"

"तो यहां कौन पैर में मेंहदी लगाकर बैठा है। पहाड़े-पहाड़ गाड़ी हांक कर बड़ैत हटिया जाओ तब पता लगे कि घोड़ा लदनी और बैलगाड़ी जोताई में क्या फर्क है? बारकोप हटिया में दो टीस गुड़ बेचकर क्या बचता है, वह सबको मालूम है। एक खेर बांस लादना छोड़ दें तो हड़िया चढ़ना बन्द हो हैयैं। बांटकर तो देखो कौन कितना कमाऊ पूत है।"

अन्त में रोज-रोज की खिच-खिच से बचनेके लिए बंटवारा ही एक मात्र रास्ता दिखाई पड़ा। गांव के पंच बुलाये गये और एक-एक पाउ को चार भागों में बांट दिया गया। जो चीज तोड़ी नहीं जा सकती थी, उसका दाम लगाकर बंटवारा किया गया। जमीन के लिए गुरगोटी निकाली गई। अन्त में पंचों के सामने एक अहम सवाल उठ खड़ा हुआ-मां किसके पास रहेगी। चारों भाइयों में से कोई भी मां को अपने हिस्से में लेने के लिए तैयार नहीं था। मानो वह एक ऐसी फालतू चीज हो, जिसकी जरूरत अब किसी को नहीं रह गई थी पंचों ने इस पर बहुत प्रकार से विचार-विमर्श किया और अन्त में यह फैसला सुनाया कि बुढ़िया के हिस्से में तीन बीघा जमीन होगी और जो खमीन जोतेगा, उसी के पास बुढ़िया रहेगी। पंचों के इस फैसले पर चारों भाई फिर झगड़ पड़े। सभी जमीन जोतने के लिए तैयार हो गये। पंचों ने इस समस्या पर पुनः नये सिरे से विचार किया और अपना अन्तिम निर्णय दिया कि बुढ़िया की हर भाई पारी-पारी से एक-एक साल जोतेगा और जिस साल जमीन जिस भाई के पास होगपी, बुढ़िया उसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के पास रहेगी। पंचों के फैसले के अनुसार दादी अपने बेटों के यहाँ साल-साल भर गुजारा करने लगी। बारह महीने गुजार कर दादी जब दूसरे बेटे के पास जाती तो उसे लगता उसकी जिन्दगी फुटपाथ की किसी भिखारिन-सी है, जो पुलिस के खदेड़ने से अपना डेरा बदल लेती है। जिस दिन उसका महीना पूरा हो जाता, बेटा किसी फालतू चीज की तरह उसे पारी के मुताबिक दूसरे भाई के यहाँ रख आता। दादी की कुछ दौलत थी — मैला चिक्कट गेंदरा, फटी चिटी कम्बल, तेल से चुपड़ा हुआ तकिया और एक काठ का पुराना सन्दूक। सन्दूक में क्या था-इसे जानने के लिए सभी भाई कोशिश करके हार चुके थे, किन्तु दादी के केवल एक तर्क के सामने कोई जोर-जबरदस्ती नहीं करना चाहता था। दादी कहती थी "मरूंगी तो सन्दूक लादकर नहीं ले जाऊंगी हाँ, अगर मुझे जलाने के लिए तुम लोगों के पास पैसा न हो तो इसी सन्दूक से जला देना। यह मेरे साथ डोली में आया है और चिता पर भी मेरे साथ ही जायेगा। सब तो बांट लिया। अब इसे तो रहने दे मेरे पास।" इतना कहते-कहते दादी की आंखें छलछला उठती थीं और उन छलछलाई बूढ़ी आँखों के आगे बेटों की जिद्द धराशायी हो जाती।

दादी हर साल पुराने परिवेश से कटकर नये माहौल में जिन्दगी गुजारने के लिए मजबूर थी। यह मजबूरी उसे भीतर ही भीतर छीलती जा रही थी, किन्तु इस टीस को वह जाहिर नहीं कर पाती। उसके लिए हर बेटा अपने जिस्म का टुकड़ा था, इसलिए उसे बड़का के तीन प्राणियों के छोटे-से परिवार से जितना प्यार था उतना ही अनुराग मंझले के कुनबे से भी था। छोटके के घर इतवार-एकादशी को कुछ फलाहार का भी इन्तजाम हो जाता था, किन्तु मंझले के यहां तो सप्ताह में पाँच दिन उपवास ही रखना था। फिर भी दादी की सहानुभूति मंझले के साथ अधिक थी। वह चाहती थी कि हमेशा उसी के पास रहे ताकि उसके हिस्से की जमीन भी सब दिन वही जोते, जिससे उसके बच्चों को साग-सत्तू मिल सके। किन्तु मंझले की बहू बड़के और छोटके की बहुओं से भी बीस थी। दिन-रात बच्चों का गू-गंड़तर करने के बाद भी बुढ़िया को पेट भर अन्न देना पहाड़ लगता था।

हमेशा ठीक समय पर ही दादी का काफिला एक पड़ाव से कूच कर दूसरे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पड़ाव पर पहुंचता। इसमें कभी किसी भाई ने आलस्य नहीं दिखाया। ठीक बारह महीने, उससे न एक दिन कम न एक दिन ज्यादा। मानो साल भर वे लोग दिन ही गिनते रहे हों कि कब बुढ़िया की पारी खत्म हो और यह फालतू बोझ टले।

आखिर एक दिन भगवान ने दादी की मौन प्रार्थना सुन ही ली। दादी पारी के हिसाब से मंझले के यहां रह रही थी। समय क्रम से मंझले बाबू की आर्थिक हालत और भी खराब हो गई थी। जैसे-जैसे परिवार बड़ा होता गया खाने-पीने की किल्लत और बढ़ती गई। दादी उसके घर सबसे ज्यादा मेहनत करती थी। घर के सभी लोग जी-तोड़ मेहनत करते थे। फिर दादी कैसे बैठे रहती? धान उसनने से लेकर मूढ़ी भूंजने और चूड़ा कूटने तक में अपनी बूढ़ी हड्डी तोड़ती रहती। जर्जर शरीर, खाने-पीने की किल्लत और उस पर अगहन-पूस का जाड़ा। दमे ने ऐसा जोर पकड़ा कि दादी बर्दाश्त न कर सकी। उसे हिचकी पर हिचकी आने लगी। घर में कुहराम मच गया।

बाबूजी वैष्णव हैं। पूजा-पाठ उनका दैनिक नियम है। अतः अपने पूजा घर से दौड़कर रामायण उठा लाये और मुझे रामायण पाठ के लिए बैठा दिया। अपने खुद मृत्युशैय्या की बगल में बैठकर सस्वर गीता पाठ करने लगे। मंझला बाबू दादी के शरीर को चन्दन से तिलक करने में व्यस्त हो गये और बड़का बाबू गंगाजल लेकर दादी के मुंह में डालने लगे। छोटका चाचा अपने सीधे-सरल स्वभाव के कारण केवल झर-झर लोर बहा रहे थे। मां एवं चाचियां सुर में सुर मिलाकर रोने लगी थी। एक तो वैसे ही पूरे घर में कुहराम मचा हुआ था, दूसरे गांव के लोग आ-आकर भीड़ बढ़ा रहे थे। मुंह में गंगाजल डालने के दौरान दादी ने कब अन्तिम हिचकी ली, किसी को पता नहीं चला। जब दादी के मुंह में गंगाजल डालने के लिए मेरे हाथ में तांबे की लोटकी पकड़ाई गई तो बाबू जी चिचिया उठे "अरे, मां तो मर गई।"

दादी जमीन पर चिरनिद्रा में सोई थी। चेहरे पर अपार शक्ति थी। जैसे उसे आज दुनिया भर की जद्दोजहद से छुटकारा मिल गया हो। गोरे शरीर पर चन्दन से रामनाम लिख दिये थे, जो बेटों के वैष्णवत्व को प्रमाणित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर रहे थे। माथे पर त्रिशूलनुमा वैष्णवी तिलक, जिसमें बीच की रोली दिप-दिप कर रही थी। मैं पुनः जोर-जोर से रामायण पढ़ने लगा था। गांव के बूढ़े पुराने लोगों के साथ चारों भाई अन्त्येष्टि-क्रिया के बारे में बातचीत करने में मशगूल थे। कुछ लोग चचरी बनाने में जुटे हुए थे। गांव के लोगों का विचार था कि चारों भाई मिलकर सौ-सौ रुपये दें और लाश कहलगांव ले जाई जाए। वहीं गंगा के किनारे दाह-संस्कार किया जाए, लेकिन बाबूजी को यह मंजूर नहीं था। उन्होंने कहा—"माय जिसके घर में मरी है, घट भी वही ले जायेगा। माय को साल भर खिलाने का खर्च तो बच ही गया, किरिया करम करने के समय देखा जायेगा।" "इस पर मंझला बाबू बमक उठे—"ठीक है माय जिसके घर मरी है घाट भी वही ले जायेगा, और सन्दूक भी उसी का होगा।

"सो कैसे होगा?"

"कैसे न होगा?" इतना कहकर मंझला बाबू दौड़कर घर में घुस गये और ठेन-ठाल कर सन्दूक दरवाजे पर ले आए। बीच दुआर पर सन्दूक रख कर उस पर बैठ गए और बोले—"अब पहले यही फैसला हो जाय कि इस सन्दूक पर किसका हक है, तभी लाश उठेगी।"

"हां यह फैसला हो जाता है।" इतना कहकर बाबूजी ने उछल कर मंझला बाबू की गर्दन पकड़ ली और उठा कर पटक दिया। इस उठापटक के कारण हंगामा खड़ा हो गया। बड़का बाबू और चाचा भी यही चाहते थे कि सन्दूक के अन्दर जो हो उसका बराबर बंटवारा कर दिया जाए, इसलिए वे लोग भी बाबूजी के पक्ष में ही बोल रहे थे। दरवाजे पर गांव भर के लोग शव-यात्रा में सम्मिलित होने के लिए जुट गए थे और भीतर कोठरी में दादी की लाश उपेक्षिता की तरह पड़ी बेटों के अन्तिम फैसले की बाट जोह रही थी।

गांव वालों ने बहुत सोच विचार कर फैसला किया कि चूंकि चारों बेटों में से कोई भी बेटा अपनी मां के अन्तिम दाह-संस्कार के लिए खर्च देना नहीं चाहता अतः इस काठ के सन्दूक को ही बुढ़िया का पांचवां बेटा समझा जाए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...र यदि यह भी लाश को गंगा तक ले जाने का खर्च नहीं जुटा पाए तो ...ढ़िया के हिस्से की जमीन भौली पर दे दी जाए।

पंचों के इस निर्णय के बाद काठ का सन्दूक खोला गया। उससे चांदी के ...छ रुपयों के अलावा सोने का एक कंठा निकला। उसे महाजन के हाथ ...गिरवीं रखकर दादी को धूम-धाम से ट्रक पर चढ़ा कर कहलगांव ले जाया ...गया।

चारों बेटे अर्थी को कंधा देकर जिस समय दादी को ट्रक पर चढ़ा रहे थे, मुझे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे वे कंधे तो केवल औपचारिकता जी रहे थे, असली कंधा तो वह काठ का सन्दूक था, जो दादी को गंगा-घाट तक ले जा सका। ★

जो भी है हिन्दू का घर, गूंजे वहाँ वेद का स्वर

परमात्मा की अमर वाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

(मन्त्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित)

लागत मूल्य 500 रु.। साथ में 251 रु. का श्रेष्ट वैदिक साहित्य (वैदिक सम्पत्ति, महाभारत एवं गीता हिन्दी भाष्य समेत अन्य उपयोगी साहित्य) उपहार में प्राप्त करें।

साहित्य न लेना चाहें तो सम्पूर्ण वेदभाष्य 375 रुपये में प्राप्त करें।

वेद मन्दिर, महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम

इब्राहीमपुर, डा० मुखमेलपुर, दिल्ली-110036

आपके काम काज में सदैव हिन्दी का व्यवहार करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैदराबाद सत्याग्रह की स्वर्ण-जयन्ती

—ब्रह्मदत्त स्नातक

भूतपूर्व हैदराबाद रियासत में देशद्रोही, अंग्रेजों के पिट्ठू, घोर अत्याचारी व साम्प्रदायिकता के अलम्बरदार (जहां पाकिस्तान की रूपरेखा बनी) शासन को आर्यसमाज के राष्ट्रीय सत्याग्रह ने शिकस्त दी थी और १७ अगस्त १९३९ को सब सत्याग्रही जेलों से रिहा किये थे। स्टेट कांग्रेस तथा कांग्रेस के उच्च नेताओं और मुस्लिम-लीगियों ने शुरू में उसका विरोध किया था परन्तु विजय होने पर उन्हीं नेताओं ने सत्याग्रहियों को बधाई दी और सफलता पर प्रसन्नता जाहिर की।

कुल मिला कर रियासत तथा बाहर के प्रान्तों एवं विदेश के १२ हजार से ज्यादा नौनिहालों ने इसमें भाग लिया था। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, हैदराबाद गुजरात आदि की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधानों ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया था। इस प्रकार बलिदान एवं तपस्या की उस अग्नि-परीक्षा में आर्यसमाज उत्तीर्ण हुआ। निजाम रियासत ने तब क्षतिपूर्ति के रूप में समाज को २६ लाख रुपये दिये थे। खेद है कि इस राशि का उपयोग बाद में प्रचारकार्य एवं आश्रयहीन अथवा दिवंगत सत्याग्रहियों की सहायता के लिए नहीं हुआ। कांग्रेस एवं उसकी सरकारें बाद में इस आन्दोलन को राष्ट्रीय न कहकर साम्प्रदायिक कहने लगीं।

सन् १९८५ में हैदराबाद के सत्याग्रह को विधिवत् राष्ट्रीय आन्दोलन का अंग घोषित कर दिया गया और गृहमंत्रालय ने एक गैर-सरकारी जाँच समिति गठित कर दी।

समिति की सिफारिश पर २०० से अधिक सत्याग्रहियों को केन्द्र-राज्य सरकारों ने समान पेंशनें जारी कर दी हैं, परन्तु कश्मीर, पंजाब, आजाद हिन्द फौज तथा अन्य आन्दोलनों के लिए गृह मंत्रालय द्वारा गठित इसी प्रकार की सलाहकार समितियों की भाँति इस समिति में सुधार की आवश्यकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिस प्रकार कांग्रेसी नेताओं की सिफारिश पर बहुत-से जाली या अनधिकृत व्यक्ति आज भी सम्मान तथा पेंशन पा रहे हैं और पात्र व्यक्ति उस सुविधा से वंचित हैं, बहुत कुछ वैसी स्थिति वर्तमान समिति में होने की पूरी आशंका है। यह अविलम्ब दूर होनी चाहिये। अब से एक वर्ष पूर्व हैदराबाद सत्याग्रह स्वाधीनता सेनानी समिति की ओर से हमने इस ऐतिहासिक आन्दोलन की स्वर्ण जयंती अगस्त ८९—जुलाई ९० तक क्रमबद्ध रूप में अन्य स्वतंत्रता सेनानी संगठनों के सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए सार्वदेशिक व प्रतिनिधि सभाओं व प्रमुख आर्य नेताओं को पत्र लिखे और सम्पर्क किया, परन्तु उनकी नींद नहीं खुली।

इन समस्याओं को सुलझाने, समाज में उन बचे हुए या मृत सत्याग्रहियों को सम्मान देकर त्याग, बलिदान व समर्पण करने की परम्परा पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

हम आपकी प्रतिक्रिया और सहयोग के लिए आभारी होंगे। स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम की सिलसिलेवार योजना आगे देंगे। अब कुछ ही दिन शेष हैं। ※

क्रान्तिधर्मी : एक नई पत्रिका

मासिक क्रान्तिधर्मि के अब तक तीन अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसके सम्पादक हैं स्वामी अग्निवेश और प्रकाशक हैं श्री कैलाश सत्यार्थी। यह पत्रिका कृषकों और श्रमिकों की आवाज बुलन्द करती है। पत्रिका में प्रकाशिका रचनाओं में जोश और होश दोनों का समावेश है। जून अंक के सम्पादकीय में हमें एक बात खटकी—द्रोणाचार्य को दम्भी नरपिशाच विशेषण से याद किया गया है। द्रोणाचार्य जातिगत भेदभाव से ऊपर नहीं उठपाये, लेकिन इतने से हो वे दम्भी नरपिशाच नहीं हो पाते। पिशाच राक्षस को कहते हैं और इसका शाब्दिक अर्थ हैं, वह व्यक्ति जो जल की जगह मांस का आचमन करे। क्या द्रोणाचार्य ऐसे थे? भड़काने वाली भाषा से समान्यतः बचना चाहिये। इसका इस्तेमाल आखिरी हथियार के रूप में ही किया जाता चाहिए। जून अंक में ही हिन्दी पत्रकारिता पर श्री शम्भुनाथ सिंह का लेख बहुत अच्छा है। हम अपने नये सहयोगी की सफलता की कामना करते हैं।

—सत्यपाल शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इतिहास का एक पृष्ठ

ईश्वरीय न्याय

—सिद्धार्थ

भारतीय इतिहास में महाराणा प्रताप के प्रपितामह महाराणा कुम्भा अथवा कुम्भकर्ण का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। खानवा के युद्ध में बाबर को जबर्दस्त टक्कर देने वाले महाराणा सांगा या संग्रामसिंह इनके पौत्र थे। वीर, विद्वान, धार्मिक तथा अन्यान्य अप्रतिम गुणों के कारण तत्कालीन साहित्यकारों ने इन्हें महाराजाधिराज, परमगुरु, राजगुरु, अभिनव भरताचार्य हिन्दू सुरताण, रावराय, दानगुरु इत्यादि विरुदों से अभिनन्दित किया।

ये कुम्भलगढ़ के अजेय दुर्ग तथा चित्तौड़ के किले में बने विजय स्तम्भ के निर्माता थे। इन्होंने संगीतराज, संगीतमीमांसा इत्यादि ग्रन्थ भी लिखे। ऐसे विद्याविनोदी तथा अन्यतम वीर पुरुष के जीवन का उत्तरकाल ठीक से नहीं बीता। उन्हें उन्माद रोग हो गया था।

ऐसी अवस्था में उनके पुत्र ऊदा ने उनकी हत्या कर दी और मेवाड़ का सिंहासन हस्तगत कर लिया। मेवाड़ के गौरवशाली इतिहास का यह पहला काला पन्ना था, जो ऊदा के देष्कृत्य की कालिख से लिखा गया।

महाराणा के दूसरे पुत्र रायमल को जब अपनी ससुराल में अपने भाई के इस दुष्कृत्य की सूचना मिली तो वह अन्य मेवाड़ी सरदारों के साथ मेवाड़ की ओर बढ़ा। मार्ग में ऊदा के सब सहयोगियों को परास्त करता रायमल ऊदा को पकड़ने चित्तौड़ पहुंच गया। ऊदा में पिता की हत्या के बाद नैतिक साहस नहीं रह गया था। वह पहले से ही भीरू व विलासी स्वाभाव का था। कुम्भा की हत्या के बाद वह अक्सर अपने महलों में ही रहता था। सब लोग उसके इस दुष्कृत्य के लिए उसकी निन्दा करते रहते थे। आखिर हिन्दू इतिहास की यह अप्रत्याशित घटना थी।

ऐसे समय में, जब कोई उसका साथ देने को तैयार न था और रायमल उसे दण्ड देने आ पहुंचा, तो वह चित्तौड़ से छिपता-छिपता भाग निकला और कुम्भलगढ़ में जाकर रहने लगा। परन्तु पितृघाती को पिता के द्वारा निर्मित दुर्ग में रहने का अधिकार कहां! रायमल ने वहां भी उसका पीछा किया। अन्ततः वह परिवारसहित भागकर माण्डू के सुल्तान गयास शाह का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शरणागत हुआ।

महाराणा कुम्भा माण्डू या मालवा और गुजरात के यवनों से आजीवन संघर्षरत रहे। माण्डू के सुल्तान महमूदशाह को तो राणा ने बन्दी बनाकर रखा था और मालवा पर इस विजयस्वरूप चित्तौड़ के किले में विजयस्तम्भ का निर्माण कराया था। ऊदा के माण्डू पहुंचने पर सुल्तान बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि ऊदा के रूप में उसे चित्तौड़ के विरुद्ध तुरुप हाथ लग गई थी।

सुल्तान ने ऊदा को चित्तौड़ के विरुद्ध और उकसाया तथा उसे सहायता देने की बात भी करता रहा, परन्तु सहायता दी नहीं। उसकी दृष्टि ऊदा की लड़की पर थी, वह उसे अपनी बेगम बनाना चाहता था। ऊदा एक तरह से उसकी गिरफ्त में था। वह अपना काला मुंह लेकर चित्तौड़ जा नहीं सकता था और इधर सुल्तान सहायता देने में आनाकानी कर रहा था।

अन्ततोगत्वा ऊदा ने अपनी लड़की का विवाह सुल्तान के साथ करना तय किया और दरबार में सुल्तान के सम्मुख निवेदन कर दिया। ऊदा खुश था कि अब चित्तौड़ पर उसका अधिकार होगा और सुल्तान तो खुश था कि जिस कुम्भा ने उसे नाकों चने चबवाए थे, उसी की पौत्री आज उसकी बेगम बनने वाली हैं। चित्तौड़ के किले पर कलंक का दाग लगने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। जिस चित्तौड़ ने पद्मिनी को म्लेच्छों से बचने के लिए भस्मसात् होते देखा, वही आज प्रसन्नतापूर्वक ऊदा को अपनी लड़की एक म्लेच्छ को देते देख चीत्कार कर उठा, किन्तु ऊदा इस समय चित्तौड़ की पहुंच के बाहर रहकर चित्तौड़ की इज्जत बेच रहा था। परन्तु—

चिन्तयत्यन्यथा जीवो हर्षोल्लसितमानसः।
विधिस्त्वेष महावैरी कुरुते कार्यमन्यथा ॥

अर्थात् मनुष्य कुछ सोचता है और ईश्वर को कुछ और ही स्वीकार होता है। ऊदा जब दरबार से प्रसन्नचित्त उठा, तो बाहर बूंदाबांदी हो रही थी। वह बाहर निकला ही था कि प्रकृति ने उसे उसके किए का दण्ड दे दिया। अकस्मात् बिजली गिरी और ऊदा राख का ढेर होकर रह गया। चित्तौड़ कलंकित होते-होते बच गया। नहीं तो, जो कलंक आमेर के राजा भगवानदास पर लगा—जोधाबाई का अकबर से विवाह करने पर—वह कलंक चित्तौड़ पर बहुत पहले लग चुका होता।

ऐसा हुआ ईश्वरीय न्याय, जिसमें विधि ने चित्तौड़ पर दया की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बच्चे की देखभाल कैसे करें ?

—अमर लाल

बच्चे को स्वस्थ रखना माता-पिता की पूरी जिम्मेवारी होती है। यदि मां और पिता बच्चे की देखभाल करने में जरा भी लापरवाही बरतें तो बच्चे की जिंदगी अन्धरकारमय बन सकती है। इसके लिए चाहिए कि मां और पिता पूरी जागरूकता के साथ बच्चे के स्वास्थ्य की देखभाल करें ताकि बच्चे का स्वास्थ्य ठीक रह सके। आमतौर से बच्चे की देखभाल में मां की भूमिका ही प्रमुख होती है।

गर्भावस्था में मां का नियमित रूप से स्नान करना स्वास्थ्य के लिए काफी लाभप्रद होता है। इससे शरीर में ताजगी बनी रहती है और शरीर ठंडा रहता है। सुबह शाम टहलने से शरीर आलसी नहीं होने पाता और फुर्ती बनी रहती है। खाना खाने में विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। हल्का सुपाच्य भोजन करना चाहिए। इससे पाचन शक्ति अच्छी रहती है। भोज्य पदार्थों में हरी सब्जियां जैसे लौकी, भिंडी, टमाटर तथा पालक लेना उत्तम होता है। ये सब्जियां विटामिनों से भरपूर हैं। फलों में सेब, अंगूर, केला ले सकते हैं। मां को चाहिए कि सामान्य भोजन से थोड़ा और अधिक भोजन लें, क्योंकि जिस खुराक से मां की पूर्ति होती है, उसी से बच्चे का भी पोषण होता है। गर्भावस्था में जौ की रोटी, चाय, चटपटी मसालेदार चीजें लेना उचित नहीं। इन सबका प्रभाव बच्चे पर पड़ेगा। मां के द्वारा ज्यादा चाय और काफी पीने के कारण सामान्यतः बच्चे का शरीर शुष्क हो जाता है तथा हड्डियों के कमजोर होने की संभावना रहती है। अतः गर्भावस्था पर भी कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता और संतान पर्याप्त वजन की होगी।

जब बच्चा प्रारंभावस्था में रहे यानी एक-दो माह की अवधि में, तब बच्चे को हल्के गर्म-गर्म पानी से डिटोल से नहाना चाहिए ताकि शरीर की दुर्गन्ध निकल जाए लेकिन प्रतिदिन डिटोल का उपयोग नहीं करना चाहिए। इससे बच्चे का शरीर सूख जाएगा। इस समय बच्चे को सोने के लिए ज्यादा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से ज्यादा समय देना चाहिए। शांत माहौल में बच्चे के सोने में कोई व्यवधान नहीं होता अतः जब तक बच्चा सोए तब तक उसे अकेला ही रहने दें।

जब बच्चा तीन महीने से अधिक का हो जाए तब बच्चे को क्रमशः काली खांसी, टिटनस, और पोलियो के बचाव के टीके लगवाने चाहिए। ताकि भविष्य में इन रोगों से बच्चे को बचाया जा सके। इस समय बच्चा काफी चंचल प्रकृति का हो जाता है। उसे माचिस जैसे छोटी-छोटी चीजों से दूर रखें। वह उन्हें अपने मुंह में डालने लगता है। माचिस रासायनिक तत्वों से बनी होती है। इससे खतरा रहता है। घर में ऐसी बहुत-सी चीजें होती है जो बच्चा छेड़ने लगता है। इससे सतर्क रहना चाहिए। जब बच्चा छह महीने का हो जाए तब उसे गाजर, टमाटर का रस तथा दाल का पानी देना चाहिए। ऐसे पोषक तत्व शिशु की कोमल पाचनशक्ति के अनुकूल होते हैं। मासूम बच्चे को ज्यादा लाड़-प्यार या उछालना या झकझोरना हानिकारक है। उसके मासूम अगों के टूटने-फूटने का डर रहता है। बच्चे को जबरदस्ती बैठने की आदत डालने से उसकी रीढ़ की हड्डी मुड़ सकती है, अतः अनुकूल स्थिति में ही बैठाने की आदत डालें, जबकि उसकी हड्डियां दृढ़ हो जाएं।

लाल तेल बच्चे को सूखा रोग से छुटकारा दिलाता है। लाल तेल से या सरसों (कड़वा तेल) से बच्चे की मालिश करके १५-२० मिनट तक धूप में लिटा देना चाहिए। सूर्य की किरणों से विटामिन-डी मिलती है, जो हड्डियों को मजबूत व नीरोग बनाती है। बच्चे के सोते समय भी सिर में ४-६ बूंद सरसों का तेल डाल देना चाहिए। इससे मस्तिष्क में रूखापन नहीं होता और स्मरण शक्ति तेज होती है।

बच्चे को चिड़चिड़ेपन की आदत बन जाती है। इससे उसे बीमारियाँ घेरने लगती हैं। इसलिए बच्चे के दिलबहलाव के लिए कोई बाजा, रेडियो की धीमी आवाज करके उसका मनोरंजन करना चाहिए। ऐसा करने से बच्चा काफी खुश हो जाता है। कई समाजों में ऐसी रीतियाँ होती है कि बच्चा रोता रहता हैं लेकिन उसके रोने का कारण मां भी जानने के लिए तैयार नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहती। दरअसल इसके रोने का भी कारण होता है— या तो पाचन की गड़बड़ी रहती है या किसी अंग में दर्द। कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है कि बच्चा रोता-चिल्लाता रहता है लेकिन माताएं उसकी और आदत समझकर कोई परवाह नहीं करती। मां को चाहिए कि बच्चे की हर स्थिति की खबर रखें। उसकी इच्छा को पहचाने। तभी बच्चा ठीक रह सकता है।

बच्चे को अफीम, अल्काहल जैसे नशीले पदार्थ नहीं देने चाहिए। अफीम के सेवन से बच्चा नशे के वश सो तो जाता है लेकिन बच्चे की कोमल नसों पर बुरा असर पड़ता है। अफीम में नशा होता है, जिस बच्चा सहम जाता है। उसे बेचैनी अनुभव होती है और वह सो जाता है। जब बच्चा जागता है (होश में आता है) तब तब उसका शरीर ढीला रहता है।

हर बच्चा अपनी मां से आकांक्षा रखता है कि मेरी माँ मुझे प्यार करें। समय से दूध पिलाए। फिर लोरी का गीत सुनाकर सुला दे।

माँ ही प्रथम गुरु होती है। मां ही बच्चे की जिंदगी का आईना है, जिसमें बच्चा अपनी असलियत का अंदाजा लगाता है।

आइये अब जरा हंस लें

प्रेमिका : "डियर, तुम्हें खाना बनाना तो बहुत अच्छा आता है, जब मैं कभी होटल में खाने के लिए तंग नहीं करूंगी तुम ही खाना बनाना··· क्या इतनी अच्छी रसोई बनाना तुमने अपनी मम्मी से सीखा है।"

प्रेमी : 'मम्मी से नहीं, पिता जी से।"

······ ······ ······

कृष्णा : "डाक्टर साहब, मेरे पिता रात में बड़बड़ाते हैं। कोई उपाय बताइये कि इनका बड़बड़ाना बंद हो जाए।"

डाक्टर : "इस रोग को दूर करने का एक ही तरीका है।"

कृष्ण : "वह क्या ?"

डाक्टर : "आप इन्हें हिन्दी में बोलने का मौका दें।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रोध अनर्थ का कारण है

—ज्ञानार्थी

आज संसार में प्रायः सभी लोग क्रोध की सेवा करने के लिए बिना आज्ञा पाए ही उसके प्रिय सेवक बने हुए हैं। कुछ लोगों का बात-बात में चिढ़ने और नाराज होने का स्वभाव होता है। किसी ने जरा-सी कोई भूल की कि वे उसे फाड़ खाने को दौडते हैं। उनके इस व्यवहार से पराये तो पराये अपने भी पराये हो जाते हैं और वे स्वयं भी समाज में उपहास के पात्र बनते हैं।

जो माता-पिता अपने पुत्र को हर समय डांटते रहते हैं, जो अध्यापक सदैव अपने शिष्य की ताडना करता रहता है अथवा जो मालिक अपने नौकर से हमेशा नाराज होता रहता है, उसकी बातों का कोई असर नहीं होता। ऐसे माता-पिता का पुत्र कभी सुधर नहीं सकता, ऐसे अध्यापक का शिष्य कभी पढ़-लिख नहीं सकता और ऐसे मालिक का नौकर कभी आज्ञाकारी नहीं हो सकता। बल्कि तत्काल उनके मस्तिष्क में बदले की भावना उठती है। वे समझ जाते हैं कि इनकी आदत ही ऐसी पड़ गई है और इस कारण उनकी बात की वे परवाह नहीं करते।

हम यह बात मानते हैं कि अपने से छोटे को शिक्षा देनी चाहिए और उनकी ताड़ना भी करनी चाहिए परन्तु हर समय नहीं। भूल होना कोई आश्चर्य की बात नहीं। भूल मनुष्य से ही हुआ करती है और नवयुवकों से तो भूल का होना और भी सहज है। वे जिस समय भूल करें, उस समय डांट-डपट अथवा मार-पीट से काम न लेकर उन्हें समझाना चाहिए, और आगे के लिए अच्छा काम करने को उत्साहित करना चाहिए क्योंकि "उत्साह में ऐसी शक्ति है, जिसे पाकर निर्बल से भी निर्बल व्यक्ति भी महान् बन सकता है।" बच्चों को मारने अथवा डांटने-डपटने से वे ढीठ हो जाते हैं और फिर उन्हें किसी की बात का भय नहीं रहता। संसार में जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं, उन सबका यही मत है कि बच्चों पर मारने-पीटने की अपेक्षा उन्हें समझाने-बुझाने तथा प्रोत्साहित करने का अधिक अच्छा प्रभाव पड़ता है।

ये सारी बातें केवल बच्चों में ही नहीं, अपितु बड़ों में भी हैं। मान लीजिये कि आप किसी कार्यालय में क्लर्क हैं। आपसे कोई भूल हो गई। यदि आपका साहब आपकी भूल पर आपसे एकान्त में कहे कि—"आप अपनी गलती पर सावधानी बरतें। इस बार भूल हो गई तो हो गई, परन्तु अब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सावधान रहिए, आगे कभी ऐसी भूल नहीं होनी चाहिए ;" तो आपको इससे बुरा न लगेगा और आपका मन यह स्वीकार करेगा कि गलती हो गई, अब कभी ऐसी भूल नहीं होनी चाहिये। परन्तु इसके विपरीत यदि आपका साहब आपके साथियों के सामने आपसे पूछे कि—"आपने भूल क्यों की ? आप बहुत सुस्त और लापरवाह हैं। मैं आपकी रिपोर्ट करूंगा। आप पर जुर्माना करूंगा ;" तो शायद आपको अपनी भूल का पश्चात्ताप नहीं होगा, अपितु आपको अपने साहब के कड़े व्यवहार पर क्रोध आयेगा। अतएव यह स्पष्ट है कि जितना काम समझाने-बुझाने से निकलता है, उतना चीखने-चिल्लाने और डाँटने-डपटने से नहीं।

चिड़चिड़ेपन की आदत जिस मनुष्य में है और जो सदा दूसरों के दोष ढूंढता रहता है, वह दूसरों की दृष्टि में तो बुरा होता ही है. स्वयं भी सुखी नहीं रह सकता। सदा परदोष-दर्शन करते रहने से उसकी गुण-ग्रहण शक्ति नष्ट हो जाती है। उसका मन सदैव दुःखी रहता है। उस समय तो क्रोध का कोई पारावार नहीं रहता, जब उसकी सन्तान अथवा उसके शिष्य या सेवक उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते और पलटकर उसे जवाब तक दे देते हैं। परन्तु इसमें सिवा उसके और किसी का अपराध नहीं है। वह स्वयं इसके लिए उत्तरदायी है।

जो अक्रोधी है, वही संसार पर विजय प्राप्त कर सकता है। तभी तो दिवंगत स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती ने कहा है कि—"वही वीर है, जो मन के क्रोध को मन में ही मार डाले और वह तो सर्वविजयी है, जिसके मन में भी क्रोध न आता हो।" पर ऐसे भी बहुत लोग हैं, जो बाहर तो बड़े सच्चे, प्रियवादी और नीतिज्ञ बनते है, परन्तु घर में पैर रखते ही उनकी जुबान उनके काबू से बाहर हो जाती है। वे जरा-जरा सी बात पर बिगड़ने लगते हैं। ऐसे लोगों को याद रखना चाहिए कि वे असभ्य लोग घर के और समाज के ही नहीं, वरन् पूरे राष्ट्र के शत्रु हैं। उनका घर सदा दुःखमय बना रहता है, जिसमे किसी को सुख नहीं मिलता।

अतएव सुख और शान्ति से जीवन बिताने के लिए इस बात की महती आवश्यकता है कि सबके साथ और विशेषकर घर के लोगों के साथ सदा सद्व्यवहार करें और मीठे वचन बोलें। जिस समय आप घर में पाँव रक्खें, सारे घर में हर्ष फैल जाये। आपके बच्चे दौड़कर आपके आगे-पीछे जमा हो जायें, न कि यह कि आपकी सूरत देखते ही सब भयभीत हो जायें और इधर-उधर छिपने लगें।

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहनों के लिए काम की बातें

—सरला देवी

प्रत्येक परिवार में सद्ग्रहणियों को अपनी घर-गृहस्थी के सुचारु व सफल ढंग से संचालन के लिए शारीरिक और मानसिक सभी प्रकार का श्रम करना पड़ता है। घर के सामान्य कामकाज के दौरान भी कई बार ऐसा होता है कि बहुत छोटे-छोटे कामों के लिये वे किसी साधन की बाट जोहती रहती हैं। यहां कतिपय सुझाव प्रस्तुत हैं, जिन्हें काम की बातें भी कहा जाए तो अन्यथा न होगा। जिन्हें ध्यान में रखने से उनकी कई समस्याओं का बहुत आसानी से निदान हो सकता है।

भोजन बनाते समय रसोई घर में कई बार अंगीठी, चूल्हे या गैस की आग से हाथ आदि जलने की स्थिति आ जाती है। यदि कभी किसी महिला अथवा उसके किसी बालक का हाथ-पांव ऐसी ही स्थिति में जल जाए तो त्वरित उपचार यह है कि उस जले हुए अंग पर उसी समय नमक या तारपीन का तेल मल दिया जाये। ऐसा कर देने से जले हुए स्थान पर छाला नहीं पड़ेगा।

कई बार ऐसा भी होता है कि कई कपड़ों आदि पर जंग लग जाने से दाग पड़ जाते हैं। इन्हें हटाने या मिटाने का सीधा और सरल उपाय यह है कि इस दाग को फटे हुए दूध से धो डालिये, वह छूट जाएगा।

कई बहनों को अपने या अपने बच्चों के सिर में फ्यास हो जाने से भी परेशानी उठानी पड़ती है। किन्तु यदि सिर के बालों को धोने से पहले नींबू का रस मल लिया जाए तो यह फ्यास आसानी से दूर हो जाती है।

हाथों में काम करते-करते कभी-कभी ठेक पड़ जाती है तो कई बार अनेक बहनों को गाँठ के दर्द से भी दो-चार होना पड़ता है। इन दोनों से मुक्ति प्राप्त करने में नींबू का रस चमत्कार का काम करता है। आप उस भाग को गर्म पानी में भिगो लें और नींबू के रस की पट्टी बांध दें। इस कष्ट से छुटकारा मिल जाएगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चांदी के बर्तन तो हर घर में होते नहीं किन्तु फिर भी चांदी के कुछ आभूषण आदि सामान्य ग्रामीण परिवारों में भी थोड़े-बहुत होते ही हैं। ऐसे बर्तनों या आभूषणों को यदि उबले हुए आलू के पानी से धो दिया जाए तो वे तुरन्त साफ हो जाते हैं।

कई बहिनों के नाखून खुरदरे होने के कारण उन्हें परेशान करते हैं। यदि उनमें चमक नहीं है तो आठ दिन उन्हें तारपीन के तेल में धो लिया जाए तो नाखूनों का खुदरापन जाता रहेगा और उनमें चमक भी आ जायेगी।

कुछ बहनों के मुख पर काफी मुंहासे हो जाते हैं और उनके कारण कई बार पीड़ा इतनी अधिक बढ़ जाती है कि मुंह को खोलना भी कठिन हो जाता है। इस प्रकार तकलीफ से बचने के लिये स्नान से पहले तारपीन का तेल लगाना एक सस्ता और सरल उपाय है।

तारपीन का तेल एक और स्थिति में भी अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाता है। वह है शरीर पर वर्षा के दिनों में हो जाने वाली छोटी-छोटी फुंसियां। यदि ऐसी फुंसियों पर चार-पांच मिनट के लिए तारपीन का तेल लगाकर उन्हें धो लिया जाये तो इन फुन्सियों से बहुत शीघ्र ही छुटकारा पाया जा सकता है।

आइये अब जरा हंस लें

राजीव : "मम्मी - मम्मी क्या आप सर्कस में काम करती हैं ?"

मम्मी : "नहीं तो तुम्हें किसने कहा…?"

राजीव : "वही सामने वाली आंटी अपने नए किरायेदार को कह रही थी कि आप पापा को उंगलियों पर नचाती हैं।"

❋ ❋ ❋

शिव : (अपने नेता पिता से) : "पिताजी आप चुनाव सभाओं, उद्घाटनों और सदन में इतना खुल कर कैसे बोल लेते हैं ?…घर में तो आपकी आवाज नहीं निकलती ?"

पिता : "इसलिए कि वहां तुम्हारी मां का डर नहीं होता।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वर्गीया प्रियंवदा चतुर्वेदी

—मोहनलाल शर्मा

स्वर्गीय प्रियवदा चतुर्वेदी अपने समय की आदर्श आर्य तथा राष्ट्रीय महिला रही हैं। आपका जन्म कोटा के निकट सुकेत में १२ मार्च १९१० को …हुआ था, जहां आपके पिता पं० मुनीन्द्र जी चतुर्वेदी उन दिनों स्टेशन …स्टर थे। आपके मायके का नाम गंगाबाई था, परन्तु जब सन् १९२६ में …सुरायल आये तो आपके पति श्री युगल किशोर जी चतुर्वेदी ने स्वयं आप… यज्ञोपवीत संस्कार करके आपका नाम प्रियंवदा रख दिया।

आप जीवन पर्यन्त सच्चे अर्थों में अपने पति की अर्धांगिनी सहधर्मिणी …या सहगामिनी रही थी। आपने उनके सार्वजनिक, सामाजिक तथा राज…तिक जीवन में पूरा-पूरा साथ दिया था। जन्म सन् १९२९-३० के दिनों में …थुरा रहते हुए चतुर्वेदी जी कांग्रेस आन्दोलन में सक्रिय भाग ले रहे थे। …आप भी विदेशी वस्त्रों तथा शराब की दुकानों पर धरना देकर देश सेवा …का कार्य करती रही थीं। तदुपरान्त आप रिवाड़ी, भरतपुर तथा जयपुर …हां-जहां भी रहीं, राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेने के साथ-साथ आर्यसमाज …विविध आयोजनों में सक्रिय सहयोग देती रहीं।

रिवाड़ी में आप महिला आर्यसमाज की अध्यक्षा रहीं तथा भरतपुर और …यपुर में आप समय-समय पर आर्यसमाज के उत्सवों में भाग लेकर अपने …विचार प्रकट करती रहती थीं। आप राजस्थान महिला कांग्रेस की संयोजिका …हने के अतिरिक्त भरतपुर नगरपालिका के अध्यक्ष पद पर रहीं।

१५ मई सन् १९७४ को लम्बी बीमारी के बाद आपका निधन हो गया। …आपकी स्मृति मे आपके पति चतुर्वेदी जी ने प्रियंवदा वाटिका तथा आपकी …वक्ष प्रतिमायुक्त मन्दिर का निर्माण कराया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युवको उठो जागो !

—ज्ञानेश्वर्य एम. ए., दर्शनाचार्य

मानव समाज की स्थिति देखकर आप स्वयं भी अनुभव करते होंगे कि आज का मनुष्य अज्ञान से ग्रस्त होकर अपने स्वरूप को भूलकर स्वयं को केवल मांस-पिण्ड तथा इन्द्रियों का समुदाय मानकर दिन-रात क्षणिक ऐन्द्रिय विषय भोग भोगने के लिए भोग-साधनों को एकत्रित करने हेतु ही चिन्तन कर रहा है। उसी के लिए योजना बना रहा है। उसी के लिए दौड़धूप कर रहा है। इस भोगलिप्सा की दौड़ में मनुष्य ने जीवन और व्यवहार की समस्त नैतिकताओं को ताक पर रख दिया है और स्वयं पशुत्व श्रेणी की निम्न रेखा को भी लांघ रहा है।

मानव जीवन में परस्पर प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, धैर्य और संयम नष्टप्राय होता जा रहा है और इनके स्थान पर हिंसा, द्वेष, असत्य, छल, कपट, अन्यायादि से संबंधित कुप्रवृत्तियां बढ़ती जा रही हैं। परिणामस्वरूप मनुष्य एक-दूसरे से भयभीत हैं, शंकित हैं, दुःखी हैं। समाज में आज न धन सुरक्षित है, न तन, और न ही चरित्र।

इस पर विडम्बना यह है कि देश की प्राचीन गरिमामयी संस्कृति, सभ्यता, रीति-नीति, इतिहास तथा आदर्श परम्पराओं से अनभिज्ञ देश के कर्णधार व्यक्तिगत तुच्छ स्वार्थों की पूर्त्ति के लिए राष्ट्रीय व सामाजिक हितों को योजनाबद्ध रूप से नष्ट करते चले जा रहे हैं। भविष्य में इन कार्यों के कैसे भी दुष्परिणाम क्यों न निकलें, इस बात की इन्हें जरा भी चिन्ता नहीं है।

अगली बात—जिस ओर मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा वह है विदेशियों के कुचक्र की। हजारों मील दूर से अपनी स्वर्गसमान सुख-सुविधाओं को छोड़कर हमारे देश में आकर, यहां की क्षेत्रीय भाषाओं को सीखकर, प्राणों की भी परवाह न करते हुए, बीहड़ जंगली प्रदेशों में रहने वाले निर्धन, निर्बल, अशिक्षित, भोले-भाले हमारे भाइयों के बीच जाकर सेवा-परोपकार-मानवता के नाम पर विभिन्न प्रकार की सुविधाएं प्रदान करके बदले में उनकी आत्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को मारकर विधर्मी बनाते जा रहे हैं। हजारों की संख्या में दिन-रात कार्य करने वाले ये विदेशी हमारी तरह ही युवक हैं।

इसके बाद मैं आपका ध्यान देश में पलने वाले और नित नये उत्पन्न होने वाले मतों, पंथों, गुरुओं और सम्प्रदायों की ओर ले जा रहा हूं, जो हजारों की संख्या में हैं। ये मत, पंथादि यथार्थ ईश्वर, धर्म, पूजा, भक्ति से दूर अपना ऐसा विकृत, भद्दा और अवैज्ञानिक स्वरूप अपनाये हुए हैं कि ज्यों-ज्यों ये अपना प्रचार-कार्य बढ़ाते जा रहे हैं, त्यों-त्यों बुद्धिजीवी समाज, विशेषकर देश की भावी पीढ़ी युवाओं में ईश्वर तथा धर्म से सम्बन्धित मान्यताओं के प्रति श्रद्धा घटती ही चली जा रही है। बल्कि अधिकतर पठितवर्ग इनके कार्यों से घृणा करता है और कभी-कभी तो खुलकर विरोध भी।

ऐसी विकट परिस्थितियों में, जबकि मानव समाज में पतन की चरम सीमा आ चुकी हो, पाश्चात्य भोगवादी सभ्यता एवं नास्तिकता का ताण्डव नृत्य दिन दूनी रात चौगुनी गति से विस्तार कर रहा हो; हम वैदिक धर्म से परिचित युवकों के लिए क्या यह उचित है कि हम अपनी आँखें बन्द कर लें, कानों पर हाथ रख लें और अपने घरों में मूक बनकर बैठे रहें ?

हजारों वर्षों के पश्चात् एक महान् ऋषि ने सत्य सनातन ईश्वरीय वैदिक धर्म के आधार पर मानव समाज के सर्वांगीण विकास के लिए एक योजनाबद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा अपने ग्रन्थों में प्रस्तुत की और अपने अनुयायियों से यह आशा की कि "वे मेरे कार्यों को पूरा करेंगे।" हम यह भी जानते हैं और विश्वास भी रखते हैं कि वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार से ही परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व में स्थायी सुख और शान्ति की स्थापना हो सकती है—किसी अन्य मत, पन्थ या सम्प्रदाय से नहीं। क्योंकि वैदिक धर्म ही ऐसा धर्म है, जो सार्वभौम है और इसके सिद्धान्त तर्क-युक्ति-प्रमाण से सिद्ध हैं—विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

परन्तु एक बात ध्यान में रखने की है कि सत्य की जीत अपने आप नहीं होती, बल्कि सत्य को पुरुषार्थ करके ही जिताना पड़ता है। विदेशों से आये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्य मतावलम्बी युवक, जो हजारों की संख्या में हैं, हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यालय, शिविर, सेमिनार, प्रदर्शनी, उत्सवों, वाहनों, व्याख्यानों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दिन-रात अपना प्रचार कार्य कर रहे हैं। दूसरी ओर हम ईश्वरीय वाणी वेद तथा ऋषिकृत आदर्श ग्रन्थों को अपने घर या समाज की अलमारी में बन्द रखे हुए उनका प्रचार-प्रसार करने हेतु सप्ताह, मास, वर्ष में एक दिन भी न लगाते हुए, तन, मन, धन का त्याग किये बिना कैसे यह विश्वास कर बैठे हैं कि विश्व भर में वैदिक धर्म का प्रचार हो जायेगा, घर-घर में यज्ञ की ज्योति जल उठेगी, वेद की ऋचाएं गूंजेंगी, पाखण्ड, अन्ध-विश्वास और नास्तिकता का विनाश हो जायेगा, अश्लीलता, मांस, शराब और जुए का प्रचलन समाज से मिट जाएगा। संस्कृत भाषा, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली, वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना हो जाएगी और विश्व में वैदिक चक्रवर्ती साम्राज्य का प्रादुर्भाव हो जायेगा।

ऐसा कदापि सम्भव नहीं। बाजार में वस्तु उसकी ही बिकती है, जो ग्राहक के सामने वस्तु का प्रदर्शन करता है, उसके गुणों को बताते हुए उसकी श्रेष्ठता को सिद्ध करता है। प्रेमपूर्वक उससे बातचीत करके उसे विश्वास में लेता है। इसके विपरीत, दूसरे व्यक्ति की वस्तु कितनी ही श्रेष्ठ क्यों न हो, वह दुकानदार नगर के अन्दर किसी गली में दुकान लेकर, बिना बोर्ड लगाए, अस्तव्यस्त अवस्था में वस्तु को कोने मे रख दे और उसे वस्त्र से पूरा ढंक दे, तब ऐसी अवस्था में विज्ञापन व प्रदर्शन के बिना उसकी वस्तु कैसे बिक सकती है। ठीक ऐसी ही अवस्था आज हम वैदिक धर्म के अनुयायियों की हो रही है।

यह भी स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि पूर्वनिर्दिष्ट सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान अधिकाधिक डाक्टरों, वकीलों, इन्जीनियरों के बनाने से नहीं होगा। इन समस्याओं का समाधान तो वेद-प्रतिपादित तथा ऋषि-निर्दिष्ट अध्यात्मिक शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार से ही होगा। ऋषियों ने स्पष्ट घोषणा की है कि जिस देश के लोग सच्चे ईश्वर व धर्म को भुला देते हैं, वह मनुष्य समुदाय व राष्ट्र पतन को प्राप्त हो जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस वस्तुस्थिति को समझते हुए भी आज हम सामाजिक व राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के अपने कर्त्तव्य से विमुख होकर पलायन करेंगे या उपेक्षावृत्ति अपनाये रहेंगे, तो आने वाली पीढ़ी हमारी अकर्मण्यता पर हमें कोसेगी।

केवल अपने माता-पिता या सन्तति को भोजन खिला देने से ही हमारे कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती, जबकि देश के लाखों—करोड़ों मानव अज्ञान, अभाव और अन्याय से पिसते हुए, भूखी-नंगी अवस्था में पशुओं से भी निकृष्ट जीवन व्यतीत कर रहे हों। यदि इनकी उन्नति के लिए हमारे हृदय में आत्म-बलिदान की कोई भावना नहीं उठती, तो कैसे हम अपने आप को मानव कह सकते हैं? आर्य (श्रेष्ठ) कहलाने की बात तो बहुत दूर की है।

सैकड़ों-हजारों वर्षों से वेद तथा ऋषि-प्रणीत ग्रन्थ अपने अध्येताओं की प्रतीक्षा करते-करते जीर्ण-शीर्ण हो रहे हैं। क्या हम उन्हें नष्ट होने देंगे? हम समय-समय पर आत्मा में स्फुरित होने वाले उच्च कोटि के आध्यात्मिक एवं देशोद्धार के उत्कृष्ट विचारों को कब तक दबाते रहेंगे और आत्महनन करते रहेंगे?

आओ, पारिवारिक तुच्छ स्वार्थ की भावनाओं से ऊपर उठकर, प्रतिकूलताओं का सामना करके, विभिन्न कष्टों को तपस्या मानकर सहन करते हुए, मान-अपमान को जीत कर, ऋषियों के महान् आदर्शों को सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ जीवन में उतार कर, ईश्वर-प्रदत्त तन-मन-धन, बल, विद्या आदि समस्त साधनों को ईश्वर की ही आज्ञाओं की पूर्ति के लिए समर्पित करें। एक स्वर्णिम अवसर हमारे समक्ष है। देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा करने के लिए अब भी यदि हम नहीं जागेंगे, कुछ नहीं करेंगे तो वृद्धावस्था में पश्चात्ताप के सिवा कुछ भी नहीं बचेगा। ★

दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा का चुनाव

दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा के चुनाव में श्रीमती शकुन्तला आर्या प्रधान, श्रीमती कृष्णा चढ्ढा मन्त्राणी और श्रीमती तारा वैद कोषाध्यक्षा चुनी गईं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रूस की धरती पर ईश्वर की वापसी

— डा. श्यामसिंह शशि

गिरिजाघर की घंटियां···पूजा के लिए प्रज्वलित की गई मोमबत्तियां, बाइबिल का पाठ करते हुए पादरी···टीकाएं बांचते विशप और स्वतंत्रता की सांस लेते हुए चर्च, कैथेड्रल।···

मैं टी.वी. खोलता हूं तो विशप अपने परंपरागत श्वेत चोगे तथा हैडकैप के साथ दिखाई पड़ते हैं। लगता है कि कोई सरमन दिया जा रहा है। रविवारीय सर्विस की तरह का कोई दृश्य है। मैंने आंखों को मला, फिर बाहर की ओर झांका। विश्वास नहीं हो पा रहा कि मैं सोवियत रूस में हूं या अन्यत्र। पर यह भारत या इटली का दूरदर्शन नहीं है। मास्को टी. वी. केन्द्र है, जहां से समाचार प्रसारित किये जा रहे हैं।

एक सुखद आश्चर्य में डूबता जा रहा हूं। कार्ल मार्क्स ने धर्म को अफीम इसलिए कहा था कि उस पर जिन धर्मपुरुषों का अधिकार था, वे मानव हित की अपेक्षा अत्याचार और दुराचार में प्रवृत्त थे। धर्म के नाम पर हिंसा, हत्या भ्रष्टाचार अनाचार, आदि का बोलबाला था। सीधी-सादी जनता नारकीय जीवन बिता रही थी। वस्तुतः यह स्थिति किसी धर्म विशेष के साथ ही नहीं जुड़ी थी, बल्कि सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में विद्यमान थी।

आज रूस की धरती पर ईश्वर की वापसी है। यत्र-तत्र आस्था के स्वर हैं। धर्म अफीम के रूप में नहीं, मानव-कल्याण के रूप में उतर रहा हैं।

मास्को के पंचतारा रशिया होटल में ठहरा हूं। हमारे देश में इतने बड़े होटलों का स्कोप अभी नहीं है। लोग प्रचलित परंपराओं तथा व्यवस्था पर नुक्ताचीनी करते दिखाई पड़ते हैं। राजनीति भी बहस से अछूती नहीं लगती।

नए सोवियत रूस की हवा में अब पेरेस्त्रोइका तथा ग्लास्नोस्त की ताजगी है। लगता है कि लौह आवरण जैसे शब्द अब रूसी शब्दकोशों में ही बंद रहेंगे। शायद मिखाइल गोर्बाचेव की नई नीति के परिणाम हैं।

पेरेस्त्रोइका से आशय हैं साम्यवाद की पुनरंचना तथा ग्लास्नोस्त खुलेपन का पर्याय है। चीन भी इन शब्दों से चिंतित है पर उत्सुक भी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं रूस की सद्भावना यात्रा पर आया हूं। लेकिन यह यात्रा मेरे लिए अध्ययन और मिशन के रूप में बदल गई है। बचपन में एक स्वप्न देखा था। रूस हमारे दिल में बसता है—वह हमारा सच्चा और अच्छा मित्र है। वहां के लोग हमें हृदय से प्यार करते हैं और हम भी से भीतर वैसे ही चाहते हैं उन्हें। क्या उनसे मिलने की कल्पनाएं कभी साकार रूप लेंगी—यह सोचते-सोचते आयु की एक आधी शताब्दी निकल गई। इस बीच अमेरिका, कनाडा, पश्चिमी जर्मनी तथा पूरे यूरोप के अनेक देश घूम आया। दर्जनों देशों की यात्राएं लेखक के रूप में तय कीं और वहां के जन-जीवन पर भी खूब लिखा, परन्तु न जाने क्यों हम जिससे जितना अधिक प्यार करते हैं, उसकी प्राप्ति उतनी ही देर से होती है और यही मेरे साथ भी हुआ।

सपना साकार हुआ। शायद मेरे आस्थावान् मन के लिए यह वातावरण और अधिक मौजूं था।

अपनी दुभाषिया के साथ यहां के गिरजाघरों को देखने निकल पड़ता हूं। टी. वी. पर देखे दृश्यों को अपनी आंखों से देखने का मन है। मास्को में कई पादरियों से भेंट करता हूं। कुछ नन भी मिलती हैं। एक छप्पन-वर्षीय पादरी से चर्चा छिड़ती है।

'आपके चर्च में किन वर्गों के लोग अधिक आते हैं?

'प्राय: सभी वर्गों के। चर्च सभी पुरुषों और महिलाओं के लिए खुले हैं।

'लेकिन क्या बुद्धिजीवी भी आते हैं?'

'अवश्य। पर सभी नहीं।'

'किशोरों की संख्या कितनी होती है?'

'बहुत कम।'

'और महिलाओं की?'

'बहुत।'

'और कम्युनिस्ट पार्टी के कर्मठ कार्यकर्ताओं की?'

पादरी चुप हो गए। उनके मौन में मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया था।

अगले दिन मैंने अपने कम्युनिस्ट पार्टी के एक मित्र से यही प्रश्न किया तो वह बोला—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'चर्च जाना न जाना अपने मन के ऊपर है। लेकिन मैं नहीं जाता।'

एक समाजशास्त्री के स्वर में मैंने कई वर्गों के सदस्यों से अलग-अलग सर्वेक्षण की तरह प्रश्न किए, तो ऐसा लगा कि चर्च राजनीति की छाया से पूर्ण मुक्ति की ओर अग्रसर है। वैसे यह क्या कम है कि रूस में चर्च स्थापना के एक हजारवें वर्ष पर अनेक देशों के धर्मपुरुष भी उपस्थित हुए थे। भारत से भी कुछ लोग गये थे। राजकीय स्तर पर इस प्रकार के समारोहों का किया जाना स्वयं एक कौतूहल का विषय लगा। यह घटना भी मेरी यात्रा के दौरान ही घटित हुई थी।

मैं जिस एयरोफ्लोट की उड़ान में दिल्ली से उड़ा था, उसमें एक स्वामी जी भी बैठे थे। काषाय वस्त्रों में वह प्रतिमूर्ति मेरे मन-मस्तिष्क पर छाई थी किंतु मैंने यह जानने की धृष्टता नहीं की थी कि वे रूस किसलिए जा रहे हैं? बाद में पता चला कि कुछ अन्य संन्यासी तथा धर्मपुरुष भी चर्च समारोह में भाग लेने गए थे।

मानव संसाधन मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही भी आमंत्रित थे। कई अन्य देशों के प्रतिनिधि आए हुए थे। मास्को तथा रूस के दूसरे नगरों में एक विचित्र समागम था।

रूस में कभी सूर्योपासना तथा अग्निपूजा भी होती थी

रूस में चर्च ग्रीक से आया या कहीं और से, यह बात इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं है। सवाल आस्था का है। विश्वास का है। वस्तुतः रूस में कभी सूर्योपासना तथा अग्नि पूजा भी होती थी। आर्यों का मूल स्थान मध्य एशिया माना जाता है। यह स्थान रूस तथा इसके समीपस्थ देशों में रहा होगा। यहीं एक स्थान है बाकू, जो आजकल सोवियत अजरबेजान गणतंत्र की राजधानी है। बाकू के समीप सुराहानी नामक एक कस्बा है, जिसमें एक भारतीय मंदिर था, जहां भारतीय अग्निपूजा करते थे। यज्ञ भी अग्निपूजा का ही स्वरूप है, जो हिंदुओं के अतिरिक्त पारसी सभाओं में भी प्रचलित कर्मकांड का अंग है। यह स्थान प्राचीन व्यापार मार्ग से जुड़ा है। यात्री कैस्पियन सागर से वोल्गा का तटपथ पकड़ते और फिर अस्त्राखान नगर की ओर मुड़ते थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

भारतीयों का यह रास्ता भली-भांति मालूम था। सबसे पहले सत्रहवीं शताब्दी में इस भारतीय नगरी का पता चला था। इस नगरी के वासी स्वयं को मुलतानी कहते थे। वे अस्त्राखान में भी रहते थे। वे हिंदू थे और संभवतः कुछ सिख भी रहे होंगे। यह मंदिर अठारहीं शताब्दी में बनाया गया था, जिसमें प्रार्थनास्थल, वेदी आदि थे। दीवारों पर देवनागरी तथा गुरुमुखी लिपि में पंद्रह शिलालेख हैं। कुछ श्लोक तथा मंत्र अशुद्ध संस्कृत में मिलते हैं। शेष भारतीय भाषाओं में हैं। शिलालेखों का पहला शब्द श्रीगणेश से शुरू होता है।

अठारहवीं शताब्दी के अंतिम चरण तथा उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में दूर-दूर से रूस तथा यूरोप के यात्री भी इस भारतीय मंदिर को देखने आते थे। वहां अठारहीं शताब्दीं के मध्यकाल में ४०-५० संन्यासी स्थायी रूप से रहते थे। यात्रियों का कहना था कि कुछ महात्मा सालों तक एक हाथ ऊपर उठाए खड़े हुए रहते हैं। वास्तव में यह नगरी तीर्थस्थान बन गई थी। अस्त्राखान नगर से इस नगरी के अत्यन्त निकट संबंध थे। सन१८०६ में बाकू क्षेत्र सोवियत रूस का अंग बन गया। अस्त्राखान के व्यापारी इस मंदिर को आर्थिक सहायता दिया करते थे। भारतीय मूल के अस्त्राखानवासी उत्तमचंद मोहनदास ने मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए हजारों रूबल दान में दिए थे। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्यकाल में इस नगरी का शनैः-शनैः ह्रास होता गया सभी संन्यासी धीरे-धीरे स्थान छोड़ते गए और यों एक दिन वेदी की आग भी बुझ गई।

आजकल इस स्थान पर अभिलेखागार है, जिसमें अनेक भारतीय पाण्डलिपियां मिलती हैं। इन कृतियों में अग्नि-उपासना संबंधी साहित्य मिलता है। कालांतर में यहाँ इस्लाम और फिर ईसाई धर्म का प्रचार बढ़ता गया।

इतिहास घटनाओं की पुनरावृत्ति कहा जाता है, किंतु सोवियत रूस में धार्मिक इतिहास घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो कर एक नये युग का सूत्रपात है। मास्को अन्तर्राष्ट्रीय नगर है और संपूर्ण विश्व की आँखें उसकी ओर लगी हैं। आइए, यहां के गिरजाघरों को भी देखने चलें।

मास्को के गिरिजाघर

मास्को का सर्वप्रथम जिक्र ११४७ के गजटों में आता है। एक ऐतिहासिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तथ्य के अनुसार ११५६ में प्रिंस यूरो डोलगारुकी ने इस शहर की स्थापना की थी लेकिन १२३८ में खान बातू की सेना ने सब कुछ ध्वस्त कर दिया था। मास्को कई बार उजड़ा और बसा। कई संग्राम झेलने पड़े। १२६३ में ग्रेट प्रिंस अलेग्जैंडर यारोस्लाविच नेवस्की ने यहाँ का शासन अपने छोटे-बेटे डेनिलि को सौंप दिया, जिसने १२८२ से १३०३ तक राज्य किया।

मास्को में क्रेमलिन का निर्माण १३३१ में हुआ। यहाँ छोटे-बड़े चर्च बनने तो पहले से ही शुरू हो गये थे। अजमशन का बड़ा चर्च पंद्रहवीं सदी में बना। इसके निर्माणकाल में कई बाधाएं आईं और एक दिन चर्च की बिल्डिंग ढह गई। एक कथन के अनुसार यह बिल्डिंग अपने ढंग की थी : ऊंचाई, चमक सज्जा आदि की दृष्टि से रूस से पहले ऐसा चर्च नहीं बना था।

अन्नुनसिएशन चर्च १४८४-१४८९ में तैयार हुआ था १४८४-१४८६ में डिपोजिशन आफ द रोब चर्च का निर्माण हुआ। अरचेनगेल कैथेड्रल चर्च १५०५ में तथा टवेलु अपोस्टल्स चर्च १६५२-५६ में बना।

मास्को के सभी चर्च आज मुक्त अनुभूतियों का अहसास कर रहे हैं। लेकिन मेरी यात्रा का तो यह प्रथम पड़ाव है, जो मस्क्वा नदी के तट से आरम्भ होता है। वोल्गा कुछ दूर पर स्थित है और नीपर की दूरी ५०० किलोमीटर से भी ऊपर है, जो मेरी इस यात्रा का लक्ष्यबिंदु है।

मेरे सामने रूस के महान् लेखक मैक्सिम गोर्की की पंक्तियाँ उभरने लगती हैं, जिनमें जारशाही के समर्थक चार पिताओं के नाम दिये गये हैं – ईश्वर-पिता-जार-पिता, पादरी-पिता, और बाप-पिता। वस्तुत: रूस की भोली-भाली जनता कभी इन पिताओं के पाश में जकड़ी हुई थी और उसके लिए कोई रास्ता नहीं था।

इसी संदर्भ में मैक्सिम गोर्की का एक पत्र उल्लेखनीय है, जो किसी अमेरिकी के पत्र के उत्तर में लिखा गया था। पत्र का एक अंश है—

'चर्च इंसान के मन और अंतरात्मा को दबाव डालकर बाध्य रखने वाली संस्था है। इन चर्च के महान् उपदेशकों की शैतानियत, महत्त्वाकांक्षा और स्वार्थ से आपको परिचित होना चाहिए। कभी ईसाई धर्म के विरोधियों को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कितनी यातनाएं दी जाती थीं। यहूदियों ने नर-संहार के बारे में अल्बीगेन्सी और तेबीरीतों का कत्लेआम और ईसा मसीह के चर्च की खूंरेज नीतियों के इतिहास का ज्ञान आपको अवश्य होना चाहिए।

'वस्तुतः ईसाई चर्च ने धर्मोपदेशों के सीधे-सादे साम्यवाद के खिलाफ लड़ाई की थी—यही चर्च के पूरे इतिहास का सारांश है। उसकी प्रार्थना भयभीत दुकानदारों की प्रार्थना है, जिसमें गुनाहों के लिए माफी मांगी जाती है, लेकिन फिर भी वे गुनाह करने से बाज नहीं आते।'

शायद रूस गोर्की की इस आवाज के परिप्रेक्ष्य में अपने चर्चों को कुव्यवस्था से बचाते हुए आगे बढ़ेगा।

धर्म मानवता की पूजा है और मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे-गिरिजाघर सेवा के स्थल हैं। धर्म तोड़ता नहीं, जोड़ता है। धर्म संकीर्णता नहीं ओढ़ता। धर्म निहित स्वार्थ का पर्याय नहीं। मानव-सेवा ही धर्म है। इन्हीं भावनाओं में बहता आस्था के स्वरों को सुनता-गुनता मैं अपने यात्रा-पथ पर आरूढ़ था।

(साप्ताहिक हिन्दुस्तान से साभार)

सिगरेट पीने वालों से दूर बैठें

सिगरेट से होने वाला कैंसर सिर्फ उन्हें ही नहीं होता जो सिगरेट पीते हैं। बल्कि यह उन्हें भी हो सकता है जो खुद सिगरेट नहीं पीते, लेकिन उनके मां-बाप पीते हों। है न यह अचरज की बात? लेकिन न्यूयार्क में ३८ साल की एलिस ट्रिलिन के साथ ऐसा ही हुआ है। जी हां, उनके मां-बाप धूम्रपान करते थे। उनकी सिगरेटों के धुएं सांसों के जरिए एलिस के फेफड़े में जाते रहे और वह इस बीमारी की चपेट में आ गई।

इस अप्रत्यक्ष धूम्रपान के खतरों से एलिस तो रही दूर, कुछ समय पहले तक वैज्ञानिक भी वाकिफ नहीं थे। हाल के सर्वे के मुताबिक अमेरिका में हर साल तीन से पांच हजार ऐसे लोगों की कैंसर से मौत होती है, जो खुद तो सिगरेट वगैरह नहीं पीते लेकिन धूम्रपान करने वालों के साथ उठते-बैठते रहते हैं। इससे वे फेफड़ों का कैंसर मोल ले लेते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जून मास के समाचार एक दृष्टि में

१ जून : पंजाब में तीन अखबार हाकरों की हत्या।

२ जून : फ्रांस में दिवंगत संचारमन्त्री वीर बहादुर सिंह की अन्त्येष्टि।

हरयाणा के परिवहन राज्यमन्त्री धर्मवीर सिंह का चुनाव रद्द : वे चौधरी बंसीलाल को पराजित कर चुने गये थे।

३ जून : चीन में सैनिकों ने २८ छात्रों को गोलियों से भून डाला ; २०० घायल।

असम के भूतपूर्व राज्यपाल विष्णु सहाय का निधन।

४ जून : चीन में सेना की गोलियों ने तीन हजार को भूना। ईरानी नेता आयतुल्ला खुमैनी का निधन। मध्य श्रीलंका में भीषण बाढ़ से ३०० मरे।

५ जून : चीन में गोलीबारी से चार हजार लोग मरे। चीन को शस्त्रों की बिक्री पर अमेरिका की रोक।

६ जून : चीन के सैनिक गुटों में संघर्ष; प्रधानमन्त्री ली फंग पर गोलियां चलीं, बच गये। फ्रांस ने चीन से सम्बन्ध तोड़े।

७ जून : सीलमपुर (दिल्ली) थाने में बम फटने से दो घायल। रिझकोव पुनः रूस के प्रधानमन्त्री नियुक्त। सूरीनाम में विमान दुर्घटना : १७६ मरे।

८ जून : बेनजीर का आणविक अप्रसार सन्धि का प्रस्ताव भारत को मंजूर नहीं। राजस्थान के तेरह नये मन्त्रियों में अशोक गहलोत शामिल। पंजाब में समाचारपत्र एजेन्ट समेत पांच की हत्या ; पांच व्यक्तियों का अपहरण।

९ जून : पांच भारतीय लेखक अपनी चीन यात्रा बीच में ही छोड़कर स्वदेश लौटे। पंजाब : मुठभेड़ों में १२ आतंकवादी और तीन सुरक्षाकर्मी मारे गये।

१० जून : अमृतसर में २०-वर्षीय अखबार हाकर अश्विनीकुमार की हत्या ; आतंकवादियों द्वारा हिन्द महासागर में "हिन्द समाचार", "पंजाबकेसरी" और "जगबानी" बन्द कराने की धमकियां।

११ जून : भारतीय जनता पार्टी शिवसेना से तालमेल करेगी। पार्टी ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने अधिवेशन में सरकार से आग्रह किया कि वह रामजन्म-भूमि हिन्दुओं को सौंप दे।

१२ जून : नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर बम विस्फोट ; आठ मरे, ७० घायल। पंजाब में दो सुरक्षाकर्मी और चार अन्य मारे गये। झारखंड कार्य-कर्त्ताओं ने रेलपटरी उड़ाई। अशोक गहलोत राजस्थान के गृहमन्त्री बने।

१३ जून : नई दिल्ली रेलवे स्टेशन बम कांड के अभियुक्तों की तलाश : अनेक धर्मस्थानों की तलाशी ; सौ व्यक्ति हिरासत में लिये गये। सुराग देने वाले को ५० हजार रुपये इनाम।

१४ जून : समझौता लागू होने पर ही शांति सेना श्रीलंका से लौटेगी। कर्नाटक में विधान सभा चुनाव शीघ्र होंगे : प्रधानमन्त्री की घोषणा।

१५ जून : डाक्टर कर्णसिंह अमेरिका में राजदूत नियुक्त। सरकार ने साढ़े तीन हजार जूनियर डाक्टरों को बर्खास्त किया। पेइचिंग (चीन) में चार सौ को फांसी।

१६ जून : १४ अगस्त तक राजनैतिक दलों का पंजीकरण अनिवार्य। भारतीय जनता पार्टी १५ अगस्त के बाद जनता दल में शामिल प्रत्याशियों का समर्थन नहीं करेगी : आडवाणी।

१७ जून : ई.एस. वेंकटरमैया उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश नियुक्त। लोकतन्त्र समर्थक आठ चीनी छात्र नेताओं को मृत्युदण्ड। बूटासिंह रामजन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद को राजनैतिक रंग दे रसे हैं : जगदीश प्रसाद माथुर।

१८ जून : सरकारी डाक्टरों की हड़ताल जारी। राष्ट्रीय मोर्चा ३७५ सीटों पर चुनाव लड़ेगा। उच्चतम न्यायालय ने डाक्टरों की मांगों आदि से सम्बन्धित याचिका अस्वीकृत की।

१९ जून : साइचिन से सेनायें हटाने का समझौता नहीं : भारत का अभिन्न अंग। पट्टी (अमृतसर) में एक समुदाय के बस यात्रियों का अप-हरण : दो पुलिस कांस्टेबलों की हत्या। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन बम कांड में भिंडरांवाले टाइगर्स फोर्स के तीन आतंकवादी पकड़े गये।

२० जून : श्रीलंका में पुनः आपातस्थिति लागू : सरकार को व्यापक

(शेष पृष्ठ ११० पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(पृष्ठ ४८ का शेष)

पढ़ाई प्रारम्भ की जाये और इस प्रयोजन से ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के कुछ अंशों का चयन तुरन्त कर लिया जाये और वेदों से कुछ ऐसे सूक्तों व मन्त्रों का संग्रह भी (स्वामी जी के भाष्य के अनुसार किये गये अर्थों के साथ) शीघ्र तैयार करा लिया जाये, ताकि १ नवम्बर से उसे कालेज विभाग के पाठ्क्रम में स्थान दिया जा सके। इसी समय यह निश्चय किया गया कि डी.ए.-वी कालेज के महाविद्यालय विभाग में दो भाषायें अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाया करें—अंग्रेजी और सस्कृत। संस्कृत की जो पाठविधि विविध कक्षाओं के लिए स्वीकृत की गई थी, वह इस प्रकार थी—मिडिल स्कूल—अर्थसहित अष्टाध्यायी तथा मनुस्मृति, रामायण और महाभारत के चुने हुे भाग। हाईस्कूल—वेदांगप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के कतिपय अंश। एफ०ए०—निरुक्त के प्रथम चार अध्याय, पिंगल सूत्र और न्याय शास्त्र। बी०ए०—वैशेषिक, योग और सांख्य दर्शन, प्रथम छः उपनिषदें और निरुक्त के शेष अध्याय।

एम०ए०—पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांशा, महाभाष्य, दस उपनिषदों में से शेष चार उपनिषदें, ऋग्वेद और यजुर्वेद के कुछ सूक्त। एम.ए. के पश्चात् अध्ययन के लिए ब्राह्मणग्रन्थ और वेद।

पण्डित गुरुदत्त यह समझ गये थे कि डी.ए.-वी. कालेज द्वारा उनके शिक्षाविषयक विचारों का क्रियान्वयन हो सकना कठिन है। अतः उन्होंने एक पृथक् संस्था चलाने का निश्चय किया। लाला जीवनदास, लाला रलाराम, लाला मुंशीराम आदि कितने ही अन्य आर्य सज्जन इस विषय में पण्डित गुरुदत्त के समर्थक थे। इनके द्वारा जिस नई संस्था का सूत्रपात करने की योजना बनाई गई, उसकी सूचना 'आर्यपत्रिका' के ३ सितम्बर १८८९ के अंक में इस प्रकार दी गई थी—आर्य ग्रन्थों की शिक्षा के लिए एक क्लास का खोलना आवश्यक है।

डी.ए.-वी. शताब्दी वर्ष पर यह निर्णय लिया गया था कि १०० नये डी.ए -वी. स्कूल खोले जाएं। यों भी इस समय केवल देश में ही नहीं विदेशों में भी डी.ए.-वी. संस्था अपने पैर पसार चुकी है। किन्तु लेखक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह अनुभव करता है कि वह डी.ए-वी. का केवल ढांचा है, डी.ए.-वी. के प्राण और डी.ए.-वी. की आत्मा का उसमें विलोप हो चुका है। यदि हम डी ए.-वी. संस्था के इतिहास व उद्देश्यों का गम्भीरता से अध्ययन करके उसके प्राण तत्त्व की खोज करें तो हम देखेंगे कि हम अपने उद्देश्यों को भुला बैठे हैं और विलुप्त प्राण को पुनःप्रतिष्ठित करने का भी कोई प्रयत्न नहीं कर सके वे डी.ए.-वी. संस्थायें, जो स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व ब्रिटिश सरकार से लोहा लेती रही हैं और अंग्रेजी और अंग्रेजियत के सम्मुख संस्कृत और वैदिक संस्कृति का ध्वज ऊंचा रखने में समर्थ रही थीं, अब स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त सरकारी नीतियों के सम्मुख अपने को असहाय अनुभव करती रही हैं हमारे पूर्वजों ने यह संस्था आधुनिक शिक्षा व ज्ञान-विज्ञान के साथ वैदिक और भारतीय संस्कृति को बनाये रखने के लिए स्थापित की थीं। आधुनिक ज्ञानविज्ञान का अर्थ अंग्रेजी और अंग्रेजियत नहीं हो सकता। हम संस्कृत और संस्कृति के उच्च ज्ञान के साथ भी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से अपनी संस्थाओं को मण्डित कर सकते हैं।

हम अपनी शिक्षा संस्थाओं में सरकारी नीतियों के अनुसार भी हिन्दी व संस्कृत की शिक्षा को अनिवार्यता को नहीं बना पा रहे। अब नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत तो रही-सही संस्कृत को भी तिलांजलि देनी होगी। क्योंकि नई शिक्षा नीति में संस्कृत समाप्त की जा रही है। केवल भारत सरकार से नई शिक्षा नीति में संस्कृत बनाये रखने का प्रस्ताव करने से कुछ नहीं होगा। यदि डी.ए.-वी संस्थायें सरकार की नई शिक्षा-नीति के इस प्रावधान के विरुद्ध विद्रोह कर दें और संस्कृत को बनाये रखने के लिए संघर्ष का बिगुल बजा दें तो सभी भारतीय अथवा राष्ट्रीय संस्थाएं इस सम्बन्ध में उसका साथ देंगी और आर्यसमाज एक बार पुनः देश का सांस्कृतिक नेतृत्व करये में सफल रहेगा।

सांस्कृतिक आन्दोलन चलाने के लिए हमें अपने प्रत्येक विद्यालव, महाविद्यालय के साथ वैदिक व भारतीय संस्कृति से सम्बद्ध पुस्तकालय की एक वृहद् योजना प्रारम्भ करनी होगी। डी.ए.-वी. संस्थाओं से जुड़े

(शेष पृष्ठ १०९ पर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यसन कैसे छोड़ें

—नारायण लाल परमार

एक थे ज्ञानी गुरुजी। नदी के किनारे उनका आश्रम था, जहां वे अपने शिष्यों को बहुत मनोयोग के साथ पढ़ाते। शिष्य अनेक थे, किंतु अशोक नामक शिष्य उन्हें बहुत प्रिय था। अक्सर वे कहा करते थे कि आगे चल कर अशोक ही उनका नाम उजागर करेगा।

अशोक था भी संस्कारवारवान् और विनयी। गुरुजी का बहुत आदर करता था। ज्ञान का गर्व उसे कभी छू तक नहीं गया। यों अशोक के बहाने गुरुजी भी कभी-कभी ज्ञानवान् होने की चर्चा कर बैठते थे। सच तो यह है कि अशोक जैसा शिष्य पाकर वे फूले न समाते थे।

एक दिन की बात है। एक किसान उनके पास आकर बोला—मैं एक बुरी आदत का शिकाम हो गया हूं। कृपया उससे मुक्ति का कोई उपाय बताइए।

गुरुजी के पूछने पर किसान ने बताया कि उसे तम्बाकू खाने का व्यसन है और अब उससे छुटकारा पाना चाहता है। गुरुजी ने हंस कर पास बैठे अशोक की तरफ इशारा किया। अशोक उनकी मंशा समझ गया। वह तत्काल उठकर भागा और सामने नीम के पेड़ से लिपट गया। और चिल्लाया—दौड़ो, दौड़ो, कोई मुझे इस पेड़ की गिरफ्त से छुड़ाओ। गुरुजी ने किसान को वहीं भेज दिया। अशोक ने पुनः अपनी बात दोहराई। सुनकर किसान हंस दिया। बोला—इसमें छुड़ाने या बचाने की बात कहां हैं? पेड़ को तो आपने ही पकड़ रखा है। पेड़ ने आपको थोड़े ही पकड़ा है।

अशोक ने पेड़ को छोड़ दिया और तत्काल उस किसान से कहा—बस, यही बात तो तुम्हारे साथ है। व्यसन को तो तुम्हीं ने पकड़ रखा हैं; व्यसन ने तुमको थोड़े ही बांध रखा है। छोड़ दो उसे। अभी मुक्त हो जाओगे। किसान को आत्मज्ञान हुआ। तम्बाकू के व्यसन से उसे मुक्ति मिल गई। ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छे बच्चे

—प्रमोद लायट्रू

अच्छे बच्चे अधिक न सोते,
अच्छे बच्चे समय न खोते।

अच्छे बच्चे मेहनत करते,
अच्छे बच्चे कभी न डरते।

अच्छे बच्चे माने कहना,
सीखे प्रेम-भाव से रहना।

खूब पढ़ाई करते डटकर,
दिखलाते हैं अव्वल आकर।

खेल-कूद में आगे आते,
खुद को सेहतमन्द बनाते।

पापा और मम्मी के प्यारे,
ऐसे बच्चे आंख के तारे।

नाज देश को इन पर होगा,
नहीं हुआ तो किन पर होगा।

अच्छे बच्चे अच्छा काम,
दुनिया में होगा तब ना

(पृष्ठ १०७ का शेष)

अध्यापकों और कर्मचारियों के लिए प्रतिवर्ष नियमित रूप से वैदिक शिविर अनिवार्य करने होंगे। कितने दुःख और आश्चर्य की बात है कि जिन डी.ए.-वी. संस्थाओं के कर्णधार अष्टाध्यायी जैसे ग्रन्थों को डी.ए.-वी. स्कूलों में पाठ्यक्रम के रूप में निर्धारित करना चाहते थे, उन्हीं स्कूलों के शिक्षक अष्टाध्यायी व ब्राह्मण ग्रन्थों के नाम से भी परिचित नहीं हैं। उन्हें महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों की जानकारी नहीं है। उन्हें आर्यसमाज के नियम भी नहीं मालूम।

पर ये सब निराशा के कारण नहीं हैं। डी.ए.-वी. का शरीर आज भी पुष्ट, सबल और सुन्दर है। उसमें संस्कृत और संस्कृति के प्राण फूंकने की आवश्यकता है। आज सारा देश सांस्कृतिक रिक्तता अनुभव कर रहा है। डी.ए.-वी. उन सबका नेता बन सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ट १०५ का शेष

अधिकार। आतंकवादी, उसकी पत्नी और पुत्र की अपने ही साथियों द्वारा हत्या : दो और उग्रवादी मारे गये। चीन : विद्रोहियों को भागने से रोकने के लिए वीजा प्रक्रिया कड़ी।

२१ जून : फ्रांस, ब्रिटेन और स्पेन ने चीन में आन्दोलनकारियों को मृत्युदण्ड दिये जाने की निन्दा की। बब्बर खालसा के तीन आतंकवादी पकड़े गये।

२२ जून : चीन में अब तक २७ व्यक्तियों को मृत्युदण्ड मिला। अटल-बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी सम्भवतः दिल्ली से चुनाव लड़ेंगे।

२३ जून : चीन को विश्व जनमत की परवाह नहीं : दमन की नीति जारी रखेगा। चुनाव में धाँधलियां रोकने के लिए ठोस कदम उठाये जाये : चुनाव कमिश्नर पेरी शास्त्री। नौवीं बरसी पर संजय गांधी को याद किया गया।

२४ जून : लोक सभा चुनाव ३१ अक्तूबर को होंगे : रामकृष्ण हेगड़े की भविष्यवाणी। राजीव १६ जुलाई को पाकिस्तान जायेंगे।

२५ जून : मोगा में आतंकवादियों ने राष्ट्रीय स्वयं संघ की शाखा पर गोलियां और बम चलाकर २६ व्यक्तियों को भून डाला।

२६ जूज : देश भर दूरदर्शन के विरुद्ध प्रदर्शन : पटना और विजयवाड़ा में पुलिस के लाठीचार्ज से ६२ घायल : दिल्ली में दस हजार प्रदर्शनकारियों ने गिरफ्तारियां दीं।

२७ जून : मोगा हत्याकाण्ड के विरुद्ध प्रोटेस्ट करने के लिए दिल्ली में कामकाज बन्द।

जनज्ञान मासिक के नियम

१. 'जनज्ञान' के पाठक पत्रव्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें।(सदस्य संख्या 'जनज्ञान' के रैपर पर लिखे पते पर अंकित रहती है।।)
२. 'जनज्ञान' प्रतिमास तीन या चार तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भेज दिया जाता है।
३. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न रहता है।
४. कृपया आगामी वर्ष के लिए नया शुल्क मनीआर्डर द्वारा तुरन्त भेज दिया करें। मनीआर्डर न मिलने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क की वी. पी. द्वारा भेजा जायेगा। वी. पी. में ७ रु. ५० पैसे का डाक व्यय अतिरिक्त होता है, जिसका लाभ न तो सदस्यों को होता है और न ही संस्थान को।

— प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के कैसेट

● नवीनतम

१. वैदिक भजन सिन्धु — २५ रूपये
गायक - श्री सत्यपाल "सरल"

२. प्रकाश भजन सिन्धु — २५ रूपये
गीतकार - स्व. प्रकाशचन्दजी कविरत्न, गायक - श्री महेशचन्द संगीतरत्न

३-४. विवाह गीत (दो कैसेट) — ५० रूपये
(कन्या-पक्ष एवं वर पक्ष) गीत एवं गायन-माता लज्जारानी गोयल एवं श्रीमती सरोज गोयल। विवाह के अवसर पर प्रत्येक परिवार में बजाने योग्य शानदार गीत एवं संगीत से युक्त नये कॅसेट।

५-६. वैदिक नित्यकर्म विधि (दो कॅसेट) — ५० रूपये
मन्त्रोच्चारण - स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रत्येक गृहस्थ के लिये निर्दिष्ट नित्यकर्मों की विधि व्याख्या सहित।

७. वेद भारती — ३० रूपये
शास्त्रीय रागबद्ध मन्त्र। व्याख्या सहित। सम्पादन - श्री सत्यकाम विद्यालंकार, वेदपाठ एवं संगीत - अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त श्री सत्यशील देशपाण्डे।

● हमारे अन्य अति लोकप्रिय कैसेट — प्रत्येक ३० रूपये

८. पथिक भजनसिन्धु ९. मुसाफिर भजन सिन्धु १०. श्रद्धा
११. आर्य भजनावली १२. वेदगीताञ्जलि १३. भजनसुधा।

● हमारे शेष संग्रह करने योग्य कैसेट — प्रत्येक २५ रूपये

१४. वैदिक सन्ध्याहवन १५. गायत्री महिमा १६. भक्तिभजनावलि
१७. महर्षि दयानन्द सरस्वती १८. आर्यभजनमाला १९. आर्यसंगीतिका
२०. योगासन प्राणायाम स्वयं शिक्षक २१-२२. महात्मा आनन्द स्वामी उपदेशामृत (दो कॅसेट) स्व. महात्माजी की ही अमृतमयी वाणी में दो महत्वपूर्ण प्रवचन।

डाक से मंगाने के लिये

● कृपया पूरा मूल्य आदेश के साथ भेजिये। चार कैसेट तथा उससे ज्यादा का डाक व्यय हम देंगे। तीन कैसेट तक के लिये १० रूपये डाक तथा पैकिंग के भी भेजिये।
● वी. पी. पी. के आदेश पर डाक एवं पैकिंग व्यय आपको देना होगा।

विशेष उपहार : १२ कैसेट मंगाने वालों को। तथा २० कैसेट मंगाने वालों को २ कैसेट उपहार स्वरूप दिये जायेंगे।

सूचना - व्यापारिक विशेष छूट के लिये पूछताछ आमन्त्रित है।

संसार साहित्य मण्डल
१४१. मुलुण्ड कालोनी, बम्बई - 400 082.
फोन : ५६१ ७१ ३७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंडिता राकेशरानी जी पंजाब की घटनाओं पर क्षुब्ध

नई दिल्ली। हिन्दू रक्षा समिति और दयानन्द संस्थान की अध्यक्षा पंडिता राकेशरानी जी ने एक वक्तव्य में पंजाब की घटनाओं पर गहरा क्षोभ और दुःख व्यक्त किया है।

राकेशरानी जी ने १२ जून को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन और २५ जून को मोगा कस्बे में आतंकवादियों द्वारा की गई हत्याओं की विशेष रूप से चर्चा की और कहा कि अब तो पानी सिर से ऊपर चला गया है।

आतंकवादी अखबारों के हाकरों को अपनी गोलियों का निशाना बना रहे हैं। कोई दिन नहीं बीतता, जब पंजाब से हत्या के समाचार न मिलते हों। यह कैसा लोकतंत्र है, जिसमें मुट्ठी भर आतंकवादी जनमत का गला घोंटने का दुस्साहस कर पा रहे हैं। अपने लम्बे वक्तव्य में राकेशरानी जी ने कहा कि सरकार प्रतिदिन घोषणा करती है कि आतंकवादियों का मनोबल टूट चुका है और स्थित्ति काबू में है। क्या स्थिति काबू में होने के यही चिह्न हैं, जो भारत की राजधानी नई दिल्ली और मोगा में प्रकट हुए हैं। राकेशरानी जी ने पूछा है कि आखिर हम कबतक इसी प्रकार असहाय होकर स्थिति को देखते रहेंगे। क्या सरकार सो रही है? ★

नहीं जवाब मातृ प्रेम का

आर्मेनिया गणराज्य के भूकम्प के कारण ध्वस्त कमरे के मलवे से आठ दिन बाद एक मां और उसकी तीन साल की बच्ची को जीवित निकाला गया।

मां ने बताया कि जब भी उसकी बच्ची को भूख या प्यास लगती, वह अपनी अंगुलियों को दांतों से चबा कर खून निकालती और अपनी बच्ची के मुंह में डाल देती थी। आठ दिन तक अपनी मां की अंगुलियों से खून-चूस कर यह नन्हीं बच्ची जिन्दा रही।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न्दो धर्म रक्षक प्रचारक साहित्य बांटिए

१. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० पैसे
२. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?—वेदभिक्षु:	६० पसे
३. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	६० पैसे
४. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षु:	६० पैसे
५. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	६ रु०
६. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर	६० पैसे
७. पोस्टर दो प्रकार के	१.२० पसे
८. इस्लाम में क्या है ?—राकेश रानी	६० पैसे
९. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी	६० पैसे
१०. हिन्दू जागो ! देश बचाओ !	६० पैसे
११. इस्लाम—एक परिचय	६० पैसे
१२. A Challenge to the Christian Faith	६० पैसे
१३. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षु:	६० पैसे
१४. पादरियों को चुनौती	६० पसे
१५. बाईबिल को चुनौती	६० पैसे
१६. क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	६० पैसे
१७. ···और पादरी भाग गया	६० पैसे
१८. Christianity Unmasked	१ रु०
...larion Call	६० पसे
...स्लाम क्यों छोड़ा ?	६० पैसे
...ारत का एक और विभाजन होगा ?	६० पैसे
...राष्ट्र के नाम मां का संदेश	६० पैसे
२३. हिन्दू जागेगा देश का संकट भागेगा ?	६० पैसे

१००० पुस्तकें मंगवाने पर ५० प्रतिशत और
५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन
प्रत्येक आदेश के साथ १/४ धन अगाऊ भेजें।

दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-५

द्रक, प्रकाशक व सम्पादक पं० राकेशरानी द्वारा 'जनज्ञान' मुद्रणालय
दिल्ली-६ से मुद्रित एवं प्रकाशित।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
वेदमंदिर वेदभिक्षु: सेवाश्रम
P. O. मुखमेलपुर दिल्ली-९

श्रावण
संवत् २०४६
जुलाई १९८९

Delhi Postal
D-C-201
N. R. 10719/63

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

मूल्य ५०० रु०
१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य
२. सामवेद: आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड) ८० ,,
३. सामवेद पद्यानुवाद (मृदुल कीर्ति) ५१ ,,
४. वेद ज्योति (चार सौ वेदमन्त्र व्याख्या सहित) २० ,,
५. वेदांजलि : (वर्ष के ३६५ दिनों के लिए ३६५ वेद मन्त्रों की व्याख्या) ४० ,,
६. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या) ३० ,,
७. अथर्ववेद परिचय ६ ,,
८. संस्कार विधि (सजिल्द) २० ,,
९. सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र) ३० ,,
१०. यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण) (डा० रामनाथ वेदालंकार) ३० ,,
११. सत्यार्थ-प्रकाश (१०" × १५") स्थूलाक्षर (सादे पेपर पर) १५१ ,,
(आर्ट पेपर पर) २५१ ,,
" " १० ,,
१२. ज्योति स्तम्भ १०१ ,,
१३. वदिक सम्पत्ति २ ,,
१४. योगासन ३ ,,
१५. योग और ब्रह्मचर्य ५
१६. Concept of God २५
१७. श्रीमद् दयानन्द प्रकाश ४०
१८. LIGHT OF TRUTH
१९. प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)
२०. वैदिक गीता (गीता के श्लोकों का सरल हिन्दी भाष्य) २० ,,
२१. संक्षिप्त महाभारत ५० ,,
२२. संक्षिप्त रामायण १२ ,,
२३. गायत्री मन्त्र का चार्ट हिन्दी व्याख्या सहित १.५० पैसे
(दोनों ओर पत्ती लगी। कम से कम दस प्रतियां मंगवायें।)

सूचीपत्र मंगायें। आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें

कार्यालय :
२२८६, आर्यसमाज मार्ग
करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर
महात्मा वेदभिक्षु: सेवाश्रम
मुखमेलपुर, दिल्ली-११००३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi